मैथिली

नाम्मलवार

ए. श्रीनिवास राघवन

MT
891.481 015 2
N 152 R
भारतीय
साहित्यक

MT
891.481 0152
N 152R

अस्तर पर छपल मूर्तिकलाक प्रतिरूपमे राजा शुद्धोदनक दरबारक ओ दृश्य देल गेल अछि जाहिमे तीन गोट भविष्यवक्ता भगवान बुद्धक माय रानी मायाक स्वप्नक व्याख्या कय रहल छथि। हिनका लोकनिक नीचाँमे एक गोट देवानजी बैसल छथि जे ओहि व्याख्याकेँ लिपिबद्ध कय रहल छथि। भारतमे लेखनकलाक ई प्रायः सभसँ प्राचीन एवं चित्रलिखित अभिलेख थिक।

नागार्जुनकोण्डा, दोसर शताब्दी
सौजन्य : राष्ट्रीय संग्रहालय, नयी दिल्ली

भारतीय साहित्यक निर्माता

नाम्मलवार

लेखक

ए. श्रीनिवास राघवन

अनुवादक

अशोक कुमार झा

साहित्य अकादेमी

Nammalvar: Maithili translation by Ashok Kumar Jha of A. Srinivasa Raghavan's monograph in English. Sahitya Akademi, New Delhi (1995), Rs. 15.

Library IIAS, Shimla
MT 891.481 015 2 N 152 R
00117140

© साहित्य अकादेमी
प्रथम संस्करण : १९९५

साहित्य अकादेमी

प्रधान कार्यालय
रवीन्द्र भवन, ३५, फ़ीरोज़शाह मार्ग, नयी दिल्ली ११० ००१
विक्रय विभाग : 'स्वाति', मन्दिर मार्ग, नयी दिल्ली ११० ००१

क्षेत्रीय कार्यालय
१७२, मुम्बई मराठी ग्रन्थ संग्रहालय मार्ग, दादर, बम्बई ४०० ०१४
जीवनतारा बिल्डिंग, चौथा तल, २३ ए/४४ एक्स, डायमंड हार्बर रोड, कलकत्ता ७०० ०५३
३०४-३०५, अन्ना सलाई, तेनामपेट, मद्रास ६०० ०१८
ए डी ए रंगमन्दिर, १०९, जे. सी. मार्ग, बैंगलोर ५६० ००२

MT
891.481 015 2
N152R

मूल्य : पन्द्रह टाका

117140
9.12.04
SHIMLA

ISBN 81-7201-869-9

लेज़र-टाइपसेटिंग : अक्षरश्री, दिल्ली ११० ०३२
मुद्रक : कलर प्रिंट, दिल्ली 110 032

विषय-सूची

प्राक्कथन	७
आलवार	९
नाम्मलवारक जीवन	१२
नाम्मलवारक कृति : तिरुविरुत्तम	१४
तिरुवसिरियम	२५
पेरिया तिरुवनतति	३०
तिरुवोइमोज्झी	३६
तत्वान्वेषणक पथ पर	५१
नाम्मलवारक दर्शन	६३
नाम्मलवारक काव्य	७९

प्राक्कथन

नाम्मलवारक एक गोट सन्तक रूमे समादृत छथि आ'हुनक कृति सभ कें धर्मग्रन्थक मर्यादा देल गेल अछि । प्रायः सात सए वर्ष पूर्वहि हुनका बुझबाक प्रयास कएल जाए लागल जकर फल भेल जे बहुत रास भाष्य लिखल गेल । एहिमे किछु कें त' सम्प्रति एकदम सँ ओहने मान्यता प्राप्त अछि जेना नाम्मलवारक कथन कें । महान व्याख्याकार लोकनि जे कहि गेल छथि तकरा समग्रता मे, एहि सीमित स्थितिमे समेटब कठिन अछि, 'आ'एकर प्रयासो नहि कएल गेल अछि । एकर अतिरिक्त, अतमिलभाषी पाठकक लेल, जनिका लेल ई पुस्तक अभिप्रेत अछि, ई विशेष मनोकूल नहि होइत । अतः बहुत रास विवरण कें, जे स्पष्टतः धर्मतत्व सँ सम्बद्ध छल, छोड़ि देल गेल अछि आ' ओतबहि के राखल गेल अछि जकरा संक्षिप्त ओ सामान्य सर्वेक्षण लेल आवश्यक बूझल गेल । विषयक उपस्थापनमे, किछु अंशमे पुनरावृति अपरिहार्य छल, स्पष्टताक लेल एकर अपेक्षा छल । तथापि एकर अवसर बड़ कम भेटल ।

अनुवादक विषय मे इएह कहब जे अभिधार्थ एवं स्वाभाविकताक बीच मध्यम मार्ग अनुसरण करबाक सर्वथा चेष्टा कैल गेल अछि । अवतरण करबाक सभक/कखनहु क'कोनो पदक मात्र अंशक / जे चयन आ रूपान्तर कैल गेल अछि से केवल ओकर अर्थ बोधक मूल्य कें ध्यान मे राखि ।

हम अपन मित्र श्री ए. एन. मकर भूषणम तथा श्री के. पक्षिराजन, दुनू गोटेक, जे तिरुवेलि मे अधिवक्ता छथि, आभारी छिऐन्ह । ई लोकनि एहि पुस्तक कें लिखैत काल एकर पाण्डुलिपि कें पढ़ि अमूल्य परामर्श देलन्हि । दुनू गोटे तमिलक अधिकारी विद्वान छथि आ नाम्मलवारक गम्भीर एवं निष्ठावान अध्येता । हिनका सभ सँ बड़ सहायता भेटल । हमर मित्र श्री ए. के. गोपाल पिल्लइ, अधिवक्ता, तिरुनेवेलि, पहिल अ–तमिल पाठक छलाह, जे उत्साहपूर्वक सहयोग कैलन्हि आ' हुनक टिप्पणी एवं प्रतिक्रिया एहि पुस्तकक स्वर-निर्धारण मे उपकारक भेल ।

तूतीकोरिन
१.१०.१९७४

– ए. श्रीनिवास राघवन

आलवार

पांचम एवं नवम शताब्दीक मध्य[1] तमिलनाडुमे जे महान् हिन्दू पुनर्जागरण भेल ताहि मे एक गोट प्रबल उपकरणक रूपमे तमिलक अभ्युदय भेल । ई प्राचीन धर्म-धारणा कें जन-साधारण धरि पहुँचौलक ओ' संगहि भक्तिक अभिव्यक्तिमे भास्वर माध्यमक काज कैलक । भक्ति, एहि पुनः प्रवर्त्तनक प्रमुख विशेषता छल । बौद्ध धर्म एवं जैन धर्म, जे दक्षिणमे पहिनहि पसरि चुकल छल, अपन धर्म-प्रचारक लेल तथा काव्यक माध्यम रूपमे – दू गोट तमिल महाकाव्य मणिमेखले ओ शिल्पदिकरम मे – तमिलक प्रयोक द्वारा मार्ग दर्शन करा चुकल छल । हिन्दू धर्म एकर अनुसरण कैलक मुदा एहि लेल नहि जे बौद्ध धर्म एवं जैन धर्म पहिनहि क' चुकल छल अपितु ओहि धर्मोत्साहक परिणाम-स्वरूप जे कतिपय सन्त-सुलभ-आत्मा कें अनुप्राणित कैलक आ' हुनक वाणी मातृभाषामे सहज अभिव्यक्ति पौलक । हिन्दू धर्मक जे पुर्नजागरण भेल से दू गोट मुख्य दिशा मे आ ई दुनू आन्दोलन कालक्रमे दू गोट पृथक सम्प्रदायक रूप मे जानल गेल । एहि मे दुनू अपन-अपन स्वतंत्र अस्तित्वक दावा कैलक जे बहुत बाद मे चलिक' धर्मोन्मादक एवं कटु विवादक कारण बेल ! अकृत्रिम आध्यात्मिक उत्थानक युगक पश्चात सामान्यतः एना भेल करैत अछि । हिन्दू धर्मक प्रसारक ई कालावधि नयनमार एवं आलवार लोकनिक छन्हि ।[2] नयनमार शैव मतक प्रतिनिधित्व करैत छथि आ' आलवार वैष्णवक काव्य-स्वर कें मुखरित करैत छथि । आलवारक संख्या बारह अछि । एहि मे एगारह गोटे त' भगवानक आ' एक गोटा, जनिक नाम मधुर कवि छल, अपन अध्यात्म गुण नाम्मलवारक गुणगान कैलन्हि । ओ लोकनि जाहि कालक्रमानुगत प्रकट भेलाह, जे रामानुजक वैष्णव सम्प्रदाय द्वारा अनुमोदित अछि, से औखन विवाद एवं अनुसन्धानक विषय बनल अछि ।परम्परा सँ हुनका लोकनिकें ईसा पूर्व ४२०० एवं २७००क बीच बुझल जाहत छन्हि । मुदा

---

१. किछु विद्वान एहि जागरणक समय छठम शताब्दी सँ दसम शताब्दीक प्रारंभिक कालक अवधिमे निर्धारित करैत छथि । अहि अवधि मे बौद्ध धर्म एवं जैन धर्मक शनैः शनैः अवसान होइत गेल तथपि दुनू अंतिम क्षण धरि अपन अपन अस्तित्वक युद्ध मे संलग्न रहल

२. 'आलवार' शब्द होइत अछि 'ओ जे तल्लीन छथि' अर्थात् ईश्वरक प्रति प्रेम मे । किछु अभिलेख मे एकर व्याख्या 'ओ जे शासन करैत छथि कैल गेल अछि । ई एहेन लोक कें निर्देशित करैत अछि जनिक जन्म राजसी वा कुलीन परिवार मे भेल

ऐतिहासिक, भाषा-विषयक आ' साहित्यक अनुसन्धान हुनका लोकनिक समय पांचम एवं छठम शताब्दी सँ ल'क' नवम शताब्दी धरि निर्धारित करैत अछि ।

हुनका लोकनिक जीवनक विवरण तथा जन्म ओ मृत्युक तिथि कालक कुहेश मे लुप्त भ' गेल अछि । ओ सब कोन मास मे आ' कोन नक्षत्र मे जन्म ग्रहण कैलन्हि से किछु वृतान्त मे चर्चित अछि । वैष्णव परम्परा, जन्मक्रम सँ नाम्मलवार केँ आलवार लोकनि मे पांचम स्थान दैत अछि ।[३] एहि परम्परा मे अन्याय आलवार केँ अंग बुझल गेल अछि आ' नाम्मलवार केँ शरीर तथा हुनका पूजनीय स्थान पर बैसाओल गेल अछि जतय सँ ओ मानव आत्माक त्राणक लेल परमात्मा सँ मध्यस्थता करैत छथि । नाम्मलवार (अर्थात् हमर आलवार) एहन नाम अछि जाहि सँ आब ओ सामान्यतः जानल जाइत छथि आ' से, वैष्णव जगत जे हुनका समादर करैत अछि, तकर संकेत थिक ।

संस्कृत ओ तमिलक मिश्रित रूप मणिप्रवल मे, नाम्मलवारक कृति सभ पर वृहद् टीका-टिप्पणी कैल गेल अछि । एहि मे, ओ जे किछु लिखने छथि तकरा श्री रामानुजक धर्मत्व सँ जोड़बाक लेल विस्तृत एवं विद्वत्तापूर्ण प्रयास कैल गेल अछि ।[४] ई समस्त टीका-टिप्पणी पाण्डित्य ओ धर्मपरक विदग्धताक चमत्कार थिक । नाम्मलवार मे जे तत्वतः मानवीय अछि आ' हुनक काव्य मे जे ओ व्यक्त भेल अछि, तकरा प्रति ई टिप्पणी भाव शून्य नहि अछि । टिप्पणीकार लोकनि, यद्यपि हुनक सतर्क दृष्टि धर्मत्व पर रहलन्हि, बेर-बेर काव्यक संकेत एवं योजना केँ एहि तरहेँ व्यक्त करैत छथि । जाहि सँ कोनो सौन्दर्योपासक केँ स्पर्धा भ' सकैत छैक । तथापि हुनका लोकनिक मुख्य उद्देश्य धर्मपरक छनि ।

आ' ओ सब एहि आधार पर आरम्भ करैत छथि जे नाम्मलवार एक गोट सन्त छथि, मनुष्य नहि छथि जे सत्यक दिशा मे संघर्ष कैलन्हि, अपितु जन्महि सँ एक गोट सिद्धात्मा छथि, एकटा अवतारी पुरुष छथि वा ईश्वरक अंशावतार छथि । हुनका लोकनिक विश्वास छन्हि जे नाम्मलवार, भगवानक प्रमुख आतिथेय सेनाइ मुदालियरक अवतार छथि । इहो कहल जाइत अछि जे ओ साक्षात् ईश्वरावतार छथि । यदि एकरा मानि लेल जाए त' नाम्मलवारक कृति सभमे जे स्पृहा ओ क्लेश अंकित अछि, आश्चर्यजनक बुझि पड़ैत अछि । एहि लेल जे यदि ओ आजन्म सिद्धात्मा छलाह आ' एहि तरहेँ अवतारी हैबाक अपन उद्देश्यक प्रति अवगत छलाह त' फेर जिज्ञासाक मंत्रणा जे ओ अकस्मात व्यक्त कैलन्हि तकर कोन प्रयोजन छल ? एकटा जे स्पष्टीकरण देल जाइत अछि से ई जे यद्यपि ओ ईश्वरक सम्पर्क मे छलाह तथापि स्वेच्छा सँ बन्धनग्रस्त जीवात्माक दशा केँ

---

३. सिद्धात्माक परिवार–प्रमुख

४. ई सब टीका श्री रामानुजक समयक पश्चात, बारहम शताब्दीक परवर्त्ती भाग मे आ' तेरहम शताब्दी मे नाम्मलवारक तीन शताब्दीक बाद, लिखल गेल । एकटा श्री रामानुजक समकाल मे रचित भेल

अंगीकार कैलन्हि आ' एहि सँ मुक्तिक लेल विभिन्न मार्गक निरूपण कैलन्हि जकरा संसार देखि सकए तथा अनुसरण क' सकए। दोसर शब्दें, सत्यक लेल एहि दीर्घ यात्राक जे अनुभव नाम्मलवारक कृति सभ मे उपलब्ध अछि तकरा दैवीप्रेरणा सँ मानवीय स्थिति धरि उतरि आएल एक सन्त द्वारा उपहत बुझल जा सकैत अछि। मनुष्य कें सत्य धरि पहुँचबाक लेल जे संघर्ष कर' पड़ैत छैक से सभटा यद्यपि हुनक छल तथापि हुनक नहि छल। अहि तरहें देखला सँ, नाम्मलवारक सबटा कृति नाटकक अंश थिक जाहि मे मूलभूत आत्माक प्रगति के चित्रित कैल गेल अछि।

ई सत्य भ' सकैत अछि। मुदा केओ ओहि उद्रेकक व्याख्या नहि क' पबैत अछि जे नाटक आ' नियोजित वा कल्पित अनुभवक दृष्टि सँ नाम्मलवारक काव्य अछि। हमरा लोकनि नाम्मलवार कें देहिन आ' संगहि जीवधारी बुझि नीक जकाँ हुनक जीवन पर विचार क'सकैत छी। हुनक मनुष्य हैब हुनका ईश्वरक चरम दर्शन मे प्रतिकूल नहि भेलन्हि तथापि किछु कालक लेल मार्ग मे बाधक अवश्य भेलन्हि। हमरा लोकनि यदि एहि विचारधाराकें स्वीकार करी त'नाम्मलवारक कृति कें ओकर समस्त प्रयोग, अवसाद एवं उपलब्धि मे पहिल विशिष्ट एवं लोकोत्तर देखब। इएह बात ओकर निराशा एवं आकांक्षा मे तथा ओहि चरम निर्वाण मे दृष्टिगत हैत, जे व्यक्तिक अहम्क अतिक्रमण क'ओकर निजत्वक अन्वेषण कें शेषमे बदलि दैत अछि। ई शेष एकटा सहयोगशील एवं श्रेष्ठ उपकरण थिक जकर ईश्वरक अतिरिक्त आ'र कथुक कामना नहि छैक। नाम्मलवारक कृति धरि एहि तरहें पहुँचब हुनक सन्त स्वाभाव कें कम करब नहि थिक अपितु मनुष्य सँ सन्तक विकास कें नीक जकाँ अनुभव करब थिक; प्रत्यक्षतः लोकक अनुपलभ्य हाथमे सत्यक स्रोत उपलब्ध करब थिक। एहि मे निहित अछि नाम्मलवारक यथार्थ महानता, हुनक काव्यक असामान्य क्षमता, जे, ओ केवल हुनक सन्त स्वभावक नहि अपितु मनुष्यक मान्यक से हो संहिता थिक। ई सत्य जे नाम्मलवारक अर्न्तवेग पृथ्वी सँ ऊपर उठि अपना कें आकाश मे विलीन क' देलक। मुदा ओ एतहि सँ आरम्भ भेल आ' अपना कें[५] केवल एही पृथ्वी परक भाषा मे व्यक्त कैलक। एकरा अस्वीकार करबाक अर्थ भेल ओहि सभटा कें बिसरि जायब जे प्रतीकार्थ नाटकीय रूप ग्रहण करैत अछि। पौराणिक बिम्बविधान एवं दार्शनिक धाराक अछैतो, नाम्मलवारक काव्यक घन भावात्मक अभिव्यक्ति होइछ। अहि पुस्तक मे तकरहि व्याख्या करबाक प्रयास कैल गेल अछि।

---

५. पृथ्वी स्पर्श पृथ्वी पुत्रकें अनुप्रेरित करैत अछि, भनहि ओ आधिभौतिक ज्ञानक अपेक्षा रखैत हो। इहो कहल जा सकैत अछि–एकर शिखर पर हमारा लोकनि सदिखन पहुँच सकैत छी– जखन हम अपन पैर कें दृढ़ता पूर्वक भौतिक जगत मे राखी। उपनिषद कहैत अछि – 'पृथ्वी प्रमुख आधार थिक' श्रीअरविन्द कहने छथि – 'जखन कखनहु ओ अपन मूर्त्त रूप, धारण करैत छथि, ओ ब्रह्माण्ड मे व्यक्त होइत अछि'

नाम्मलवारक जीवन

अन्यान्य आलवरहि जकाँ नाम्मलवारक जीवनक मुख्य स्रोत अछि 'दिव्यसुरि चरितम' । ई संस्कृत मे अछि आ' एकर रचयिता छथि श्री रामानुजक समकालीन गरुड़वाहन पण्डितार । दोसर आधार ग्रन्थ अछि श्री गुरू परम्परा प्रभावम् / छह हजार । ई कृति संस्कृतनिष्ठ तमिल गद्य मे अछि आ' एकर लेखक छथि पिन पज्झारम पेरुमल जिअर । किछु आनो रचना' अछि जाहि मे नाम्मलवारक जीवनक सूचना देल गेल अछि आ' एहि सब मे यद्यपि थोड़ बहुत अन्तर अछियो त' मुख्य विषय मे समानता भेटैत अछि । नाम्मलवारक जीवन-कथा, सम्प्रति जाहि रूपेँ रामानुजम वैष्णव – परम्परा मे प्रचलित अछि तकरा एहि प्रकारेँ समेटल जा सकैत अछि :

मारण, जे पाछां चलिक' नाम्मलवार एवं सद्गोप, परांकुश आदि अनेक नाम सँ जानल गेलाह, सेनाइ मुदालियर / ईश्वरक मुख्य आतिथेयक अवतारक रूपेँ जन्म ग्रहण कैलन्हि । हिनक पिता करियार तिरुनेवेलि जिलाक तामपर्णी नदीक कछेर परक वासी छलाह । अपन जीवनक सोलह वर्ष धरि मारण तिरुक्कुरुहुर मे भगवान आदिनायक मन्दिरक निकट एकटा तेतरिक गाछ तर आँखि मुनने बिना अन्न-पानिक बितौलन्हि । अहि तेतरिक गाछक प्रति धारणा छल जे ई नारायणक शय्या स्वरूप आदि शेषक अवतार थिक । नाम्मलवार तखने आंखि खोललन्हि आ' पहिल बेर बजलाह जखन मधुर कवि, जे पश्चात् हिनक शिष्यत्व ग्रहण कैलथिन्ह, हिनका सँ एकटा प्रश्न कयल । प्रश्न छल– "ओ जे नेता अछि आ' जड़ रूपें जन्म लेलक अछि 'कत' खैत आ' कत' सूतत !" नाम्मलवार उत्तर देलथिन्ह जे' ओ जड़ता केँ खैत आ' ओही पर विश्राम करैत ।'

एकर बादो नाम्मलवार तेतरिक गाछक छाहरि सँ फराक नहि गेलाह । ओ ओतहि अपन भजन गबैत रहलाह । कहल जाइत अछि जे हुनका दर्शन देवाक लेल एक सए आठो दिव्य देशक सब देवता तिरुक्कुरहुर मे उपस्थित भेलथिन्ह । जखन ओ चारि गोट कृति केँ, जकर हुनका श्रेय देल जाइत छन्हि, समाप्त कैलन्हि त' ईश्वरक आह्वान सुनलन्हि आ' हुनक शरणापन्न भेलाह, जिनका लेल जीवन पर्यन्त व्यग्र रहलाह ।

एहि संक्षिप्त विवरण सँ ई बुझबा मे आओत जे नाम्मलवार जनसाधारणक बीच

---

१. अन्याय कृति अछि : 'उपदेशरत्नमलै'–श्री मनवलभमुनि; 'देसिका प्रबन्धम्'– श्री वेदान्त देसिका; 'गुरू परम्परा प्रभावम्' / तीन सहस्त्र– श्री ब्रह्मतंत्र स्वतंत्र जिअर प्रपन्नमरूतम– श्री अनन्ताचार्य; पेरिया तिरुमुडि अदेभु– श्री कन्दल अप्पण; कोइल ओलुगु जाहि मे श्री रंगमक मन्दिरक इतिहास लिखल अछि, इत्यादि

जाहि तरहेँ जीवन-यापन कैलन्हि, लोकक मनोभाव केँ जाहि तरहेँ प्रभावित कैलन्हि तकर किंचित् संकेत हमरा सबकेँ उपलब्ध नहि अछि। एकर पहिल विवरण संस्कृत मे भेटैत अछि जे हुनक अवस्थितिक किछु शताब्दीक बाद लिखल गेल जेना ओहि मे दावा कैल गेल अछि, प्रायः हुनका सँ चारि हजार वर्षक पश्चाते। अहि मे कोनो सन्देह नहि जे धर्मपरक रहितहुँ मनस्तत्वक आधर पर ई विश्वसनीय अछि, कारण जे, जाहि समय मे ई लिखल गेल नाम्मलवार दक्षिणक वैष्णव समुदाय मे सन्तक रूप मे समादृत भ' चुकल छलाह, जनिक वाणी लोक केँ अलौकिक अवस्था मे पहुँचा दैत छल।

वर्त्तमान काल मे जीवन सम्बन्धी एवं ऐतिहासिक अनुसन्धान द्वारा इएह सिद्ध करबाक प्रयास रहल अछि जे नाम्मलवारक जीवनक सन्दर्भ मे जे किछु कहल गेल अछि से सभटा व्यर्थ थिक। तथ्यपूर्ण विवरण काल कवलित भ' चुकल अछि आ' आब जे किछु उपस्थित कैल जाइत अछि से' दिव्य सुरि चरितम' तथ 'गुरू परम्परा प्रभावम्' मे देल गेल कल्पित विवरण थिक। ई, विवरण, बौज़्वेलक प्रलेखक जिज्ञासु केँ भनहि सन्तुष्ट नहि करन्हु, मुदा आन्तरिक जीवनक प्रति सत्य अछि। असल बात त'ई जे, ई सब विविध रूप मे आ' प्रभावशाली ढंग सँ नाम्मलवारक शब्दावली मे अंकित अछि। दीर्घकाल धरि हुनक मौनव्रत आ' सांसारिक समस्त वस्तु सँ अनासक्ति, जे नाम्मलवारक परंपरागत वर्णक अत्यन्त सार्थक प्रसंग अछि, अखिल विश्वक रहस्यवादी सभक अनुभवक अनुरूप अछि। हमरा लोकनि नीक जकाँ विश्वास क' सकैत छी जे हुनक जीवनक आदिकाल ईश्वरकेँ अपना अन्तर्गत ताकबा मे बितलन्हि। ई हुनका एकहिटा मनीषा छलन्हि एहि लेल देवीक अनुग्रह हुनका जन्महि सँ प्राप्त छलन्हि। हुनक जीवनक चमत्कार एहि मे निहित अछि। जखन ओ अपन एहि आत्मज्ञान मे सफलता प्राप्त कैलन्हि त' चरम उद्देश्य केँ प्राप्त क' चुकल छलाह। हुनक समस्त कृति एकरहि आ' संगहि परमात्मा धरि हुनक पहुँचबाक विभिन्न चरणक इतिवृत्त थिक। परमात्मा धरि हुनक पहुँचबाक यात्राक, हुनकहि शब्द मे, अनेक स्थिति अछि जाहि सँ होइत केओ आगाँ बढ़ैत अछि। ओ सब अछि, सभ सँ पहिने संसार सँ उच्चाटन सारतत्वक अन्वेषणक शुभारम्भ, मार्ग मे जे अन्धकार पसरि जाइत अछि से' एकर अकस्मात् तिरोधान आ' तहिना पुर्नआगमन, भावावेश आ' सन्धानक यंत्रणा तथा उपलब्धिक हर्षोल्लास।

जखन ओ जे असीम दुर्बोध्य सँ बहिर्भूत भेल छल
फेर घूरि क' घर चल अबैत अछि।

कारण जे, नाम्मलवार अपन जीवनक प्रारंभिक सोलह वर्षक बादे बजलाह आ' एहि मौन व्रतक अवधि केँ यदि हमरा लोकनि ई बुझी जे ओ सत्यान्वेषण मे प्रवृत्त छलाह त' अनुमान क' सकैत छी जे हुनक कृतिक बहुलांश एक प्रकारक पुनरीक्षण तथा पश्चात्गमन, एकटा नव अनुभूति थिक जकरा आधार पर वर्ड्सवर्थक पद्यांश केँ शान्ति अनुभूतिक संकलन मे बदलि क' कहल जा सकैत अछि।[२]

---

२. कविता प्रशान्ति मे एकत्रित मनोभाव थिक – वर्ड्सवर्थ

नाम्मलवारक कृति : तिरुविरुत्तम

नामल्लवारक कृति चारि गोट छनि :

१ तिरुविरुत्तम / तिरु विरुत्तम /

२ तिरुवसिरियम / तिरु असिरियम

३ पेरिया तिरुवनतति / पेरिया तिरु अन्तति /

४ तिरुवोइमोज्झी / तिरु वोह मोज्झी /

एहि चारू कृति मे पूर्वपदक रूपेँ 'तिरु'क प्रयोग भेल अछि । एकर अर्थ थिक 'नीक', 'शुभ', 'दिव्य' ।

'विरुत्तम' आ' 'आसिरियम' दू प्रकारक पद्य थिक । अतः पहिल दुनू कृतिक नामकरण ओहि पद्य पर भेल अछि जाहि मे ओ लिखल गेल अछि । 'पेरिया तिरु अन्तति' मे' 'पेरिया'क अर्थ अछि 'वृहत्' आ' 'अन्तति' एक प्रकारक तमिल पद्यक लक्षण थिक जाहि मे अन्तिम शब्द वा / युगपत् उच्चारित / शब्दांश केँ दोसरक पहिल शब्द वा / युगपत् उच्चारित / शब्दांशक रूप मे ग्रहण कैल जाइत अछि । 'तिरुवोइमोज्झी' मे 'वोइमोज्झी' अर्थ भेल ओ जकर पाठ कैल जाइत अछि । अतः 'तिरु वोइमोज्झी' क अर्थ भेल 'दिव्य संदेश' ।

'तिरुविरूत्तम' तिरुविरुत्तम' बन्द मे विभाजित एक सए चारि पंक्तिक कविता थिक । प्रत्येक बन्द 'कत्तलइ कलित्तुराइ' एक खास तरहक काव्य थिक । प्रत्येक पंक्ति मे पाँच चरण होइत अछि आ' चारू पंक्ति आद्यतः तुकान्त रहैत अछि । एक प्रकारक काव्य रूप केँ द्योतित करबाक अतिरिक्त् 'विरुत्तम' क अर्थ होइत अछि एक प्रकारक 'सन्देश' वा 'घटना' । सामान्यतः ई बुझल जाइत अछि जे ई काव्य नाम्मलवार द्वारा, परमात्माक सँ कोनो घटनाक, परमात्माक प्रति अपन प्रेम भ' जैबक घटनाक आत्म निवेदन थिक ।

कविताक पहिल बन्द एकरहि व्यक्त करैत अछिः

'मिथ्या ज्ञान सँ, कुमार्ग सँ,
शारीरिक कलुषता सँ,
बचाबक लेल हमरा सभ केँ,
मुक्ति दिएबाक लेल बेर-बेरक जन्म ग्रहण सँ,
एहि सभ किछु सँ,
आ' हमरा सभ केँ जीवन दानक लेल,

हे, अमरत्वक प्रभुवर !
होइत छी अवतरित एत'
बहुतोक कोखि सँ जन्म ल'
आ' धारण करैत बहुतो रूप ।
ध्यान सँ सुनू,
हे प्रभु !
हमर एहि निष्कपट निवेदन कें ।'[१]

ई पद्य, एक प्रकारक नाटकीय कथाक्रमक रूप धारणं क' लैत अछि जाहि मे किछु चरित्र कें गठित कैल जाइत अछि । ई एक प्रकारक प्रेमलीला थिक; एहि मे ईश्वरीय प्रेम कें लौकिक नर-नारीक प्रेमक रूपें प्रस्तुत कैल जाइत अछि । मानव आत्माक लेल एकरा स्वाभाविक कहब जे ओ एहि प्रतीकात्मकता मे अपना कें ओहि नारी सँ तादात्म्य स्थापित क' लैत अछि जे प्रेम करैत अछि आ' परमात्मा कें प्रेममय, शाश्वत प्रेमी बुझैत अछि । कतेको बन्द मे परमात्माक प्रति नाम्मलवारक स्पृहा, नारीक प्रेम विह्वल-हृदयक माध्यमे व्यक्त भेल अछि :

हे हमर दीन हृदय !
तोँ एसकर गेलह पछोड़ धेने गरूड़क–
जे हुनक वाहन थिकन्हि ।[२]
ओ जे पहिरैत छथि शीतल तुलसी[३]
आ' धारण कैने छथि प्रदीप्त चक्र ।
तोँ घूरि क' अएबह हमरा लग !
वा, ठाढ रहब' ओतहि आश्चर्य सँ तकैत–
लक्ष्मी कें, पृथ्वीक देवी कें,
आ' सुकेशी गोपी सब कें,[४]
जे त्रिगुणात्मक छथि,
छायावत आवृत्त केने छथिन्ह हुनका ![५]

एहि त्रिगुणक निर्देश द्वारा, जे हुनक महिमा सँ अविभाज्य अछि' आलवार परमात्मा सँ अपन सानिन्ध्य प्राप्त करबाक लालसा व्यक्त करैत छथि ।

---

१. तिरुविरुत्तम : १
२. विष्णुक वाहन
३. एकटा वनस्पति जकर पात सुगन्धित रहैत अछि
४. नप्पिनाइ . तमिल परम्पराक अनुसार कृणावतार मे भगवान एकरा सँ प्रेम कैलन्हि
५. तिरुविरुत्तम : ३ लक्ष्मीक दिव्य लालित्य पृथ्वीक रचयिता, पालनकर्त्ता, साक्षीस्वरूप ईश्वरक सनातन सम्बन्धक द्योतक आछि, जखनकि नप्पिनाइ आत्मा संभक आदिरूपा राधाक तमिल प्रारूप, जिनका उठा लैत छथि ओ अपन प्रेममय अवतरण मे

शीतकालक आगमन होइत अछि, वर्षाक कारी मेघ सँ आकाश भरि जाइत अछि। मुदा ई की सरिपहुँ शीतकाल थिक ?

बसात द्वारा पूँजीभूत एवं भसिऔल,
पर्याप्त बुन्दक बौछार करैत,
ई सभ प्रचण्ड कारी साँढ़ त' ने थिक
आकाश मे तुमुल युद्ध करैत ?
अथवा शीतकाल सरिपहु आबि गेल अछि,
हमरा उत्पीड़ित करबाक लेल,
शीतकाल, श्याम हुनक आकर्षण कें
धारण केने,
लगैत शीतल एवं कुसुम सज्जित,
मुदा निर्दयता सँ कुरैदैत हमरा घाव सबके
हुनक सँ दूर रहबाक हमर यंत्रणा कें[६] ?

मनःस्थिति बदलि जाइत अछि आ' प्रेमिका कें आश्चर्य होइत छनि जे वर्षाक मेघ ओकर प्रेमीक श्याम कान्ति कें प्राप्त करबा मे कोन युक्तिएँ सफल भेल :

कह' हे मेघ।
ई योगक विभूति तों कोना कैलह प्राप्त
हमर प्रभुक रूप-रंग सन देख' मे आएबा मे ?
की ई भेल तपस्या सँ,
जे तों केलह हुनक कृपा सँ,
यत्र-तत्र भ्रमणशील व्यथा-पूरित तोहर हृदय,
अपन दुःसह, दानशील वर्षाक बोझ कें उघैत,
एत' सभक जीवन बचाबक लेल ![७]

फेर इएह प्रश्न उठैत अछि जखन प्रेमिका लगक झील मे कुमुदिनीक फूल दिश ताकैत अछि :

ई कोना क' भेल जे ई कुमुदिनी–
हमर प्रभुए जकाँ श्याम वर्णक अछि ?
एहि लेल त' ने जे ई वन एवं स्थल कें त्यागि
जल मे रह' लागलि,
ओत, ठाढ़ि रहलि तपस्या मे,
पैर पर दृढ़ भेलि।[८]

---

६. एहि पदक व्याख्या अहू तरहें कैहल जाइत अछि जे ई कोनो भिन्नक सन्तोषार्थ शब्द-समूह थिक, वस्तुतः जाइ नहि।
७. तिरुविरुत्तम : ३२
८. उपरिवत् : ३८

अनुराग बढ़ल जाइत अछि आ' जाहि दिश ओ ताकैत अछि, ओकर अपन प्रेमीक आँखिक सम्मोहन देखि पड़ैत छैक :

कृष्णवर्ण गिरिक चाकर शिखर पर
दूर-दूर धरि पसरल कमलदह सभ सदृश
जेम्हरे हम घुरैत छी
हुनकर आँखि सौन्दर्यक सृष्टि करैत अछि,
हमर प्रभुक आँखि, श्याम ओ मनोहर,
कल्याणकारी स्वर्ग ओ संसारक प्रभु कें
उमड़ल जल आवृत्त कैने अछि ।[९]

'ओह ! मुदा ओ सभटा त कमलेक थिक'– प्रेयसी बजैत अछि । 'हुनक नेत्र हुनक हाथ, हुनक चरण सभटा कमले थिक, कमले ।'[१०]

तखन अकस्मात एकटा आशंका आबि क' आक्रान्त क'दैत अछि । ओ की एतेक साधनहीन अछि जे शब्दहिटा मे हुनक सौन्दर्यक बखान क' सकए ?

के क' सकैत अछि एकर कल्पना,
हमरा प्रभुक मनोहर श्याम वर्णक ?
की ई अछि पहुँचक सीमा मे
हुनकहु लेल, जनिक चिन्तन टपि जाइत अछि
आकाश कें आ' तकर आगुओ
शाश्वत संसार धरि !'[११]

'नहि, ई सम्भव नहि' । अपन प्रेमीक असीमताक उल्लासक स्पर्श सँ आ' अपन अपर्याप्तताक कारणें उदासीनताक अनुभूति सँ ओ एहि निष्कर्ष पर पहुँचैत अछि :

के कहि सकैत अछि ओहि सभ विषय मे,
हुनक रंग, सौन्दर्य, हुनक नाम ओ रूप ?
ओ सब कहताह, जेना भनहि ओ जनैत होथु,
ओहि व्यक्ति कें जे ज्ञान एवं धर्मक आचरण करैत अछि
मुदा कतबहु दूर धरि ओ जाइत छथि,
जत' कतहु पहुँचथु,
ज्योतिपुञ्ज से जे ओ छथि,
भ' सकैत अछि ओ किछु सिखथि,
मुदा ओ कहियो कोना एकरा पाबि सकैत छथि
हमर प्रभुक महानता कें ?[१२]

एकर तात्पर्य भेल जे ज्ञान ओ सदाचार सँ नहि, केवल प्रेम सँ प्रभु कें प्राप्त कैल

---

९. तिरुविरुत्तम : ३९
१०. उपरिवत् : ४३
११. उपरिवत् : ४३
१२. तिरुविरुत्तम : ४४. ज्ञान जानब थिक एवं धर्म थिक पुण्य

जा सकैत अछि। प्रेमिका निस्सन्देह प्रेम करैत अछि, मुदा प्रेमीक नहि अएला सँ ओकर विरह– वेदना तीव्र भ' जाइत अछि। पश्चिम आकाश अन्हार पसरि जाइत अछि, वक्राकार चन्द्रमाक उदय होइत अछि आ' रातुक बसात झकझोरय लगैत अछि :

अखन राति अछि
ओकर पाँजर
वक्राकार चन्द्रमा ओ दुधमुँहा शिशु मे लटकल अछि।
ओकर पाँजर
पश्चिम क' रहल अछि विलाप,
ओकर सूर्यक जे लोप भ' गेलैक
एत' बहैत अछि शीतल बसात,
तकैत, जिज्ञासा करैत,
हमरा सब सँ चोरयबाक लेल
जे ओ हमरा देलन्हि अछि,
अपन तुलसीक लेल स्पृहा।[१३]

'हूँ, मुदा बसात आब शीतल नहि अछि'– प्रेममयी रमणी कहैत अछि।" ई क्रूर बसात थिक जे दाह दैत अछि।

ई अदृश्य अछि, एकर रूपक हमरा ज्ञान नहि, आ' ने हमरा लोकनि एकर पद-निक्षेपक पता लगा सकैत छी। ई अपयशक कनफुसकी करबा मे लागल रहैत अछि आ' अनवरत हमरा सता रहल अछि।[१४]

रातुक अन्हार सघन भ' जाइत अछि आ' राति नमहर जेना ओ प्रेयसी केँ समाप्त क' देवाक लेल प्रवृत्त हो।[१५] तरूण चन्द्रमाक उदय होइत अछि। ओ की ओकरा बचेबाक लेल आएल अछि, राति केँ आवृत्त केने अकुण्ठित अन्धकार केँ नष्ट कर' आएल अछि![१६] कर' दिऔक, मुदा इहो त दग्ध करैत अछि।

उपवन सँ अबैत अनरिल पक्षीक अनवरत तीव्र विलाप, सैकड़ो संकीर्ण श्री खाड़ी होइत पृथ्वी मे प्रवेश करैत अशान्त समुद्रक गर्जना, ओकरा राति भरि उत्पीड़ित करैत अछि।[१७] 'ई समुद्र हमरा शंखक चूड़ी पहिरब त' ने छोड़ि देब' कहैत अछि'– ओ[१८] व्यथा मे सोचैत अछि, 'एहिं लेल जे समुद्र मंथन सँ अमृत बहरैल तकरा ई पुनः नहि प्राप्त क' सकल![१९] जखन भोर होइत अछि आ' पहाड़ पर सूर्योदय होइत अछि, त' बुझि पड़ैत अछि जे ओकर प्रेमी ओकरा सामने होथि आ' ओ प्रसन्न होइत अछि जेना सबटा विपत्ति आ' कष्टक अन्त भ' गेल होइक।[२०] मुदा से क्षणिक अछि। हुनका सँ दूरस्थक भावना

१३. उपरिवत् : ३५ प्रेम करक जे क्षमता ईश्वर सँ प्राप्त भेल अछि उनटि हुनकहि मे अर्न्तहित भ' सकैत अछि। की ई बसात ओहू सँ हमरा लोकनि केँ च्युत करय चाहैत अछि ? ई एकटा व्याख्या थिक
१४. तिरुविरूत्तम : ४१
१५. तिरुविरुत्तम : ७०
१६. उपरिवत् : ७२
१७. उपरिवत् : ८७
१८. जेना पुराण मे वर्णित अछि देव आ' असुर द्वारा समुद्र मंथन सँ अमृत बहरैल
१९. तिरुविरुत्तम : ५१
२०. उपरिवत् : ८८

जागि जाइत अछि आ' ओ बाजि उठैत अछि : कखन, कखन हुनका सँ मिलन हैत ?'
'आ भरल कंठे कहैत अछि :

हे चक्रधारी प्रभु
जे असुरक संहार कैलन्हि,[२१]
हमरा आश्चर्य होइत अछि
जे हम कोना ई मानव अवस्था कें प्राप्त कैल :
के जनैत अछि जे कतेक दिनक लेल
हम एहि लेल तपस्या कैल ?
एकरा प्राप्त क'
हुनक सेवक बनि
हम सोचल जे हुनका लग पहुँचि सकैत छी,
मुदा से संभव नहि हैत,
आ' प्रतीक्षाक समय कतबो पैघ हो
ओकर अन्त नहि होइत अछि ।[२२]

तथापि ओकर विश्वास अविचल रहैत अछि, आ' प्रभु कें छोड़ि ओकर हृदय आन ककरो दिश नहि जैत ।[२३] ओकर दीन हृदय तथापि दुराग्रही भ' गेल अछि आ' ओकरा निराश क' देलक अछि :

अपना हृदय पर विश्वास क'
ई सोचि जे ई निष्कपट आ' हमर अछि,
हम एकरा हुनका लग पठौलिएन्ह ...
आ' आइ धरि
ओ घूरि क' नहि आएल अछि ।
आब ओ हठधर्मी आ' अनियंत्रित
हमरा त्यागि क' बौआएल फिरैत अछि
नहि जानि कत' ।[२४]

ओ अपन हृदयक पाछाँ राजहंस एवं सारस कें पठबैत अछि :

हे प्रिय राजहंस एवं सारस लोकनि,
अहां कतहु रहैत छी उड़ैत,
विनती करैत छी, बिसरब नहि
पहिने जाउ बैकुण्ठ[२५]
आ' यदि अहाँ कें ओत'

---

२१. दुष्टात्माक जाति/दानव/जे निरन्तर देवता लोकनिक विरुद्ध रहलाह
२२. तिरुविरुत्तम : ९०
२३. उपरिवत् : ९१
२४. उपरिवत् : ४६
२५. ईश्वरक निवास, स्वर्ग

हमर हृदय सँ भेंट हो,
त' हमर नाम कहबैक आ' पुछबैक
जे ओ एखन धरि प्रभु लग नहि गेल अछि,
आ' यदि नहि गेल अछि,
त' पुछबैक जे ई सुस्ती कहाँ धरि उचित ।[२६]

ओकरा पक्षी सँ कोनो उत्तर नहि भेटैत छैक त' ओ मेघ सँ निवेदन करैत अछि, ई सोचि जे मेघ बेशी सहायक हैत :

हे मेघराशि, विद्युत-प्रभा सँ द्युतिमान !
वेंकटमक उत्तुंग सुदृढ़-आधरित शिखर
जे आलोकित अछि मणि आ' सुवर्ण सँ
ताहि दिश क' जाइत,
हमर सन्देश हुनका ल ल' जैब ?
ओ सब नकारि दैत अछि ।
ई मेघ सभ मानि जैत–
यदि हम ओकरा सभ सँ अनुनय करी
आ' कहिऐक जे अपन पैर ओ सभ
हमर नत मस्तक पर राखथु ![२७]

एहि तरहेँ एहि कविताक अनेको बन्द मे नाम्मलवार भगवानक प्रतिएँ अपन मनोभाव केँ व्यक्त करैत छथि । एहि कविताक प्रेमातुर नारी नाम्मलवार स्वयं छथि । अहि प्रेमाभिनय मे किछु आओर चरित्र अछि जकरा एहि कविता मे उपस्थापित कैल गेल अछि । नाम्मलवार ओकरा सभक विशेषरूप सँ नामोल्लेख नहि करैत छथि परन्तु ओ सभ जाहि प्रसंग मे आ' शब्द बजैत छथि ताहि सँ हुनक परिचय बुझबा जोकर भ' जाइत अछि । यदि हमरा लोकनि प्रधान चरित्र, प्रेमिका केँ नायकी वा तलैबी अर्थात् नायिका/कही, जेना सामान्यतः कहल जाइत अछि त' आन-आन चरित्र अछि नायकीक दासी आ सखी ओकर माय आ धात्री, स्वयं प्रेमी आ' ओकर सखा, आ' कट्टुविचि, एकटा एहन महिला जकरा सँ, एहि धारणा पर जे नायिका पर देवीक प्रकोप अछि, ओकरा प्रति सहानुभूति प्रदर्शित करब आ' सान्त्वना देब आ' संगहि ओकर दुर्भाग्य पर टिप्पणी करब । ओकर उक्ति अछि :

हम सोचैत छी जे
घनश्याम प्रभुक आदेश,
आइ बदलि गेल अछि,
नहि त' बसात !
जे प्रकृतितः शीतल रहैत अछि

---

२६. तिरुविरुत्तम : ५
२७. तिरुविरुत्तम : ३१

चारू दिश आगि कोना छिड़िया दैत ।
आ' हमर दुखिया सखीक पैघ-पैघ आँखि सँ,
जकर हृदय हुनक तुलसीक पाछाँ बेहाल छैक,
नोर किऐक झहरैत ![२८]

ओ अपन सखीक स्थिति पर ततेक दुखी भ' जाइत अछि जे प्रेमी केँ उपालम्भ दैत अछि, जेना ओ ओकरा समक्ष रहथि ।

सुनील सागर गरजैत अछि,
निष्ठुरता पूर्वक,
जेना आपात्ति क' रहल हो
ई नहि बुझैत जे ओ अछि नारी
आ' ओकर व्यथा बढैत छैक ।
किछुटा नहि ओकर रक्षा क' सकैत छैक,
प्रभुक कृपा केँ छोड़ि
ई की उचित अछि
मेघवर्ण शेष शय्या शयित प्रभुक लेल
आ'र बेशी बिलम्ब करब ?[२९]

ओ नायकी सँ ओकर प्रेमीक महानता तथा असीम कृपा दृष्टिक बखान करैत अछि जाहि कारणेँ ओ पृथ्वी पर अवतरित भेलाह । ओ नायकी केँ संकेत दैत अछि जे हएह कृपादृष्टि ओकर रक्षा करतः

तपश्चर्या मे निरन्तर सक्रिय साधक
जन्मक कष्ट सँ उबरबाक लेल
हुनका तकैत अछि ।
ओ छथि अज्ञेय,
जे अमर छथि तिनकहु लेल,
ओ थिक हुनक अनन्तता ।
मुदा चिन्ता जुनि करू,
हुनक रहस्यक मार्ग निश्चय महान अछि,
ओ पृथ्वी पर नहि अएलाह,
आ' उलझन नहि सहलन्हि,
ई जे ओ माखन चोरोलन्हि ![३०]

नायकीक धात्री केँ आश्चर्य होइत छैक जे एतेक कम वयसक आ' अप्रौढ़ रहितहुँ ओ एहि प्रकारक मनोविकार केँ किऐक प्रश्रय देत । ओकरा एकरहु चिन्ता छैक जे एहि विचित्र बात लेल लोक की कहतैक :

---

२८. तिरुविरुत्तम : ५
२९. उपरिवत् : ६२
३०. तिरुविरुत्तम : ९८ । माखन चोरीक घटना कृष्णवतार सँ अछि

117140
9.12.04
SHIMLA

ओकर पयोधरो ने विकसित भेलैक अछि
नीक जकाँ,
ओकर सघन आ' चिक्कन अलक छोटे छैक
डाँड़ पर साड़ी नहि रहै छैक स्थिर,
आ' ओकर बाजब,
शिशु जकाँ अस्फुट आ' लड़खड़ा जाइत छैक
ओकर आँखि चंचलता सँ चमकैत छैक,
जेना/पृथ्वी आ' सागरो सँ बेशी मूल्यवान रहैक ।
एहि शिशुकलेल एकरा उचित कहबैक
शब्दावली कें कंठस्थ करब :
"वेंकट प्रभुक गिरि थिक !"[३१]

नायकीक माय कें चिन्ता सता रहल छन्हि जे हुनक कन्या हुनका संग हुनक नगर चल गेलन्हि अछि; नहि जानि बाटक बीहड़ मरुभूमि मे कोन-कोन कष्ट भोग' पड़ल हैतैक जाहि मे क्रूर व्यक्ति घुमैत रहैत छैक आ जकर ढोलक ध्वनि वायुमंडल कें भरि दैत छैक ।[३२]

एकरा विचित्र कहब कारण जे अपन प्रेमीक संग जैब त नायकीक लालसा छलैक आ' से एखन धरि नहि भेल छलैक जे कविताक अवशिष्ट अंश सं व्यक्त होइत अछि । यदि नायकी चलि गेलि अछि त फेर कट्टुविचि कें किऐक पठौल जइतैक, जेना कविता मे वर्णित अछि आ' ओकर विचार किएक लेल जइतैक जे नायकी कोनो दैवी शक्ति सँ त' ने पराभूत अछि ! कट्टुविचि, नायकीय स्थिति देखि रोगक निर्णय करैत अछि । ओकर कहब छैक जे ई अमरत्व प्रभुक प्रति नायकीक प्रेमक परिणाम थिक । ओ प्रभु जे तुलसी धारण कैने छथि तकरहि एकर उपचार कहैत अछि । ओकरा विचारें 'तुलसी वा ओहि तुलसी पातकमाला, ठाढ़ि वा जड़ि अथवा शादूल जाहि पर ओ रोपल अछि, सँ काज चलि जैत[३३]

तहिना विचित्र अछि प्रेमी जकर चित्रण एकटा बन्ध कें छोड़ि अन्त धरि भेल ।[३४] ओ नायकीक समक्ष उपस्थित नहि होइत अछि । ओहि एकटा बन्ध मे कहल गेल अछि जे प्रेमी नायकीक संग मरूभूमि कें पार करैत कहैत अछि जे भूमिक बीहड़ता सँ ओकरा घबड़ियबाक नहि छैक आ' आश्वस्त करैत अछि जे ओकर नगर लगहि मे छैक । एकटा दोसर बन्ध मे प्रेमी अपन सारथी सँ शीघ्रता करबाक लेल कहैत छैक कारण ओकर प्रेमिका ओकर प्रतीक्षा क' रहल छैक आ' ओकरा ले लालायित छैक ।[३५] पुनः ओ नायीकी सखीक समक्ष उपस्थित होइत अछि, व्याज छलैक हाथी कें ताकबक, जाहि हाथीक ओ शिकार

३१. उपरिवत् : ६०
३२. उपरिवत् : ३७
३३. तिरुविरुत्तम : ५३
३४. उपरिवत् : २६ व्याख्या सत्यक क्षणिक झलकक रूपें कैल जा सकैत अछि जे आलवार प्राप्त करैत छलाह
३५. उपरिवत् : ५०. ई रोचक अछि जे ओ प्रेमी जे स्वयं ईश्वरक प्रतीक छथि वेंकटमक चर्च प्रभुक गिरि रूपें करैत छथि । की वक्ता अपनहि ईश्वरक अवतार नहि छथि

क' रहल छल से एही दिश त' ने चल आएल अछि। ओ सखी सँ प्रश्न करैत अछि मुदा तकरा ओ अस्वीकार क दैत छैक।[३६] एकटा दोसर बन्ध मे ओ अपन प्रेयसीक केशराशिक सुवासक उल्लेख करैत अछि आ' भ्रमर सँ जिज्ञासा करैत अछि जे फूलक अपन व्यापक अनुभव मे ओ एहि सँ बेशी मधुर किछु देखने अछि।[३७] ओ अपन मित्र सँ अपन प्रेयसीक समुद्र सन चाकर, आकर्षक कारी आँखिक चर्चा करैत अछि आ दृढ़तापूर्वक कहैत अछि जे केओ ओहि दुनू आँखि केँ देखलक अछि ओ हमरा ओकरा सँ प्रेम करबाक लेल दोष नहि देत।[३८] प्रेमीक मित्र जाइत अछि आ' स्वयं नायकीक सौन्दर्य एवं सुपात्रता केँ देखैत अछि आ' घूरि क' अएला पर प्रेमी सँ कहैत अछि जे ओकरा आब बुझबा मे अएलैक अछि जे ओ अपन मित्रक प्रेम केँ अनुचित सोचैत छल से कतेक विवेकशून्य आ' भ्रान्त छल।[३९]

केओ अपना केँ ई सोचबा सँ विरत नहि क' सकैत अछि, जे वैवाहिक रहस्यवादक सरल, मौलिक प्रतीकात्मकता, आत्माक परमात्माक प्रति प्रेम आ' हुनका संग संयुक्त भ' जैबाक प्रबल इच्छा यदि ओझरा नहि गेल अछि त' जटिल अवश्य भ' गेल अछि। ई भेलं अछि आन-आन चरित्रक प्रवेश सँ, ओकरा सभक लेल अवस्थितिक आविष्कार सँ. ओकरा सब सँ जे कहाओल गेल अछि ताहि सँ। तमिल काव्यक अध्येता केँ ई सबटा संगम युगक प्रेम काव्यक आदर्श पर रचित लगैत छन्हि। यद्यपि ओ लोकनि प्रेम कथाक काव्य केँ विस्तार दैत छथि, अहि प्रतीकात्मकताक विशेषता केँ, जाहि मे प्रेमी आ' प्रेमिका केँ परमात्मा आ' जीवात्मा बुझल गेल अछि, विकृत क' दैत छथि।

कविताक अन्त मे, नाम्मलवार स्वयं प्रतीकात्मकताक तिरस्कार करैत कहैत छथि :

युग-यग सँ चल अबैत
जन्म-मृत्युक ई क्रम
जे देखि सकैत अछि
आ' हँसि सकैत अछि एहि व्यर्थता पर
निश्चय ओ सब चाहत एकर अन्त कर'
एकरा ईश्वर जे मूल छथि, तनिका प्रति
प्रेम मे बदलि,
जनिक चारूकात अमर लेकनि होइत छथि
एकत्रित पूजाक लेल,
कोना हुनका सबकेँ निन्न हेतैन्ह ?[४०]

---

३६. उपरिवत् : २२
३७. उपरिवत् : ५५
३८. तिरुविरुत्तम : ५७
३९. उपरिवत् : ९४. किछु टीकाकार एहि पद्य केँ नायिकीक उक्ति बुझैत छथि आ एकर व्याख्या आलवारक एहेन स्वीकारोक्ति सँ करैत छथि जे हुनका अपन प्रेमीक पता नहि छन्हि आ ओ एहि सम्बन्ध मे मात्र सुनल बात बाजि रहल छथि
४०. तिरुविरुत्तम : ९७

वा जखन ओ प्रेमीक प्रतीक कें छोड़ि दैत छथि आ' ईश्वर कें पिता एवं माता कहैत छथि :

शरीर मे प्रवेश करैत ।
ओहि मे बन्धनग्रस्त, बन्धन मुक्त भ'
एहि तरहें आत्मा करैत अछि सतत संघर्ष,
अहिना यथासमय, कहुना, हम अभिमुख हैव
हुनका प्रति,
जे हमर माता छथि आ' हमर पिता,
आ' मुक्तिक प्रभुवर ।[४१]

वा जखन ओ सभ धर्म आ' पूजाक प्रत्येक पद्धति कें ईश्वरक सृष्टि कहैत छथि आ' सब देवता कें हुनकहि रूप ।[४२] मुदा प्रतीक कें आ' जकरा प्रतीकक माध्यमे प्रस्तुत कैल जाहत अछि तकरा मिझरा देब, प्रतीक के प्रतीकार्थक युक्तिक सीमा सँ बाहर धरि विस्तार, प्रतीकक हठात् परित्याग आ' सोझ अभिव्यक्तिक प्रवृत्ति– ई सब विशेषता सामान्यतः रहस्यवादी कविता मे लक्षित होइत अछि आ' 'तिरुविरुत्तम' एकर उदाहरण थिक । भ' सकैत अछि जे नाम्मलवार 'तुराहस' अथवा ओहि स्थिति सब कें ग्रहण कैलनिह जकरा संगम युगक तमिल कविगण प्रेमक अपन आदर्शीकरण मे व्यवहार मे आनलन्हि आ' अपन रहस्यात्मक मनोभाव कें ओही साँचा मे ढ़ारबाक प्रयास कैलन्हि ।[४३] कौखन मनोभाव ओहि सभक अतिक्रमण क' जाइत अछि ओ' कौखन प्रतीकक माध्यमे अनुभवक आदर्श अभिव्यक्ति मे, साँचा, मार्ग मे बाधक होइत अछि । मुदा ई सभ निष्कपट रहस्यात्मक कृतिक विशेषता थिक । चतुर कलाकार प्रतीकक तर्कसंगत उपयोग क' सकैत अछि; लक्ष्य कें एहि तरहें संयुक्त क' जाहि सँ युक्ति संतुष्ट भ' जाए । मुदा जलाल-उद्दीन रूमी जेना कहने छथि' परमात्मा सूर्य छथि आ' तर्क परमात्माक छाया थिक ।

चतुरता मात्र एकटा विचार थिक आ' विस्मय अन्तर्ज्ञान थिक ;'[४४] 'तिरुविरुत्तम' अन्तर्ज्ञानक काव्य थिक ।

---

४१. तिरुविरुत्तम : ९५

४२. उपरिवत् : ९६

४३. कोना आ करवन नाम्मलवार संगम प्रेम काव्यक परिपाटी सँ सम्पर्कित भेलाह ओहने रहस्यक विषय अछि जेनाकि वेद एवं उपनिषदक हुनक ज्ञान

४४. आल्डस हक्सले द्वारा उद्धृत रहस्यवाद 'द पेरिनियल फिलोसफी / फानटेना बुक्स – लंदन पृष्ठ १४९

तिरुवसिरियम

'तिरुवसिरियम' एकहत्तरि पंक्तिक कविता थिक जाहि मे सातटा विषम खण्ड छैक। पहिल खण्ड मे पन्द्रहटा पंक्ति रहैत अछि, दोसर, तेसर, चारिम आ' सातम मे सँ प्रत्येक मे नओ–नओ पंक्ति तथा पांचम आ' छठम मे, प्रत्येक मे दस-दस टा।

कविताक पहिल पन्द्रहो पंक्ति मे आदि शेष पर शयन करैत नारायणक महिमाक बखान कैल गेल अछि :

उद्दीप्त मरकत गिरि सदृश,
लालधारी, चमकैत लाल मेघ सँ आवृत,
शिखर पर धारण कैने सूर्य कें,
आ' शीतल-श्वेत चन्द्रमा आ' तरेगण कें,
समुद्रक लहरि पर ओङठल,
जाग्रतावस्था मे विश्राम करैत आद्यशेष पर,
हे अप्रतिम परम पुरुष
जकर विष सँ भरल फण नीचा दिश झुकल छैक।
अहाँ ओङठल रहू,
पद्मराग सन लाल ठोर आ' कमल नेत्र,
रक्ताभ स्वर्ण सन वस्त्र,
असंख्य रत्न-जटित मुकुट पहिरने।
शिव, ब्रह्मा, इन्द्र तथा सब देवता लोकनि
कर जोड़ने लागल छथि आराधना मे।
तीनू लेक कें तीन डेग मे नपनिहार !!'[1]

बादक नओ पंक्ति मे ईश्वर कें संबोधित करैत कहल गेल अछि जे, जे सज्ञान छथि से सांसारिक भोग-विलासक लेल, भगवान प्रति स्पृहा मे जे माधुर्य्य छैक तकर त्याग नहि करताह :

---

१. तिरुवसिरियम : ११.१-१५

हे प्रभु, सिरजनहार !
अहाँ जे धारण करैत छी समस्त संसार कें,
अपना मे ।
जे विलक्षण आ' प्रज्ञावान छथि
त्यागि देताह मधु सन मधुर अमृतोपम प्रवाह कें
जे अहाँक प्रेम सँ प्रकट भ' प्रवाहित होइत अछि,
अहाँक दीप्त, घुँघरू छादित चरण पर ध्यान देब
छोड़ि देताह,
उत्कंठाक उल्लास मे अन्तरात्मा विलीन भ' जाइत अछि !
नहि, हुनका स्वाद' दिअन्हु ओहि सांसारिक वस्तु कें
जाहि सँ ओ संलग्न छथि ।
मुदा जे बुधियार छथि
से कखनहु ध्यान देताह अमर शक्तिक दान दिश
वा तीनू लोकक आ' ओकर समस्त ऐश्वर्यक,
एतेक धरि जे स्वर्गक पूर्ण उन्मुख्तताक उपहार पर
आ' अहाँक लेल स्पृहाक असीम माधुर्य्य कें
त्यागि देता ![२]

कविताक तेसर खण्ड, भगवान नारायण द्वारा क्षीर सागरक मन्थनक पौराणिक कथाक जीवन्त वर्णनक संग उल्लेख करैत अछि । नाम्मलवार हुनक सँ वरदान मङैत छथि जे ओ हुनक भक्तक चिरकाल धरि सेवा क' सकथि :

'त्रिदेव मे
जे छथि सर्वोपरि,
जनिका प्रतिएँ संसार भक्ति सँ–
माथ झुकबैत अछि,
ओ, जनिक गुणगान वेद करैत अछि,
जे देखैत छथि जे हुनक परमादेश तदुनुरूप
पालित होइत अछि,
ओ जे छथि देदीप्यमान,
फण काढ़ने बासुकी कें रज्जु बना,
मन्दराचल कें बना क' मथानी,

---

२. तिरुवसिरियम : ११. १६-२४

मन्थन कैलन्हि सागरक,
आ' लहरि उठल पर्वताकार,
मेघगर्जन जकाँ गगन मे,
आ' पैघ-पैघ पहाड़ भय सँ कँपैत छल,
ओ', जे छथि अद्वितीय,
देता हमरा सभ केँ वरदान,
अपन भक्तक सेवाक,
युग-युग धरि, अनवरत,
सदा-सर्वदाक लेल ![३]

कविताक चारिम भाग मे नाम्मलवार प्रभुक आराधनाक अपन इच्छा व्यक्त करैत छथि, ओ प्रभु, जे सृष्टिकर्त्ता छथि, सभ वस्तु एवं सब प्राणीक मूल छथि :

'चिरन्तन कालक लेल, निर्बाध,
हमरा सब केँ अवसर देल जैत
हुनक पूजा करबाक
ई कहैत जे,
"अहाँक महिमा अपरंपार अछि !"
जखन संसारक अस्तित्व नहि छल,
कतहु कोनो जीव नहि छल,
ओहि अन्धकार संकुलता मे,
ओ, जे किछु अछि तकर–
उत्पत्तिक स्रोत, आद्य बीज
चतुर्मुख ब्रह्मा केँ उत्पन्न कैलन्हि,
अपन नाभि कमल सँ,
आ' देलनिह हमरा सब केँ,
शिव सहित आन-आन देवता ।
एहि ज्ञानातीतक चरण,
ई रहस्य,
हमरा सब केँ भेटत
पूजा करबाक लेल चिर काल धरि ![४]

---

३. तिरुवसिरियम : ११. २५-३३
४. तिरुवसिरियम : ११. ३४-४२

पाँचम भाग मे 'त्रिविक्रम अवतार''क वर्णन अछि जे ओ कोन तरहेँ दू-डेग मे पृथ्वी आ' आकाश आ' तीनू लोक केँ नापि लेलन्हि । एकर अन्त एहि प्रश्नक संग होइत अछि जे हिनका अतिरिक्त संसार आन ककरा प्रति सम्मान मे निहुरतः

एकटा पैर सन्तुलित, दोसर विलोमित कली,
समस्त पृथ्वी पर, आ' एकरा झँपने,
पसरल एहि पर,
ब्रह्माण्डक फूल बनि मुकुलित भेल,
दोसर पैर दमकैत, आकाश केँ आच्छादित करबाक लेल,
ब्रह्म लोक मे छल विस्मय आ' उल्लास
तथा देवगण,
यथोचित सृष्टिक हेतु,
ठाढ़ छलाह कमलक कुंज मे,
फूल सन नयन आ' बिम्बक फर सन अधर,
अपन हजारो किरीट,
आ' हजारो सूर्य चन्द्रमा,
अपन हजारो भुजा[५]
आ' असंख्य कल्पवृक्ष सँ भरल उपवन सहित,
एहि असीम केँ नहि त'
संसार आन ककर करत भक्ति ?[६]

आगांक खण्ड मे कहल गेल अछि जे संसार अपन अज्ञानताक कारणेँ अपन सृष्टिकर्त्ता आ' पालनकर्त्ताक प्रति उदासीन अछि तथा विषयक पंक मे फँसल अछि :

'ओह, केहन अछि ई संसार
जखन कि माय जे जन्म दैत छैक,
लग मे छैक,
ई ढ़ारैत अछि अछिंजल,
सुखाएल काठक टुकड़ा पर ।
ओ जे सृष्टि कैलक, पोसलक,
ग्रहण कैलक आ' संसारक शिक्षा देलक,
ओ जे अछि ज्ञाता, पालनकर्त्ता,
आद्य हेतु, ज्ञानतीत,

---

५. स्वर्गक वृक्ष, अमर देवगणक क्षेत्र, जत' सब कामनाक पूर्त्ति भ' जाइछ
६. तिरुवसिरियम : ११. ४३-५२

जखन ओ प्रतीक्षा मे अछि,
तखन आन-आन देवता दिश ताकब,
विकृत अन्हरपन मे आमोद-प्रमोद,
आ' प्रदर्शन थिक,
अनैतिक काज मे
व्यर्थ बिताएब आ' लिप्त रहब थिक,
आ' अनन्त मायाजाल मे ओझराएब थिक,
विषयान्धकार मे भोग-विलास करब थिक,
ओ, केहन अछि ई संसार !'[७]

कविताक अंतिम अंश मे प्रलयक वर्णन अछि, जखन समस्त संसार, सब देवता आ' सब वस्तु हुनका मे विलीन भ' जाइत अछि :

शीतल चन्द्रमा कें धारण कैने
जटाधारी शिव,
आ' देवेन्द्र
लता-तन्तु जकां स्वच्छ,
क्षिति, जल, पावक, समीर,
देदीप्यमान सूर्य एवं चन्द्रमा सहित गगन,
सम्पूर्ण जगत, सम्पूर्ण जीवधारी आ' सब किछु
हुनका मे समाहित भ' गेल,
ओ ओकरा सब कें अपना मे नुकौने रहलाह,
आ' सूति रहलाह बड़क पात पर,
ओ, जे छथि अनन्त रहस्य,
हुनका छोड़ि हमरा लोकनि
कोनो आन देवता दिश ताकब ?[८]

ई कविता यद्यपि छोट अछि, तथापि बिम्बविधानक दृष्टिएं सम्पन्न अछि आ' नाम्मलवारक कल्पना कें, ओ जे पौराणिक कथा कें प्रकाश मे आनलन्हि, परमात्मा जे गूढ़ रहस्य छथि ताहि मे स्थायी विश्वास प्रकट कैलन्हि, उद्घाटित करैत अछि ।

---

७. तिरुवसिरियम : ११. ५३-५६
८. तिरुवसिरियम : ११. ६३-७१

पेरिया तिरुवनतति

'पेरिया तिरुवनतति' / पेरिया तिरुअन्तति / सतासी बन्धक कविता थिक । एकर प्रत्येक बन्ध कें वेनवा कहल जाइत अछि, जे तमिल मे विशेष प्रकारक चौदह पंक्तिक पद्य थिक । अहि कविता के पेरिया तिरुवनतति किएक कहल जाइत अछि तकर व्याख्या पहिनहि कैल जा चुकल अछि ।

कविताक प्रत्येक बन्ध मे युक्तियुक्त सम्बन्ध स्थापित करब दुष्कर हैत, प्रायः अलाभकर से हो', यद्यपि धर्मशास्त्र द्वारा एहि दिशा मे प्रयासो कैल गेल अछि । प्रत्येक बन्ध कें स्वतंत्र गीत वा मुक्तक कहल जा सकैत अछि । एहि मे प्रत्येक एक एकटा रत्न थिक, जे नाम्मलवारक कोनो भाव वा दशा कें व्यक्त करैत अछि । मुदा एकहि विषय पर आधारित रहबाक कारणें प्रत्येक बन्ध एक दोसरा सँ सम्बद्ध अछि । एकर विषय अछि ईश्वरक प्रति प्रेम आ' प्रेमक यात्राक कष्ट, विफलता एवं सफलता ।

एहि कविताक बहुत रास पद मे नाम्मलवार अपनहि हृदय कें सम्बोधित कैलन्हि अछि । एत' किछु उदाहरण देल जाइत अछि, जाहि मे देखबा मे आओत जे ओ सभ कठोर अस्वीकृति एवं आशंका सँ उल्लास धरिक विभिन्न मनोदशा कें व्यक्त करैत अछि । पहिल बन्ध थिक ईश्वरक गुणगान करबाक लेल आलवार द्वारा अपन हृदय कें आमंत्रण :

हे हमर हृदय,
अपनहि बोझ तर किऐक छी आक्रान्त,
किऐक अहाँ एखनहुँ दौड़ैत छी हमरा सँ आगाँ ?
आउ, कनेक विलमि जाउ, हमर संग दिअ,
एक संग हमरा लोकनि गढ़ब
एहन-एहन शब्द जे जिह्वाक लेल हो–
कोमल ओ मधुर,
हुनक प्रशस्तिक शब्दावली[1]
जे छथि श्यामवर्णक, केआक फूल सन ।[2]

आलवार कें भगवान धरि पहुँचबाक जे लिप्सा छन्हि ताहि पर स्वतः आश्चर्य होइत छन्हि :

देवगणक समक्ष, हमरा सभक की मोल अछि,
आठो वसु,

---

१. एक गाढ़ नील रंगक जंगली फूल
२. पेरिया तिरुवनतति : १

एगारहो रुद्र,
आ' बारहो सूर्य
जे हुनकर आराधना करैत छथि ?
वस्तुतः हुनका धरि पहुँचबाक लेल सोचबा मे,
कोन अपराध !
हे हमर प्रिय हृदय, अहाँ की बुझैत छी,
हमरा सबक लिप्सा कतेक अतिरंजित अछि ?[३]

आलवार अपन चंचल हृदयक कारणेँ विरक्तिक अनुभव करैत छथि :

'ओ के थिक जे निरन्तर लागल अछि
हमरा ठेलक लेल गहन सँ गहनतर–
शोक ओ सन्ताप मे ?
हे हमर हृदय, से अहीं छी,
अहाँ केँ उपदेश देने कोन लाभ ?
अहाँ छी जिद्दी, क्रोधी, हमर कहियो नहि सूनब,
आउ, हुनक चरण-बन्दन मे लागि जाउ ।
एहि बात मे, इअह करक चाही हमरा सब केँ ।'[४]

आलवार ई कहि अपन हृदय केँ प्रेरित करैत छथि जे भगवानक स्तुतिक स्वर कतबहु क्षीण किऐक ने रहओ, हुनकर असीमता केँ कम नहि क' सकैत अछि :

हे हमर हृदय, पहिने ई जानि लिअ',
ओ विश्राम करैत छथि सागरक वक्ष पर,
जागरूक भेल, आँखि मुनने,
उच्चनादी लहरि स्पर्श करैत अछि हुनक चरण केँ,
अहाँ हुनक स्तुति मे बेर-बेर गाबि सकैत छी
अपन दुख-कष्ट केँ राखि ।
है अज्ञान ! अहाँ ई त' ने सोचैत छी
जे हमरा सभक तुच्छ शब्द
हुनक महिमा केँ कम क' देत ?[५]

आलवार अपन हृदय सँ सर्वदा भगवानक विषय मे बाजबाक आग्रह करैत छथि, भनहि से उपहासे मे किऐक ने हो :

एकहु क्षण सुस्तेबाक नहि अछि,
हे हमर हृदय !
अहाँ हुनक निन्दे मे बाजि सकैत छी,

---

१. पेरिया तिरुवनतति : १०
४. उपरिवत् : १२
५. उपरिवत् : १५

जँ मन होए त रहस्यमय प्रभुक–
उपहासे करिअन्हु,
ओ जे पहिरैत छथि आकर्षक तुलसीक माला,
कोना हारि गेलाह गोपी सभ सँ,
यदि अहू मे असमंजस होअए
त' एकरा अपन अभिशाप बुझू ।'[६]

अलवार कैँ दुख छन्हि जे हुनका पर भगवत्कृपा नहि भेलन्हि अछि :

ओ कृपालु ऊपर उठा लेलन्हि
गोवर्द्धन पहाड़ कैँ,
एतेक धरि जे मूक गौक रक्षार्थ ।[७]
तखन ई की बात
जे जो द्रवित नहि होइत छथि,
प्रकट नहि होइत छथि अपन रूप मे
यद्यपि हम दया याचना मे ठाढ़ रहै छी,
सभ दिन, सदिखन ।
ई पृथ्वी जत' हम ठाढ़ छी,
एतेक दुरारोह अछि,
जे हुनक कृपा से हो एत' ऊपर दिश क'
नहि बहि पबैत अछि ?
हे हमर हृदय ![८]

आलवार कहैत छथि– "मानव संसार मधुर अछि मुदा देवलोक एहि सँ बेशी मधुर अछि ।"

मैत्रीक दिन अछि मधुर,
मधुर अछि अपन विकसित होइत परिवार,
मधुर अछि स्वजनक नेह-छोह,
उच्चकुल मे जन्म लेबाक सुविधा-संस्कार मधुर,
तथापि, हे हमर प्रिय हृदय,
हुनक महिमाक असीम माधुर्यक–
ओ, जनिक दैवी धनुष,
सदिखन तत्पर अछि,
ओकरा सभक रक्षाक हेतु,

---

६. उपरिवत् : ३८. लक्ष्यार्थ अछि यशोदा, कृष्णक माय हुनका अपन आपत्तिजनक बाल-लीलाक लेल केना दण्ड दैत छलीह
७. कृष्णावतारमे
८. पेरिया तिरुवनतति : ७४

जे हुनका सँ प्रेम करैत अछि ।[९]

कविता हृदयक प्रति निवेदन सँ समाप्त होइत अछि । कहल गेल अछि हृदय कें सर्वदा प्रशस्ति पर निर्भर रहक चाही । तथापि लगैत अछि जेना कविताक प्रारम्भ मे स्वीकार कैल गेल अछि, आलवार अपन पथभ्रष्ट हृदय कें सोझ एवं संकीर्ण पथ पर चलबाक लेल सम्मत करबा मे सफल भेलाह :

'हँ, हमरा लोकनि सहमत छी, हमर हृदय आ' हम,
अपन श्याम-वर्ण प्रभुक कृपा सँ
परास्त क' चुकल छी अपन सभटा दुष्कर्म कें
आ' खेहारि देल ओकरा वन-प्रान्तर मे ।'[१०]

कविता मे भगवानक प्रति बहुत रास हृदयस्पर्शी ओ प्रत्यक्ष निवेदन अछि :

हे प्रभु ! कहू हमरा सभ कें
की सोचैत छी अहाँ,
करबाक हमरा सभ लेल ?
की अहाँ कहब "जे फूर' से करह'
आ' त्यागि देब हमरा सभ कें ?
वा करब प्रकट
आमक मज्जर स अपन श्यामवर्णक रूप कें
हमरा सभ लग !
हम सभ नहि जनैत छी,
शुरूए सँ हमरा लोकनि अज्ञान छी
जे अहाँ हमरा लेल की कर' चाहैत छी ।
अहाँक जे इच्छा हैत
तकरा हमरा लोकनि सहि नहि सकब !'[११]

आलवार सत्यपथक अनुसरण करबाक इच्छाक अभाव मे स्वयं कें असहाय बुझैत छथि :

हे प्रभु !
ओ की छैक जे हम क' सकैत छी !
हम देखैत छी जे की नीक अछि,
आ' की अधलाह,
मुदा ई हमरा शक्तिक बाहरक बात थिक
जे एकटाक अनुसरण करी आ' दोसर कें त्यागि दी ।

---

९. उपरिवत् : ७८
१०. उपरिवत् : २६
११. पेरिया तिरुवनतति : ६

हमरा की करक चाही ?'[१२]

ई बुझैत जे भगवान ओकर पहुँच सँ बाहर छथि, आलवार हुनका प्रति अपन प्रेम व्यक्त करितहि छथि :

'हे प्रभु !
जनिक असीम कल्याण अछि एक गोट मादक पेय,
अहाँ छी सूक्ष्मातिसूक्ष्म, हमरा सभ लेल अगोचर,
हम सभ जे छी पापी,
नहि जानैत छी अहाँ धरि जैबाक मार्ग,
आ' ने जानैत छी कोना क' सम्पर्क करी,
तथापि अहाँक प्रतिएँ प्रेम उमड़ि रहल अछि,
चढ़ैत ज्वार जकाँ,
कहू जे कोना वा किऐक ?'[१३]

आलवार प्रभु सँ एकहिटा वरदान मँगैत छथि जे ओ लोकनि प्रभु केँ बिसरथि नहि :

'हे प्रभु, अपन महिमा मे अनन्त,
हम प्रौढ भेलहुँ आ' अहाँक अनुग्रह मे
अपना केँ तन्मय क' देल,
हमर प्रार्थना अछि जे बदलू नहि,
हम जन्म सँ मुक्ति नहि चाहैत छी,
आ' ने चाहैत छी स्वर्ग मे अहाँक सेवक बनी,
इएहटा धन हम चाहैत छी
जे अहाँ केँ बिसरी नहि ।'[१४]

यद्यपि नाम्मलवार कविता मे बहुत ठाम दुःखभोगक तथा अपन जिज्ञासाक प्रत्यक्षतः निष्फल विषय मे कहैत छथि तथापि एहन पद सभ अछि जे परितोषक आनन्द केँ व्यक्त करैत अछि :

'जखन हम देखैत छी
पूवई, केया, नीलम आ कवि फूल सभ केँ,
अयोग्य हम भनहि होइ, हमर अशक्त अन्तरात्मा आ' शरीर
आत्माभिमान ओ उल्लास सँ
पुलकित-विभोर भ' उठैत अछि,
जे ई सभटा आ'र किछु नहि,
प्रभुक रूप थिक ।'[१५]

नाम्मलवार कहैत छथि 'एतबहि बहुत भेल, भगवान सँ प्रेम करब हमरा लेल हुनक

---

१२. उपरिवत् : ३
१३. उपरिवत् : ८. दोसर व्याख्या अछि ईश्वरक मनुष्यक प्रति प्रेम सतत बढ़निहार अछि
१४. उपरिवत् : ५८
१५. पेरिया तिरुवनतति : ७३

चरम उपहार स्वर्गहु सँ बेशी मूल्यवान अछि ।'[१६]

'हमरा छोड़ि आन के अधिक प्रशंसाक पात्र अछि ?
ककर प्रशंसा बेशी महत्वक छैक ?
हम अपन हृदय पूर्णतः अर्पित क' चुकल छी,
प्रभु कें, जे समुद्र-सदृश श्याम छथि,
हुनक असीमता कें, दुर्बोध महिमा कें आ' कृपादृष्टि कें ।'[१७]

नाम्मलवार लिखैत छथि जे हुनक ई प्रेम पूर्णतः पुरस्कृत भेल अछि । 'ओ हमरा हृदय मे बसि गेलाह अछि', आलवार कहैत छथि, 'एहि सँ पैघ किछु नहि अछि जकर कामना कैल जा सकए ।'

'ओ जे दैवी गोपाल
हमरा सभ सँ ततेक दूरस्थ छथि,
ओ जे बदलैत छथि अपन रूप
एहि तरहेँ,
जे केओ हुनक निकटस्थ भ' नहि सकैत अछि ।
ओ छथि अनन्य रहस्य,
जे बहुतो दिन पहिने
तीनू लोक कें नापलनिह अपन डेग सँ,
आइ अएलाह अछि हमरा लग,
कोना, हम नहि जनैत छी,
आ' जीवन बीत रहल अछि मधुर ।'[१८]

आलवार कें आश्चर्य होइत छन्हि जे के पैघ, ओ अथवा भगवान :

'पृथ्वी एवं सुदूर पसरल आकाश,
हुनकहि मे समाहित अछि ।
मुदा ओ कान द' क' पैसि गेल छथि,
हमरा हृदय मे आ' स्थायी रूपेँ रहैत छथि ।
अहि बात कें सोचू,
चक्रधारी प्रभु,
जे दुरात्माक शोणित कें चखैत छथि,
के जानि सकैत अछि जे के पैघ,
ओ वा हम ?'[१९]

प्रकार एवं मर्मस्पर्शिता मे 'पेरिया तिरुवनतति', आलवारक महान् कृति 'तिरुवोइमोज्झी' क प्रायः मूल मन्त्र थिक ।

---

१६. उपरिवत् : ५३
१७. उपरिवत् : ४
१८. उपरिवत् : ५६
१९. उपरिवत् : ७५

तिरुवोइमोज्झी

'तिरुवोइमोज्झी' नाम्मलवारक सब सँ नमहर आ' अत्यन्त महत्वपूर्ण कृति थिक। एहन कथा प्रचलित अछि जे आलवारक आन-आन कृति जकाँ इहो संसारक लेल लुप्त भ' गेल रहिते मुदा नवम शताब्दीक वीर नारायण पुरम[1] केर वैष्णव आचार्य श्री नाधमुनिक प्रयास सँ ई सुरक्षित रहि गेल। कहल जाइत अछि जे ओ दक्षिण सँ आएल दू व्यक्ति द्वारा 'तिरुवोइमोज्झीक एगारह बन्दक[2] सस्वर पाठ सुनलनिह आ' एहि सँ ततेक मुग्ध भ' गेलाह जे सम्पूर्ण कृति कें प्राप्त करबाक इच्छा व्यक्त कैलन्हि। ओ कुरुहुर[3] गेलाह मुदा नाम्मलवारक प्रशंसा मे लिखल गेल एगारह बन्दक अतिरिक्त पहिने किछु नहि प्राप्त भेलनिह।[4] ओ तावत धरि एकर सस्वर पाठ करैत रहलाह यावत धरि नाम्मलवारक समस्त कृति आ' संगहि आन-आन आलवारक कृति सब हुनका ईश्वरादिष्ट नहि प्रतीत भेलन्हि। ओ सबकें संगीत बंधक' विष्णुक मन्दिर सभमे गाओल जैबाक व्यवस्था कैलन्हि। ई परम्परा एखनहु धरि चलैत अछि, केवल गानक स्थान मे पद सभक पाठ होइत अछि।

श्री नाधमुनिक समय सँ, तिरुवोइमोज्झी कें नाम्मलवाकर आ' आन-आन आलवारक कृति सब कें एक ठाम राखि ओहि मे सर्वोच्च स्थान प्रदान कैल गेल अछि। नाधमुनि एकरा तमिल वैदिक सागरक रूप मे स्वागत कैलन्हि जाहि मे अपने सहस्त्रो शाखा सहित सबटा उपनिषद समाहित अछि। वेद अवं गीताक अपना भाष्य मे रामानुज द्वारा एहि ग्रन्थक प्रति ऋणभार कें व्यापक रूपें स्वीकार कैल गेल अछि। श्री वचन भूषणम[5] मे श्री पिल्लैलोकाचार्य[6] श्रद्धापूर्वक नाम्मलवारक उल्लेख करैत छथि। श्री वेदान्त देसिका[7] तिरुवोइमोज्झी कें तमिल उपनिषद कहैत छथि आ' एहि सन्दर्भ मे दू गोट संस्कृत ग्रन्थक

---

१. दक्षिण आर्काट जिला मे चिदम्बरमक निकट, श्री नाधमुनि, श्री रामानुजक यशस्वी पूर्ववर्त्तीक रूपें सम्मानित छथि

२. तिरुवोइमोज्झी : ५.८.१

३. सम्प्रति अलवरती नगरीक नामें जानल जाइत अछि, तिरूनेवली जिला

४. 'कन्नि नन चिरूतम्बु 'शीर्षक कविताक रचयिता छथि मधुरकवि आलवार। श्री नाधमुनि कें ई परनकुसदसर नामक व्यक्ति सँ प्राप्त भेलन्हि

५. तेरहम शताब्दीक वैष्णव आचार्य

६. श्री वचन भूषणम ४५-५०

७. तेरहम शताब्दीक उत्तरार्ध्व आ' चौदहम शताब्दीक पूर्वार्ध्वक वैष्णव आचार्य

रचना कैने छथि ।[८] एहि मे सँ एकटा मे[९] ओ दावा करैत छथि जे खास क' तमिल मे रहलाक कारणें' तिरुवोइमोज्झी' वेशी मूल्यवान अछि, कारण जे वेद सँ भिन्न ई सभक लेल अभिगम्य अछि। इएह विचार श्री अलगिया-मानवल पेरूमल नयानार[१०] अपन' आचार्य हृदयम' मे व्यक्त कैने छथि; ई माटिक बासन नहि अपितु स्वर्णपात्र थिक ।[११] एकर अर्थ जे माटिक वासन जे एकबेर कोनो विशेष प्रयोजन सँ व्यवहार मे आनल जाइत अछि त फेर दोहराक' ओकर उपयोग नहि कैल जाइत अछि कारण जे ओ अपैत भ' जाइत अछि / इएह तत्कालीन विश्वास छल। एहि सँ भिन्न 'तिरुवोइमोज्झि' क व्यवहार ककरहु द्वारा, बिना जातिक विचार कैने, केल जा सकैत अछि आ' ई सदाक लेल चमकैत आ' निर्मल रहत । दोसर महान वैष्णव आचार्य श्री मानवल मुनि, एक सए विशिष्ट वेनबा मे संक्षेपीकरण द्वारा एहि कृतिक प्रति श्रद्धा प्रकट कैने छथि, 'तिरुवोइमोज्झी'क प्रत्येक दशाब्दक लेल एक-एकटा वेनवा लिखल गेल अछि। एहि कृति पर जे बहुत रास विद्वत्तापूर्ण भाष्य लिखल गेल अछि से एहि कें उज़ागर करैत अछि जे वैष्णव जगत मे एकर कतेक समादर भेल। एहि मे सँ एकटा भाष्य, श्री रामानुजक निर्देश पर हुनक समसामयिक तिरुक्कुरूकईपिरन पिल्लन द्वारा लिखल गेल। आन-आन भाष्य मे, नामपिल्लइक भाष्य बड़ विस्तार युक्त अछि ।[१२] ई भाष्य 'भागवत विषयम'क नाम सँ जानल जाइत अछि, तद्यपि 'तिरुवोइमोज्झी' मे केवल भगवानक विषय मे कहल गेल अछि। ई सब उदाहरण एकर संकेत देबा मे सहायक हैत जे दक्षिणक वैष्णव समाज मे 'तिरुवोइमोज्झी' कें कतेक उच्च स्थान देल गेल छैक ।

आब हम सभ एहि कृति पर विचार करी। अहि मे चारि चारि पंक्तिक ११०२ टा बंद अछि। ई विरूत्तम छन्दक विभिन्न प्रकार भेद मे रचित अछि। बंद, जकरा पुसुरम कहल गेल अछि, एगारहक समूह मे अछि, अपवादस्वरूप केवल एकटा समूह मे तेरहटा बंद अछि।[१३] प्रत्येक समूह 'तिरुवोइमोज्झी'क नामें जानल जाइत अछि, आ' दसटा एहन समूह एक संग पट्टु/दस/कहबैत अछि। अत' 'तिरुवोइमोज्झी' मे दसटा पट्टु, एकसए तिरुवोइमोज्झी आ' ११०२ पसुंरम अछि।

"तिरुवोइमोज्झी'क किछु अंशक अनुवाद एहि पुस्तक मे अन्यत्र देल गेल अछि, यथा, 'तत्वानुशीलन,' 'नाम्मलवारक काव्य' एवं 'नाम्मलवारक दर्शन' शीर्षक अध्याय मे। कतिपय अन्य केर उल्लेख एत' कैल जाइत अछि।

तिरुवोइमोज्झी मे एक सए एहेन बन्द अछि जाहि मे भनिता देल गेल अछि। एहि

---

८. 'द्रमिदोपनिषद् सरम्' एवं 'द्रमिदोपनिषद् तात्पर्य रत्नावली'
९. तात्पर्य रत्नावली : श्लोक ४
१०. श्री पिल्लैलोकाचार्यक अनुज
११. आचार्य हृदयम् : १.७३
१२. तेहम शताब्दीक प्रारंभिक कालक आचार्य। हिनक भाष्य 'एहु', 'छत्तीस हजार'क नामें जानल जाइत अछि
१३. तिरुवोइमोज्झी : २. ७.

मे प्रत्येक तिरुवोइमोज्झीक अन्तिम बन्द थिक। एहि बन्द सभ मे ओकर रचनाकारक रूप मे आलवारक नामोल्लेख भेल अछि। एकर संगहि जे एकर अध्ययन करैत छथि तनिका की लाभ हैतैन्ह तकरहु चर्चा अछि। एहि प्रकारक भनिता देब, लगैत अछि, जे ओहि समयक कतिपय धार्मिक एवं भक्त कवि मे प्रचलित छल आ' प्रायः नाम्मलवार तकरहि धारण कैने हैताह।'[१४]

ई प्रश्न कैल जा सकैत अछि जे की समस्त भनितायुक्त बंद एहि कृतिक समान्य स्वर ओ अभिप्राय सँ मेल खाइत अछि। अहि मे सँ किछु तेहन अछि, उदाहरणार्थ एहन बन्द सब जाहि मे आलवार अपना कें प्रभुक सेवक लोकनिक आ' तनिकर सेवक कहैत छथि;[१५] मुदा किछु से नहि अछि। एकर एकहिटा स्पष्टीकरण सम्भव अछि जे प्रत्येक तिरुवोइमोज्झी, वस्तुतः कविताक प्रत्येक बन्द, जीवक विभिन्न मनः स्थितिक तात्कालकि आ' प्रायः अनभिप्रेत अभिव्यक्ति थिक। हमरा लोकनि एतबहु नहि जनैत छी जे प्रत्येक तिरूवोइमोज्झी एकहि बेर मे रचल गेल। अहि लेल जे ओ अपन सीमा मे आत्माक अज्ञानता पर आनुषंगिक नैराश्य सँ ओहि हर्षोल्लास धरि कें समेटने अछि जे अनुभूतिक भाव-समाधि मे विलीन भ' जाइत अछि। आ' ओ हड़बड़ीक संग तथा प्रत्येक कोनो सम्बनध नहियो रहने एक-दोसरक अनुसरण करैत अछि जे आश्चर्यित त' करैत अछि मुदा सहज बुद्धि मे नहि अबैत अछि।

किछु तिरुवोइमोज्झी विषय-परक एवं उपदेशात्मक अछि। ओकर उद्देश्य लोक कें सांसारिकता सँ विमुखक' तत्वबोध दिश प्रेरित करब अछि। ओ प्राचीन, मुदा अद्यावधि सामान्यतः अर्थ शून्य कथन, पार्थिव जीवनक क्षणभंगुरता, ज्ञानेन्द्रिय पर दृश्य जगतक नियंत्रण, मन कें संतुष्ट करबा मे संसारक असमर्थता आ'शाश्वत सौन्दर्य, परोपकारिता तथा भगवत्कृपाक प्रति ध्यान देबाक अनिवार्य प्रयोजन पर जोर दैत अछि।

एत' किछु उदाहरण देल जाइत अछि :

'लोकक सप्राण शरीर,
बिजुरीक चमको सँ बेशी अस्थिर अछि।'[१६]
'छोड़ि दिअ, छोड़ि सभ किछु कें
आ' सब किछु सँ सम्बन्ध तोड़ि देला उत्तर
अर्पित करू अपन आत्मा कें, हुनका
जे छथि मुक्तिक प्रभु।'[१७]
'ध्वस्त करू मूल एवं शाखा कें

---

१४. तथापि नाम्मलवारक केवल दूगोट कृति मे भणिता अछि। ई दुनू थिक : 'तिरुवोइमोज्झी' आ' 'तिरुविरूत्तम'। अन्य दूय कृति 'तिरुवसिरियम' तथा 'पेरिया तिरुवन्तति' मे भणिताक अभाव अछि

१५. तिरुवोइज्झी : ६.९.११, ७.१.११ तथा ८.९.११

१६. तिरुवोइमोज्झी : १.२.२

१७. उपरिवत् : १.२.१

अहाँ एवं अहाँक ।
आ' होउ प्रभुक शरणापन्न ।
नहि अछि अहि सँ पैघ
परितोष आत्माक लेल ।'[१८]
'अे, जे प्रभु केँ जनैत छथि,
हुनक कैल नीक केँ स्मरण राखैत छथि,
आ' पबैत छथि सूक्ष्म दृष्टि,
करता ओ स्वीकार,
हुनका छोड़ि आनक लग आत्मसमर्पण करबाक,
ओ जे छथि रहस्यमय
ओ जे निवारण करैत छथि
जन्म, रोग, वय एवं मृत्यु सँ,
सब क्लेश केँ निर्मूल करैत छथि
आ' एकत्र करैत छथि हमरा सभकेँ,
अपना शरण मे !'[१९]
केहन अछि ई जगत !
मरब आ' भोगव,
हुनका संग-संग,
जे छथि स्वजन
जमा होइत लग-पास,
विलाप करैत, दिग्भ्रान्त ।
ओह, केहन अछि ई जगत !'[२०]

ई बोध आलवार द्वारा जीवनमुक्तिक याचना मे परिणत भ' जाइत अछि :

'हम बहरेबाक बाट नहि जनैत छी
हे शेषशायी नारायण,
शीघ्रता करू, प्रभु, हमरा प्रतिएँ
आ' बजा लिअ' अपना लग ।'[२१]

इन्द्रिय सुख सीमित आ' नगण्य अछि। आलवार कहैत छथि– 'हम तकरा भगवानक असीम सौन्दर्यक अवलोकन करबाक चरम आनन्दक लेल त्यागि देल अछि ।'

'ओ किंचित् परितोष, प्रकटतः अनन्तः,
दर्शन, श्रवण, घ्राण, स्पर्श एवं भक्ष-सभ कथुक,

---

१८. उपरिवत् : १.२.३
१९. उपरिवत् : ७.५.१०
२०. उपरिवत् : ४.९.२
२१. उपरिवत : ४.९.२

एहि सबकेँ हम त्यागि देल अछि,
हम देखल अछि अहाँक युगलमूर्त्तिकेँ,
दीप्त एवं मनोरम,
आ' प्राप्त कैल अछि अहाँक चरण केँ ।'[२२]

ई देखबा मे आओत जे कखनहु क', दोसर केँ उपदेश देब सँ आरंभ क', आलवार, जेना उपर्युक्त पंक्ति मे अपन व्यक्तिगत स्थिति दिश अभिमुख होइत छथि आ' वस्तुपरकता भावप्रवणता मे परिणत भ' जाइत अछि ।

'तिरुवोइमोज्झी' पर बहुत रास एहन गीतक संग्रहक रूप मे विचार कैल जा सकैत अछि । प्रत्येक गीत ईश्वरक प्रति आलवारक भावातिरेकक विभिन्न प्रवाहक वर्णन 'सत्यान्वेषण' शीर्षक अध्याय मे कैल गेल अछि । एकर अभिव्यक्ति दू गोट प्रकार धारण करैत अछि– प्रत्यक्ष एवं प्रतीकात्मक । निम्नलिखित, आलवारक अभिव्यक्तिक प्रत्यक्ष रूप केँ उदाहृत करैत अछि :

'अहाँ केँ की भेटैत अछि, हे प्रभु ।
अहि पंचइन्द्रिय केँ पठौला सँ,
हमरा सँ टकरेबाक लेल आ उत्पीड़ित करबाक लेल
आ' अहाँक चरण धरि पहुँचबा सँ[२३]
रोकबाक लेल ।'
'ओ जे अंगीकार कैलन्हि सातो लोक केँ
आएल छथि स्वेच्छा सँ, हर्षोत्फुल्ल,
हमर हृदय मे छथि कहियो त्यागता नहि
कोन वस्तु एहन जे हमरा भेटत नहि ?'[२४]
'हम कहै छी जे ओ छथि देवाधिदेव
मुदा केहन अछि ओ साधनोपाय
तिरूवेंकटम प्रभुक ?
हम निम्नहु सँ निम्नतर छी,
एकटा गुणहीन प्राणी,
आ' तइयो ओ असीम महिमाय,
कृपा कैलन्हि देखबाक हमरा दिश स्नेह सँ ।'[२५]
'ओ जे प्रभु छथि अद्वितीय,
हमर मन विमुख नहि हैत हुनका सँ,
हमर जिह्वा गाओत सदिखन हुनक गुण,

---

२२. उपरिवत् : ४.९.१०
२३. तिरुवोइमोज्झी : ७.१.३
२४. उपरिवत् : २.६.७
२५. उपरिवत् : ३.३.४

आ' हुनका सँ अधिकृत
हमर शरीर नाच' लागत ।'[२६]
'अहाँ आबि गहन रूपेँ,
मिलित भ' जाइ छी हमरा मन मे,
हम अर्पित क' चुकल छी अपना केँ
अहाँक प्रतिएँ
आ' हमरा केँ ताकबाक नहि अछि,
इएह एकटा प्रतिदान अछि,
जे हम द' सकै छी ।
हमर जीवन की थिक ? हम के थिकहुँ ?
अहाँ हमर जीवनक जीवन छी,
अहीं दैत छी आ' लेल अछि अहीं घुरा क',
एकरा गढ़बाक लेल ।'[२७]
'ओ जे रचना करैत छथि रहस्यक्र,
आकाश सदृश गहन ओ व्यापक,
आ विभ्रांत' क' दैत छथि देवतो लोकनिक
दृष्टि केँ,
ओ' जे छथि घनश्याम,
कहियो नहि हम बिसरबन्हि ।
हुनक चरण-कमल
जे सब लोक धरि व्यापक अछि
तकरा लेल व्याकुल रहब अथक,
तकरा प्रति राखब निष्ठा,
निरन्तर स्पृहा सँ पूजब तकरा ।'[२८]
'हमर हृदय अछि सुवासित अवलेप
जकरा ओ हृदय मे करैत छथि धारण,
हमर स्तवन थिक हुनक माला
आ' ओ जे पहिरैत छथि
से विशिष्ट कौशेय ।
हमर जोड़ल हाथ थिक हुनक द्युतिमान रत्न ।'[२९]
'हम हुनका लेल नहि आनैत छी,

---

२६. उपरिवत् : १.६.३
२७. उपरिवत् : २.३.४
२८. उपरिवत् : १.३.१०
२९. उपरिवत् : ४.३.२

शीतले फूलक माला,
आ' करैत छी हुनक पूजा ।
तइयो, हे प्रभु, तइयो,
अहॉक मुकुट पर जे अछि पुष्पहार,
सएह थिक हमर जीवन ।'[३०]

एहि उद्धरण मे प्रत्यक्षतः व्यक्तिगत रूपेँ कहल गेल अछि मुदा बहुत रास तिरूवोइमोज्झी मे आलवार स्वयं केँ प्रतीकक माध्यमे व्यक्त करैत छथि । नाम्मलवारक दर्शन मे एहि प्रतीक सभकेँ जे महत्व देल गेल अछि आ' जाहि तरहेँ ओ एकर व्यवहार करैत छथि तकर संकेत एहि पुस्तक मे अन्यत्र देल गेल अछि । एत' तिरुवोइमोज्झी मे प्रतीकक एक पक्ष पर ध्यान आकृष्ट कैल जा सकैत अछि । प्रमुख प्रतीक अछि जे ईश्वर प्रेमी छथि आ' जीवात्मा हुनक प्रेम प्राप्त करबाक लेल लालायित अछि । आलवार केँ इतिहास आ' पुराण सँ एहन नारी सभक दृष्टान्त भेटैत छन्हि जे ईश्वर सँ पृथ्वी पर हुनक अवतार मे प्रेम कैलन्हि । आलवार अपन तादात्म्य ओकरहि सभ सँ स्थापित करैत छथि, जेना गोपी सभ सँ जे भगवान कृष्ण सँ चरम प्रेमक लेल आदर्श बुझल जाइत छथि । अधोलिखित उद्धरण मे नाम्मलवार कृष्णक वियोग मे गोपी लोकनिक मनोव्यथाक विषय मे कहैत छथि :

हमर कान्ह जे छल वेणुसन,
लीबि गेल अछि, भ' गेल अछि शिथिल,
जोड़ खाइत कोइली कुहुक' लागल अछि गाछी मे,
हमर व्यथा, हमर विरह आ' सभ कथुक प्रतिएँ
असंवेदनशील,
आ' मजूर-मजूरनी नचैत अछि,
सहवासक सुख सँ,
हम की करी ?
हमरा छोड़ि जा रहल छी अहाँ
चरवाहि मे,
आ' दिन बढ़ि क' भ' जैत एकटा युग ।
किऐक अहाँ बेधल हमरा हृदय केँ
कमल सन सुन्दर अपन दूनू आँखि सँ !
गोरूक पाछाँ जैब सरिपहुँ !
अहाँक लेल उचित नहि, एकदम अनुचित ।'[३१]
आहाँ छी हमरा लग

---

३०. उपरिवत् : ४.३.४

३१. तिरुवोइमोज्झी १०.३.१. दोसर व्याख्या अछि भगवान कृष्ण ग्वाल-बालक संग गाय चरबैत छलाह आ ओकर सेवा करैत छलाह

अहॉक स्पर्शक हर्षातिरेक
प्लावित क' दैत अछि आकाश कें,
आ' हम डूबि जाइत छी,
हमर चेतना आ' सब किछु डूबि जाइत अछि,
आह, मुदा ई थिक एकटा सपना
केवल एकटा सपना ।
अहाँ जा रहल छी
आ' लिप्साक ज्वाला फेर धधकि उठैत अछि
आ' हमरा भीतरे-भीतरे खैने जाइत अछि ।
नहि, नहि, जीवनक लेल असह्य अछि ।
अहाँक जैब गौक पाछाँ,
नीक बरू मरण थिक !'[३२]

आगॉक बन्दक अन्त मे गोपी केवल अपनहिटाक लेल नहि बजैत अछि अपितु समस्त गोपिका लेल जे अपन हृदय प्रभुकें अर्पित क' चुकलि अछि :

'यदि अहाँ गाय चरबए चल जाइत छी,
हम मरि जैब ।
हमर अन्तरात्मा धधकि रहल अछि,
आइ, मुदा ई बड़ कठिन अछि, हम एखनहु जिबैत छी ।
हम एकसरि आ' असहाय छी
आ' देखैत नहि छी अहाँक श्याम रूप
अपना समक्ष विचरैत,
आँखि भरि जाइत अछि,
अनवरत नोर सँ,
चंचल जेना छहछह करैत माछ
जखन अहाँ रहैत छी दूर
कटनहु नहि कटैत अछि दिन ।
एकर नहि हैत अन्त ।
ई विरह अछि मृत्यु हमरा सभक लेल ।
हम सभ जे छी दयनीय प्राणी
हाय, निम्न गोआरक बीच
नारी भ' जे जन्म लेल ।'[३३]

गोपी ओहि प्रेम-संभाषण कें मन पाड़ैत अछि जे ओकर प्रेमी राति मे कहने छलन्हि

---

३२. उपरिवत् १०.३.२
३३. तिरुवोइमोज्झी १०.३.३

आ' ई स्मरण यंत्रणा अछि। ओकरा लगैत छैक जे साँझ एकटा मातल हाथी जकाँ ओकरा पिचबाक लेल आबि गेल हो आ' बसात चमेलीक दाहक सुगन्धि बिखेरि रहल हो।' हम एकरा कोना सहि सकब', ओ बाजि उठैत आछि। ओ सोचैत अछि जे ओकरा जकाँ बहुतो हुनका सँ प्रेम क' सेकैत अछि, / किऐक नहि ! सभ जीवात्माक प्रेमी छथि/आ' प्रायः जत' जाइत छथि, हुनकर प्रतीक्षा क' रहल अछि। ओ बजैत अछि,' ओ सभ प्रतीक्षा करथु मुदा एत' हमरा सभक आँखि नोर सँ भरल अछि आ' हृदय काँपि रहल अछि। हमरा लोकनि गोचरभूमि दिश नहि जैब, कारण जे, तकर अर्थ हैत जे हमरा सभक मन मोम जकाँ पघिलय लागल अछि।' तखन ओकरा एकटा शंका उठैत छैक। एखन धरि ओ केवल अपनहि वेदनाक विषय मे सोचैत रहल अछि मुदा आब ओकरा भय होइत छै जे जंगल मे दुष्ट असुर एकत्र भ'क' ओकर प्रेमी पर आघात क' सकैत छैक।' ओह ! हुनका नहि जैबाक चाही' गोपी बजैत अछि।' यदि अन्य नगण्य नारीक कारणेँ ओ अपन कमल सदृश नयन, ठोढ़ आ' हाथ केँ ओकरा सभ सँ फेरियो लैत छथिन्ह तथापि ओ रहथु। अहि लेल कोनो बात नहि यदि ओ केवल लग मे रहैत छथि।'

एकटा नारीक मुँहेँ एहन बात आश्चर्यजनक लगैत अछि। ई एहि लेल जे एहि तरहेँ असक्त रमणी निश्चित रूपेँ चाहत जे ओकर प्रेमी ओकरहिटा भ'क' रहैक।

ई तिरुवोइमोज्झी एतबहि नहि व्यक्त करैत अछि जे नाम्मललर गोपीक रूप मे बजैत छथि अपितु इहो जे गोपी नाम्मलवारक थिक।[३४] प्रत्यक्षतः वा पौराणिक चरित्रक माध्यमे एकटा प्रेमिका रहबाक अतिरिक्त नाम्मलवार, जेना तिरुविरुत्तम मे देखब, कौखन माय, कौखन सखी आ' कौखन दासी वा कट्टुविची छथि। मुदा प्रत्येक प्रतीकक प्रयोग पृथक-पृथक तिरुवोइमोज्झी मे कैल गेल अछि जकरा स्वतः पूर्ण कविताक क्षमता छैक; कोनो प्रतीक दोसराक कारणेँ मलिन नहि पड़ि गेल अछि, एतेक धरि जे सभटा प्रतीक एक संग, अविच्छिन्न अन्योक्ति जकाँ घटित नहि भेल अछि।

एत' एकटा तिरुवोइमोज्झी उदाहृत अछि जाहि मे आलवार अपन सखी केँ सम्बोधित करैत प्रेमिकाक रूप मे बजैत छथि :

'हे मृगनयनी हमर सखी लोकनि,
कर्म सँ लादलि जे छी हम, प्रतिदिन,
स्वयं केँ नष्ट क' रहल छी,
यद्यपि ओ छथि धारण कैने–
–अपन राजसी ठाठ।
तिरूवल्लभाज्हक मधुमय कुंज मे,[३५]
जत' हरियर तालवृक्ष सँ आच्छादित–
आकाश अछि,

---

३४. उपरिवत् १०.३
३५. केरल मे तिरुवेल्ला

आ' चमेलीक सुगन्धि महमह करैत अछि,
कहिया हम, हुनक जे दासी, पहुँचब हुनक चरण धरि !'[३६]

दोसर मे प्रेयसी, जे एकटा गोपी अछि, अवसन्न अछि, कारण जे प्रेमी एखन धरि नहि आएल छथिन्ह :

चल जाउ, स्वामी, छोड़ि दिअ हमरा सभ कैँ,
हमरा लोकनि पुण्य कमेलहुँ,
अपन तपस्या सँ,
अहाँक मुसकी, अहॉक बिम्बोष्ठ,
अहाँक कमलनयन सँ उत्पीड़ित हैब ।
जाउ, असंख्य नारी अछि,
मयूरी सन सुन्नरि,
अहाँक कृपापात्र, प्रतीक्षारत अहाँक लेल,
जाउ, जाउ, ओकरहि लग,
आ' छोड़ि क' अपन गऊ कैँ अनेरे चरैत,
जोर सँ बजाउ अपन मुरली,
जकरा सूनि ओ भ' जाए भावविह्वल ।[३७]

एहि **तिरुवोइमोज्झी** मे जे नारी बाजि रहल अछि से एखनहु प्रौढ़ि नहि भेलि अछि । ओ अल्पवयसक कन्या बुझि पड़ैत अछि जे अपन सखा-सखीक संग बालुक घर बनेबाक आ' गृहस्थी बसेबाक खेल खेलाइत अछि । ओकरा क्षोभ छैक जे प्रभु खएला नहि आ' अपन उज्वल मुस्कानक संग, जे हुनक मुखमंडल कैँ आलोकित करैत अछि, ओकरा लग ठाढ़ नहि भेलाह आ' ओकर बनाओल बालुक घर आ' फुसिएक रान्हल भातक प्रशंसा नहि कैलन्हि ।[३८] ई सभटा ओहि लघु प्रयासक प्रतीक थिक, जाहि लेल लोक हुनक कृपाक याचना करैत अछि आ' जकर ओ उपेक्षा क' दैत छथि जाहि सँ लोक हुनका दिश अभिमुख भ' सकए ।

निम्नोद्धृत पंक्ति सभ मे देखब जे ओ प्रेमासक्त स्त्री प्रौढ़ि आ बुधियारि भ' गेल अछि आ' ओकर माय कहैत अछि :

'हुनका लेल, जे नपलन्हि तीनू लोक कैँ,
ओ जे छथि मेघ-सदृश नील-श्याम,
आ' छन्हि मनोरम कमल-नेत्र,

---

३६. तिरुवोइमोज्झी ५.९.१
३७. उपरिवत् ६.२.२
३८. उपरिवत् ६.२.९

सुवासित केशयुक्त हमर पुत्री,
गमा देलक अपन शंखक चूड़ी ।'[३९]

माय अपन पुत्रीक गौरवर्ण, ओकर सुगठित शरीर आ' ओकर कौमार्यक[४०] अपचय पर प्रलाप कर' लगैत अछि। हुनका, जे वैवाहिक रहस्यसँ अनभिज्ञ छथि, ई तथा परवर्त्ती पंक्ति सभ, जाहि मे माय पुनः व्यक्त करैत अछि, कनेक अनसोहाँत लागि सकैत अछि :

"अन्न जे खाएल जाइत अछि
जल जे पील' जाइछ,
पान जकरा चिबबैत छी,
आ' आन सभ किछु
छथि हमर प्रभु कन्नान"
अतः ओ कनैत अछि चिकरि क'
ओ शावक-हरिणी,
आँखिक डबडबायल नोर सँ
ओ जाइत अछि ताक'
पुछैत जे एहि पृथ्वी पर कत' अछि,
ओ आ' हुनक विपुल कीर्त्ति,
आ' ताकि लैत अछि ओहि स्थान केँ
आ' प्रवेश करैत अछि,
ओ थिक **तिरुक्कोलर** ।'[४१]
'कह' हमरा हे छोट-छोट चिरइ,
जपैत हुनक नामक माला,
गाम, धरती आ' समस्त संसार,
करैत अछि तहिना,
की ओ, एहि अभागिनक कन्या
लता सन सुकुमारि,
गेल अछि तिरुक्कोलुर
उर्वर खेत सँ आवेष्टित !'[४२]
ओ' जे अछि उत्कीर्ण प्रतिभा,
सोर करैत पूवै[४३] केँ, सूगा केँ,

---

३९. उपरिवत् ६.६.१. 'शंखक चूड़ी सँ विरहित हैब' एकटा काव्य परिपाटी थिक। अर्थ भेल 'प्रेमाशक्त हैब', 'अपन हृदय अर्पित करब ।'

४०. तिरुवोइमोज्झी ६.६. २.५.१०

४१. उपरिवत ६.७.१. तिरुक्कोलुर, नाम्मलवारक जन्मस्थक निकट एकटा गाम अछि

४२. तिरुवोइमोज्झी ६.७.२

४३. एक प्रकारक पक्षी

अपन कन्दुक, बाकस आ' अपन खेलेबाक वस्तु कें,
तिरुमल क दिव्य नाम सभ सँ,[४४]
उठलि आ' चल गेलि,
ओकर बिम्बाधर कंपैत छल,
ओकर दुनू कारी आँखि सँ,
होइत छल झरझर अश्रुपात ।
ओ की करत, अछि जे दुखिया,
तिरुक्कोलुरक श्यामवर्णा भूमि मे !''[४५]

आगाँक पंक्ति मे माय भगवान कें सम्बोधित करैत, सम्भ्रम एवं पीड़ा सँ प्रश्न करैत अछि जे ओ ओकर कन्या सँ केहन व्यवहार कर' चाहैत छथि :

'ओ ने सुतैत अछि दिन मे ने राति मे
हरदम रहैत अछि छितरौने दनूं हाथ कें,
आँखि मे नोर,
नाम लैत अहाँक चक्र आ' शँख केर
पूजाक लेल जोड़ि लैछ अपन दुनू हाथ कें ।
'हे कमलनयम ! ''ओ बजैत अछि आ'
द्रवित भ' जाइत अछि ।
'कोना क' सहि सकब अहाँ सँ दूर रहब ?''
ओ कनैत अछि आ' पसारि दैत अछि अपन हाथ
नह सँ कोड़ैछ माटि जेना हुनकहि तकैत हो ।
तिरूवरंगमक प्रभु,
जत' जल मे कलवल करैत अछि लाल माछ
एहि नारीक लेल अहाँ की क' रहल छिऐक ?[४६]
ओ एड़लि अछि स्तम्भित आ गतिसुन्न
उठैत अछि, चलैत अछि आ' मूर्च्छित भ' जाइत अछि,
दुनू हाथ जोड़ि लैत अछि,–
चिकर लगैत अछि,–
प्रेम करब थिक यंत्रणा,
हे प्रभु ! सागर-सदृश श्याम वर्णक,
देखू, अहाँ छी निर्दय, ''.....
कहैत अछि हुनका आ' कान' लगैत अछि

---

४४. श्री मन्नारायण, भगवान
४५. तिरुवोइमोज्झी ६.७.३
४६. तिरुवोइमोज्झी ७.२.१

"आउ"– बेरि – बेरि आउ,
आ' खसि पड़ैत अछि मूर्च्छित भ ।
हे महान ! तिरूवरगमक प्रभु,
अहाँ की सोचैत छी अहि नारीक प्रति ?"[४७]

चारिटा मनोरम तिरुवोइमोज्झी अछि जाहि मे नाम्मलवार चिरइ आ' भौंराक माध्यमे भगवान केँ सन्देश पठैबाक प्रयास करैत छथि । पहिल मे वक सँ निवेदन कैल गेल अछि :

मनोरम पाँखि सँ युक्त वक,
अहाँ छी सहृदय,
अहाँ आ' अहाँक जोड़ी,
हमरा पर दया करू ।
आ' हमर दूत बनि क' जाउ
हुनका लग, जे बढ़ा दैत छथि ऊपर धरि
दृढ़ पथ-धारीक चमत्कार[४८]
अहाँ सोचूँ, ओ अहाँकेँ
बन्द क' देता पिंजड़ा मे,
तथापि एहि सँ की
यदि सैह करैत छथि ?"[४९]

जेना नाम्मलवार संकेत करैत छथि, व्यंजना इएह अछि, जे हुनका द्वारा पिंजड़ा मे बन्द क' देला सँ पैघ आर्शीवाद दोसर नहि हैत, कारण जे ओ पिंजड़ा हैत हुनक हृदय ।

आलवार तकर बाद कोइली, मन्दगति हंस आ' फेर नील महनरिल[५०] दिश आकृष्ट होइत छथि :

ओ जनिका चाहिऐन्ह देखक,
आ' दया करक हमरा प्रति ।
जिनका कहक चाहिऐन्ह 'एना नहि होउ'
मुदा नहि करैत छी तेना,
हमर, घनश्याम प्रभु,
कोना क' रचू सन्देश हुनका लेल ?
कहाँ अछि शब्द ?
हे नील महनरिल !
अहाँ करब एतेक अनुग्रह ?

---

४७. उपरिवत् ७.२.४
४८. विष्णुक ध्वजक चिन्ह : गरूड़
४९. तिरुवोइमोज्झी १.४.१
५०. एक प्रकारक पक्षी

वा नहि ?
हुनका कहबाक जे बेशीकाल धरि
नहि क' सकताह धारण–
अपन धर्मपरायणता कें ।'[५१]

पुनः आलवार छोट-छोट जलपक्षी सभकें, आ' तकर बाद नाना रंगक पैघ-पैघ मधुमाछी सभकें, नवजात सूगा सभकें, **पुवसी**[५२] कें आ' स्वतः बहैत शीतल बयार कें आ' अन्ततः अपन हृदय कें सम्बोधित करैत छथि । सभटा निवेदन निष्फल बुझि पड़ैत छनि आ' अपन मनक एकटा संदेशवाहकक प्रति क्रोध फूटि पड़ैत छनि :

'छोटकी चिड़ै, तोंही छैं ओ,
हम जनैत छी,
तोरा कहलिऔक हुनका लग ल' जाय,
हमर वेदनाक समाद,
तों नहि कैलैंह से,
आ' सभटा बिला गेल,
हमर दमकैत रूप आ' सौन्दर्य,
आब तखन चल जो,
ताक ग' कोनो आन कें,
जे आनि देतौक सब दिन,
मधुर ग्रास तोरा लेल ।'[५३]

बसातक प्रति निवेदन मर्मस्पर्शी अछि :

'एहन अछि हमर क्रूर भाग्य
हमर पुण्यक रोष काल,
हमरा त्यागि देबाक करैत छथि ओ लीला,
आ' रहै छथि एकांत ।
हे, सर्द, भ्रमणशील बसात,
हमरा पहिनहि मरि जैबाक चाहैत छल ।
आबह, आब हमरा बेधि दैह,
करह हमर अन्त ।'[५४]

पक्षी सब जकाँ, परमात्मा धरि समाद ल' गेनिहारक रूप मे बसातक चयन नहि कयल गेल अछि । ओकर आवाहन वेदना तथा जीवनक अन्त करबाक लेल भेल अछि ।

---

५१. तिरुवोइमोज्झी : १.४.४
५२. एक प्रकारक पक्षी
५३. तिरुवोइमोज्झी १.४.८
५४. तिरुवोइमोज्झी : १.४.९

एकटा दोसर **तिरुवोइमोज्झी**[५५] मे ओही चिरइ आ' मधुमाछी सभक आह्वान कैल गेल अछि, आलवारक समाद कें प्रभु धरि ल' जेबाक लेल, जे आब तिरुवनवनदुर[५६] सँ अत्यन्त निकट छथि। स्वर आब विशेष आशाप्रद अछि आ' बसात कें आलवार कें छेदि' देबाक लेल नहि बजाओल गेल अछि। पुनः एकटा अन्य तिरुवोइमोज्झी मे, परमात्माक प्रति प्रेम कैनिहारि स्त्री मधुमाछी सँ केवल हुनका धरि समाद ल' जाए नहि कहैत अछि अपितु ओकरा केश मे जे चमकैत फूल सब सजाओल छैक, ताहि पर, अपन मुँह कें प्रभुक तुलसी[५७] सँ सुवासित क' मँडराए कहैत अछि। ओ जे सूगा सब कें पोसने अछि, तकरा, प्रभु पृथ्वी पर जत' कतहुँ होथु तत' सँ ताकि, ओकर कथा सुनाब' कहैत अछि।[५८] अन्य तिरुवोइमोज्झी[५९] मे ओही चिरइ आ' मधुमाछी सभकें तिरुमुज्झिकलम[६०] मे प्रभु धरि पठेबाक वर्णन अछि। एहि मे प्रेमिका चिरइ सबकें आश्वासन दैत अछि / ओ सभ अनुकूल चिरइ अछि / जे यदि ओ सभ ओकर समाद घनश्याम प्रभु, जे तीनूलोकक सृष्टिकर्ता छथि, तनिका लग ल' जैत त' ओ सभ देवता लोकनिक स्वर्णिम संसार, अपितु, सभ लोक मे शासन करत।

मुदा यावत् धरि संदेशवाहक घूरिक' आबि सकैत छल / ओ घूरि क' आओत ! प्रेमोन्मादित नारी चीत्कार करैत तिरुनबोइक[६१] मन्दिर दिश विदा भ' जाइत अछि–

"कखन, कखन, हम हुनक निकट पहुँचब !"

ई निस्सन्देह अहि अन्वेषण एवं प्राप्तिक गीतक स्थायी सुर थिक। तिरुवोइमोज्झी मे ई असंख्य रूपान्तरक संग सन्निहित अछि। एहि कविताक श्रेष्ठता, ओकर दार्शनिक दृष्टि, नाम्मलवारक आन्तरिक जीवनक रहस्योद्‌घाटन आ' विविधता एवं गम्भीरता हुनक रहस्यात्मक अनुभूति मे निहित अछि।

---

५५. उपरिवत् ६.१
५६. कोट्टरक्कर / केरल राज्य सँ ३५ मील
५७. तिरुवोइमोज्झी : ६.८.३
५८ उपरिवत् : ६.८.५
५९. उपरिवत् : ९.७
६०. केरलमे अंगमालिक निकट एक देव-स्थान
६१. तिरुवोइमोज्झी : ९.८. तिरुनावोइ केरलमे एक देव-स्थान अछि

नाम्मलवार द्वारा तत्वान्वेषणक लेल यात्रा, जेना एहि प्रकारक यात्रा मे सामान्यतः देखल ताइत अछि, आत्माक अशान्ति सँ आरम्भ होइत अछि जे जीवनक तात्कालिक अभिप्राय ओ अनुभव सँ अस्थायी रूपेँ देश-कालक तिरस्कार क' दैत अछि । पार्थिव जीवनक क्षणभंगुरता एवं अस्थिरता हुनका लेल सुस्पष्ट छल :

'राजा सभ होइत छथि नतमस्तक
हुनका लग
चरण पर लोटाइत छन्हि एक नहि
अनेको मुकुट
ई जे छथि राजाराजेश्वर लोकनि,
करैत छथि शासन,
दरबारक मृदंगक तुमुल ध्वनि,
उद्घोष करैत अछि हुनक प्रतापक
अन्त मे,
ओ, ओहो, खण्ड-खण्ड भ' जाइ छथि धूरा मे ...
अहिना होइत रहल सृष्टिक आदि सँ
तहिया सँ आइ धरि,
आडम्बर ओ महिमाक भ' जाइत अछि अवसान,
मेघखण्ड जकाँ भ' जाइत अछि विनष्ट,
रहि नहि जाइत अछि कोनोटा अवशेष ।'[१]

ओ अनुभव करैत छथि जे मानवीय सम्बन्ध आकस्मिक आ' अविश्वसनीय अछि । ई जे संसार हमरा लोकनिकेँ घेरने अछि से दुर्बोध आ' असन्तोषजनक अछि :

संसार दैत अछि,
अनेक व्यथा हमरा सभ केँ
आ' ओ जे हमरा सँ कात छथि,
हँसैत छथि व्यंग्य सँ
मुदा लगक नीक लोक,

---

१. तिरुवोइमोज्झी : ४.१.३, ६

करैत छथि प्रकट शोक, भेल जाइत छथि क्षीण,
केहन अछि ई संसार ...'
'मरबाक लेल, नष्ट हैबाक लेल,
हुनका संग जे छथि अपन लोक
मोहभंग सँ क्रन्दन करैत ...
''ल' चलू हमरा'' एहिना अबैत अछि विभव
आ' भ' जाइत अछि नष्ट,
''ल' चलू हमरा'– कहैत अछि दुर्बोध अज्ञान,
आ' आच्छादित क' लैत अछि पूर्णतः
हमरा सभ कें ...'
''ओ, जे छथि दुष्ट जन, पकड़िक' बझा लैत छथि
अपन जाल मे,
करैत छथि उत्पीड़ित, मारि क' खा' जाइत छथि,
जनैत नहि छथि जे की थिक सदगुण,
केहन अछि ई संसार !'[२]

एहि सभटा सँ विमुख भ' आलवार परमात्माक प्रति आकृष्ट होइत छथि। ओएहटा हिनक हृदयक लालसा कें तृप्त करताह। ओ कहैत छथि :

एहि युक्तिक बाटक संग लागल,
ई शरीर जे अहाँ हमरा प्रदान कैल,
हम भ्रमित छी।
कहिया एहि ज्वलन्त कालक
ई व्याधि क्षमित हैत ?
कहिया हम उखाड़ि फेकब कर्म कें ?
कहिया, कहिया हम भ' सकब,
अहाँ संग एकाकार ?[३]
हम रहि-रहिकक' कनैत छी,
नृशंस कर्मक झोंझ सँ,
हम जे छी पापिष्ठ,
हतबुद्धि भेल बौआइत छी
–अन्तहीन व्यूह मे।
कत' कत' प्राप्त हैता ओ हमरा।'[४]

---

२. तिरुवोइमोज्झी : ४.९.१,२, ४, ६
३. उपरिवत् : ३.२.१
४. तिरुवोइमोज्झी : ३.२.९

ई जंजाल थिक संसारक आ' जाहि अनन्त व्यूह सँ आलवार बहरेबाक चेष्टा करैत छथि तकर परित्याग करब सरल नहि अछि। हुनक शरीर आ' इन्द्रिय हुनका ताहि सँ बान्हि देने अछि; केवल एतबहि नहि, इन्द्रिय कें ई बन्धन नीक लगैत छैक आ' ओ एकरा निरनतर बनौने रखबाक लेल प्रवृत्त अछि। ओ एकर कटु आलोचना करैत अछि आ' ओही' तत्व' पर दोषारोपण करैत अछि जकरा प्राप्त कर' चाहैत अछि।

पाँचटा स्वेच्छाचारी कैने अछि विवश हमरा,[५]
अहर्निश, चारू दिश सँ करैत प्रहार,
दमन करैत अछि ओ,
अहीं छी पठौने ओकरा सभ कें,
एहि तरहें अहाँ कैल, अपना मनक काज,
बाधित करैत हमरा जे अहाँकें नहि देखि सकी।[६]
एहि पाँचो ब्याधिक,
ने अछि उपचार आ' ने निवारण
जे हमरा करैत अछि पीड़ित।
अहाँ निरमौलहु एहि पाँचे इन्द्रिय कें–
एकटा पेषण यंत्र,
जे पीसैत अछि पेरैत अछि,
आगाँ, पाछाँ, चारूकात सँ,
पेरि, पेरि बना दैत अछि सिट्ठी,
के दिआओत मुक्ति हमरा
छोड़ि अहाँ कें, हे देवाधीश![७]

इन्द्रियक ई नृशंस क्रीड़ा कोना घटित भेल :

'अहाँ बीनि देल हमर चारूकात
छल-छन्दक जाल
हमरा अज्ञानता मे राखि,
फेकि क' हमरा एहि पाँचोक दया पर,
हमरा बारि देल, हे प्रभु !
अपन चरणक निर्माल्य सँ।'[८]

पार्थिवता दिश प्रवृत्त इन्द्रिय ओ मस्तिष्क पर विजय प्राप्त करब / तत्वानुशीलनक

---

५. पाँचो ज्ञानेन्द्रियं : 'श्रोत्रं त्वक् चक्षुणी जिह्वा नासिका चैव पंचमी'– एकरहि पाँचो स्वेच्छाचारी कहल गेल अछि
६. तिरुवोइमोज्झी : ७.१.२
७. उपरवित् : ७.१.५
८. तिरुवोइमोज्झी : ७.१.४

दिशा मे / पहिल डेग थिक । मुदा एकरा सब के क्षुधित राखि तकरा पाओल जा सकैत अछि ! नाम्मलवार योगमार्ग सँ परिचित छलाह । ई मार्ग छल शारीरिक क्षमता आ' मस्तिष्कक निग्रह एवं नियंत्रणक । मुदा ओ इहो जनैत छलाह जे पार्थिव जगत सँ अनासक्ति / जे योगीक उद्देश्य रहैत अछि आ ई आध्यात्मिक उपलब्धिक लेल अत्यन्त आवश्यक बुझल जाइत अछि / तखनहि सम्भव अछि यदि भगवानक प्रति आसाक्ति हो ।[९] नाम्मलवारक ई धारणा नहि रहलन्हि जे आत्म निग्रह परमात्माक लेल मार्ग दर्शन नहि क' आत्मश्लाघा, संकीर्णता एवं अहंकारक सृष्टि करत । हुनकर विश्वास छल जे शारीरिक क्षमता आ' पार्थिव संस्कार पर विजय प्राप्त कैल जा सकैत अछि मुदा केओ यदि निषेध द्वारा शून्यताक सृष्टि/ यदि से संभव होइक/करैत अछि ताहि सँ नहि, अपितु भगवानक प्रति अनुरक्ति मे स्वयं केँ समर्पित क', आ' एहि तरहेँ अपन पार्थिव प्रवृत्ति केँ निष्प्रभावित क' । एहि मे नाम्मलवार, महान तमिल सूक्तिकार तिरुवल्लुवर सँ एकमत छथि ।

की ई सम्भव अछि ? कोना केओ एकरा प्राप्त क' सकैत अछि जखन ओ भगवानक विषय मे किछु नहि जनैत अछि । नाम्मलवार कहैत छथि जे ओ आन्हर गाय जकाँ अछि जे ई नहि जनैत अछि जे बथान लगहि मे छैक मुदा आन-आन गायक देखादेखी आनन्द सँ डकरए लगैत अछि ।[१०] ई यात्राक तेसर पड़ाव थिक, जत' आलवार, परमात्माक अनिर्वचनीय स्वरूप केँ स्वीकार करितहुँ, साधन एवं इष्ट बुझि हुनकहि दिश आकृष्ट होइत छथि । ओ ब्रह्मक स्वरूप आ' हुनका धरि पहुंचबाक वा बुझि सकबाक अपन असमर्थता सँ विक्षुब्ध छथि । ईश्वर केँ अज्ञेय कहि ओ वर्णन करैत छथि :

'जानबाक लेल, जानबाक लेल,
सतत जानबाक लेल,
कतबहु ने करू अहाँ प्रयास
हिनक अगाधता अछि अज्ञात
विस्तार ओ तुंगता अछि अपरिमेय
एकर निरूपित लोकातीत रूप,
कोना अहाँ जानि सकैत छी,
हे सचेतन प्राणी ।
अहाँ कहियो ने जानि सकब ।''
'जनैत नहि छी जे हुनका की कहि संबोधन करी,
हम नहि जनैत छी जे कोना हुनक कल्पना करी ...
हमर ज्ञान अछि सदा सँ बड़ थोड़ ...
मुदा ओ छथि सब किछु, सभ केओ,

---

९. उपरिवत् : १.२.१
१०. तिरुविरुत्तम : ९४
११. तिरुवोइमोज्झी : १.३.६

ओ अतिक्रम करैत छथि हुनका लोकनिक निरूपण कें
जे बड़ दर्शनक जटिलताक विश्लेषण कैने छथि ।
ओ छथि ककरहु बुद्धि सँ बहिर्भूत,
केओ नहि क' सकैत अछि हुनक निरूपण ।
मुदा ओ जीवक हृदय मे, आत्मा मे ।
आ' प्राप्त कैल जा सकैत अछि हुनका
सर्वथा अनासक्ति सँ ।'[१२]

एत' एकटा विचित्र स्थिति उपस्थित होइत अछि । भगवान कें प्राप्त करबाक लेल कोनो आन वस्तुक प्रति आसक्ति नहि रहक चाही, आ' आसक्तिक त्याग करबाक लोक कें हुनकहि दिश अभिमुख होम' पड़ैत छैक, जनिक ओकरा ज्ञान नहि छैक । अलवार अपन लघुता, इन्द्रियवशता तथा ऐहलौकिक रुचिक प्रति अत्यन्त जागरूक छथि :

'हम जनैत छी बड़ कम...
तथापि हम करैत छी आक्रोश
हुनक दर्शनक लेल
जे छथि ककरहु प्राप्ति सँ बहिर्भूत
अछि एत' किछुटा
बेशी क्लान्तिदायक एवं अर्थहीन !'[१३]
'हमरा अछि ने कोनो सद्गुण
आ' ने कोनो योग्यता
एहन किछु जे नीक कहल जा सकय ।
हम छी लघु, अदना,
यद्यपि हमर कर्म अछि अनन्त ।'[१४]
सदिखन आह्वान करैत रहे छी अहाँक
माथ पर हाथ देने, चीत्कार करैत
मुदा अहाँ नहि बजबैत छी अपना लग
आ' ने व्यक्त करैत छी अहाँ अपन सौन्दर्य,
हमरा दृष्टि मे ।'[१५]
हमर देह एवं आत्मा मे

---

१२. उपरिवत् : १.५.६, ७;१.३
१३. उपरिवत् : १.५.७
१४. नामपिल्लै, तिरुवोइमोज्झी पर अपन बृहत भाष्य मे कर्म कें । नाम्मलवार तमिल शब्द 'विनै'क व्यवहार करैत छथि/ पाप कहि प्रतिपादित करैत छथि आ' कहैत छथि जे एत' नाम्मलवारक धारणा छन्हि जे हुनक पाप, परमात्माक अनन्त कृपा, तकरहु सँ बढ़ि क' अछि ।' कर्म'क व्याख्या सांसारिक व्यवहार, इन्द्रिय एवं मनक गतिविधिक परिणाम, कहि सेहो कैल जा सकैत अछि
१५. तिरुवोइमोज्झी : ४.७.१

आ' तकर वाहरहु,
अहाँ छी सर्वत्र, सदिखन,
अनन्त, कोनो अन्तरालक अनुमति नहि दैत,
आ' हम, अज्ञान, आन्हर,
बेर-बेर तकैत छी अपन आत्मा मे,
नमरबैत अपन छोट जिह्वा कें,
आ' लालायित छी अहाँक दर्शनक लेल,
अहांकें जानबाक लेल,
मात्र अहांकें जानबाक लेल ।'[१६]

आलवार कहैत छथि– 'भ' सकैत अछि जे हम हुनका नहि जानि सकिऐन्ह, मुदा एतेक त' जानैत छी जे ओ छथि आ' ई जे ओ जानैत छथि । अतः हम हुनका अएबाक लेल आह्वान करैत छिएन्ह, जे ओ अपन स्वभावक अनुरूप, हम भनहि कतबहु अपात्र रही, अपना कें हमरा लेल बोधगम्य बनाबथु' ।

'कोना, कोना सकैत छी जीत
एहि पाँचो प्रबल दुष्ट कें
जे थोड़बो कालक लेल
नहि रहि सकै अछि स्थिर ।
यदि नहि होए अहाँक कृपा सँ !'[१७]
'यदि अहाँ अपन कृपा सँ
समूल नष्ट क' दी
एहि पाँचो कें,
जे फेकि दैत अछि हमरा
अगाध, अशुभ खतरा सँ भरल खाधि मे,
जीवनक उत्स कें छिन्न-भिन्न करैत...'[१८]
'आउ हमरा लग अमृत बनि
आ' उन्मूलन करू दुर्बोध रहस्यक
जाहि सँ पठौलहुँ पहिने
पाँचो उग्र इन्द्रिय कें ।'[१९]

इंन्द्रिय एवं इहलोकक बन्धन सँ मुक्तिक लेल नाम्मलवार जाहि तत्त्व पर आश्रित छथि से बौद्धिक कल्पना नहि अपितु अनन्य सौन्दर्य-युक्त इष्ट देवता छथि जे केवल

---

१६. उपरिवत् : ४.७.६
१७. उपरिवत् : ७.१.७
१८. उपरिवत् : ७.१.९
१९. उपरिवत् : ७.१.८

आत्माटा कैँ नहि, एकर संगहि ओकर समस्त उर्जा कैँ नियंत्रित क' संतुष्ट करैत अछि।[२०] भगवानक सौन्दर्य ओ कृपा पर निर्भर रहिए क' नाम्मलवार भवजाल सैँ मुक्तिक प्रयास करैत छथि। ओ कहैत छथि – "यदि हम एकर वर्णन कर' चाही त' कोना क' सकब ? कमल बड़ आह्लादप्रिय होइत अछि मुदा अहाँक नेत्र, चरण ओकरक तुलना मे अकिंचन अछि। सोन कतबहु तपाएल किऐक ने रहओ परन्तु अहाँक रूपक गारिमाक आगाँ तुच्छ अछि। अहि संसार मे जे कोनो तुलनीय वस्तु अछि सभ अहाँक समक्ष निष्प्रभ भ' जाइत अछि,।[२१] एहि स्थिति मे आलवार अपन समस्त इन्द्रिय एवं उर्जा कैँ, सौन्दर्यक, जे ईश्वर थिक, संपर्क मे आनबा मे लगा दैत छथि। ई होइत अछि ओकर दिशा कैँ बदलि, ओकरा परम सत्ता सैँ जोड़ि आ एहि तरहेँ ओकरा नियंत्रित क' :

हमर हृदय अछि पड़ल सुषुप्त
निर्भर भेल अहाँ पर, हे घनश्याम !
अहाँक चरण मे, पूजा करैत अछि तीनू लोक,
हे मुकुटधारी ![२२]
हमर प्रार्थना सदिखन अहीं दिश मुखरित अछि,
अहीं छी हमर आश्रय,
जनिका रहबाक लेल, हमर हृदय अछि विशाल नगर,
'हमर हाथ सदिखन दैत अछि टापर–टोइया
तकैत केवल अहाँकेँ,
हे देवाधीश !
'हमर आँखि तरसैत अछि,
अहाँक दर्शनक लेल, अहाँक सम्पूर्णता मे
सदा–सर्वदाक लेल,
बिना क्षणभरिक विरामक.....
'हमर कान अछि खूजल
सुनबाक लेल,
अहाँक वाहनक पांखिक ध्वनि।
ओना त' कान हमर, अछि परितृप्त,
मधुर अहाँक प्रशस्ति सूनि
जकरा ग्रथित करैत अछि काल.....
'एहि पृथ्वी परक अतृप्तकर लालसा सैँ
हमर आत्मा अहाँ दिश तकैत अछि,

---

२०. 'नाम्मलवारक दर्शन' शीर्षक अध्याय द्रष्टव्य
२१. तिरुवोइमोज्झी : ३.१.२
२२. नामपिल्लैक अनुसारें पृथ्वी एवं स्वर्ग

हे स्वर्णचक्रधारी प्रभु !.....
'हे अभिराम,
सघन श्याम, कमल-नयन,
हे कृपानिधान,
आकर्षित छी करैत हमर अन्तरात्मा कें.....[२३]

आलवार द्वारा परम सत्यक अन्वेषणक आ एकर चारूकातक ब्रह्माण्ड, जाहि पर इन्द्रियक भरण-पोषण होइत अछि, हुनका लेल ईश्वरक निवासस्थान बनि जाइत अछि। ई पृथ्वी अपन समस्त अभावक अछैतो आब लोकातीतक माध्यम बनि जाइत अछि। इन्द्रिय कें एहि पर अपन मुक्त क्रीड़ाक अवसर देल जा सकैत अछि; इएह जे आब ओ पार्थिव बन्धन मे जकड़ि क' राखल नहि जाइत अछि, ओ भौतिक जगत सँ होइत ईश्वर धरि पहुँचि जाइत अछि। जागतिक सौन्दर्य अजेय जगतक प्रतिबिम्ब थिक, ताहू सँ बेशी ई सत्यक अंश थिक आ' यदि ठीक सँ अनुभव कैल जाए त' समष्टि कें प्रत्यक्ष क' सकैत अछि। आलवार आब संसार सँ विमुख नहि होइत छथि जेना आध्यात्मिक अन्वेषण आदि मे छलाह। एकर प्रतिकूल ओ एकर दृश्य एवं श्रव्य, रौद, वर्षा तथा फूल, पहाड़ एवं सागर, जाड़, हरल–भरल खेत तथा वन-उपवन पर स्नेहासक्त होइत छथि, ई बुझि जे सभटा ईश्वरक देन थिक आ' हुनकहि सौन्दर्य कें उद्भासित करैत अछि।

अपन यात्राक अग्रिम चरणमे, नाम्मलवार भगवानक क्षणिक झलकक अुभव करैत छथि। एकटा विशेष तिरुवोइमोज्झी (४.७) क पहिल छहटा बन्द, भगवान नहि अएलाह तकरहि उपालंभ थिक। ई छवो नैराश्य मनः स्थिति कें व्यक्त करैत अछि। सातम बन्द आलवार द्वारा आकस्मिक एवं उल्लासपूर्ण उक्ति थिक : 'हम अहां कें पाबि गेलहूँ, हे प्रभु ! अहाँ जे पहिरैत छी तुलसीक माला।'

अधोलिखित तीनटा बन्द नैराश्यक सुपरिचित स्वर कें व्यक्त करैत अछि :

'हम हुनका छी ताकि रहल,
कत', कत' हम देखि सकैत छी हुनका
अपन चक्रधारी प्रभु कें ?.....
कनैत एवं नोराएल नयनें सभठाम।
ई थिक निष्फल अन्वेषण,
हम जे छी घोर पापिष्ट,
नहि देखैत छिऐन्ह हुनका.....'[२४]

भगवानक एहि क्षणिक झलक सभक संगहि, आलवार जे हुनक विभिन्न अवतार मे विश्वास करैत छला तकर तीव्र अनुभूति अछि। आलवारक कण्ठ सँ आह्लाद, प्रायः उल्लासक स्वर फूटि पड़ैत अछि। ओ कहैत छथि–'भगवान महाभारतक युद्धक संचालन

---

२३. तिरुवोइमोज्झी : ३.८
२४. तिरुवोमोज्झी : ४.७.९, १०

कैलन्हि, पृथ्वीक भार हल्लुक करबाक लेल । ओ बहुत रास रहस्यक रचना कैलन्हि आ' युद्धरत सेनाक संहार कैलन्हि । ओ' तकर बाद घूरि क' अपन ठाम स्वर्ग मे चल गेलाह । हम हुनक दिव्य स्वरूप लग जाय हुनक चरणक अर्चना कैल । आन के भ' सकैत अछि हमर प्रभु ?.... हमरा आ'र की चाही ?..... एहि व्यापक संसार मे हमर के बराबरी करत ?[२५]

'ओ छथि हमरा नयन मे
ओ जे कमल-नयन, कविक फूल सन श्याम
धारण केने शंख-चक्र,
ओ, जे छथि निष्कलंक, एकटा रहस्य,
ओ' जे छथि मानवक लेल विचारातीत,
दर्शन करू, ओ छथि हमरा कान्ह पर,
'हम वहन करैत हुनका सदिखन',[२६]

पुनः

'हम पकड़ि लेल अहाँ कैं, प्रभु,
पकड़ि लेल अहाँ कैं क्षणहि मे–
कसि क' जोर सँ ।[२७]

मुदा ई प्रफुल्लता बिला जाइत अछि कारण जे अन्तः दृष्टि जहिना अकस्मात् आएल छल ताहिना मन्द पड़ि जाइत अछि । चरूकात सघन एवं असह्य अन्धकार पसरि जाइत अछि । अन्वेषणक उद्दाम भाव पुनः जाग्रत होइत अछि; एहि बेर कहियो सँ बेशी तीव्र आ' उत्कट रूपमे । परमात्माक प्रतिएँ प्रेम आब यंत्रणा बनि जाइत अछि जाहि सँ शब्द सभ संघर्षरत भ' जाइत अछि, ओहि अर्थ कैं प्राप्त करबाक लेल जे ओकर शब्दार्थ सँ बहिर्भूत अछि :

हे कमल-नयन, प्रबाल सदृश अहाँक ओष्ठ पुट,
हे हमर मरकत-मणि !
हमर जीवनक अमृत,
अपन दर्शन दिअ हमरा,
हे प्रभु ! जे मन्थन कैल लहराइत सागर कैं !
'अपन दर्शन दिअ हमरा ।
अतः हम गोहरबैत छी अहांकैं,
विचलित आ' नोराएल ।
हम जपैत छी अहाँक नाम,

---

२५. तिरुवोइमोज्झी : ६.४
२६. उपरिवत् : १.९
२७. उपरिवत् : २.६.१

यथासंभव सभ तरहेँ,
हृदय मे बसौने तकरा
अपन दर्शन दिअ हमरा,
हे प्रभु ! जे शीतल जल सँ आवृत्त
पृथ्वी कैँ धारण कैल ।
'हे प्राण, प्राणक प्राण,
जे सृष्टि कैल, धारण कैल आत्मसात कैल
आ' तीनहु लोकक विधान कैल ।
कत', कत' अहाँक दर्शन हैत ?
'कत' अहां कैँ पाबि सकब हम, कत' ?
सातो लोक थिक अहींक
ओकर देवगण छी अहीं
आ' अहीं छी सभ किछु जे करैत छथि ओ लोकनि ।
यदि अछि किछु ओहि सँ बहिर्भूत,
अहीं छी से,
आ' ओहो जे किछु अछि अतिसूक्ष्म,
आँखिक लेल अस्पष्ट, शुद्धात्मा ।
ओ जे स्वर्गक सीमाक अतिक्रमण करैत अछि ।
कत', कत' अहाँकैँ पाबि सकब हम ?'
'तथापि, हम जनैत नहि छी जे
कोना करी अहाँक पूजा ।
कोना क' सकब हम ?
हमर मन, शब्द आ' क्रिया
अहीं सँ भेटल अछि, मात्र अहीं सँ,
आ' हमहूँ छी अहींक ।
'अहाँक भेला सँ सभ किछु
नरको छी अहीं ।
से एहि सँ की होइत अछि
हम पहुँचैत छी श्रेष्ठ स्वर्ग
वा रहैत छी एतहि एहि नरक मे !
तथापि, हम बड़ डेराइत छी, हे प्रभु ।
अहाँ भनहि बैसल रही स्वर्ग मे बिसरि क' ।

प्रदान करू अपन कृपा
शरण अपन चरण मे ।'[२८]

विचार एवं मनोभाव उद्दाम गतिएं मिझरा जाइत अछि आ' शब्द सभ शब्दातीत दिश अभिमुख होइत अछि :

'नहि, नहि हमरा कोनो मतलब नहि
अहाँ सँ,
सूगा सभ जकरा हम पोसल तकरा सँ,
कोइली मजूर आ' पूवई सँ,
हमरा आ'र किछु नहि करबाक अछि अहाँ सँ ।
ओ छीनि लेलन्हि अछि हमर चूड़ी,
हमर कान्ति ओ हृदय,
आ' चल गेला बैकुण्ठ,
प्रायः क्षीर सागर मे
वा, बैकुण्ठक नीलाचल पर ।
ओ सभ अछि लगे निस्सन्देह
मुदा ओ नहि हमरा ओत' धरि
पहुँचए देताह,
यावत हम त्यागि नहि दैत छी,
अहाँ सभ कें,
त्यागि दैत छी सभटा कें, सभ आसक्ति कें,
सदाक लेल,
त्यागि दैत छी सभ किछु, हुनका छोड़ि ।'[२९]

'हम की करी ?
एत' अछि हुनक मुरलीक ध्वनि,
कोना क' सकैत छी सहन हम,
कोना करु चर्चा एकर ?
हम प्रयास करी ताहि सँ पहिनहि,
हुनक सुन्दर आँखि कहैत अछि हमरा;
एकटा बात,
हुनक शब्द संकेत करैत अछि दोसर दिश ।
आ' हुनक गीत आलोड़ित करैत अछि

---

२८. तिरुवोइमोज्झी : ८.१
२९. तिरुवोइमोज्झी : ८.२.८

–हमर अकिंचन हृदय कैँ
आ' क' दैत एकरा स्पन्दनहीन ।
हम नहि जनैत छी, हम किछु नहि जनैत छी ।
केवल एतबहि,
सन्ध्या अछि उतरि आएल,
ओ नहि ।'[३०]

आलवर याचना करैत छथि–'आउ, आउ हे विशाल कमलदह सदृश शान्त एवं सुवासित, आउ हे घनश्याम चतुर्भुज, प्रवाल सदृश ओष्टपुट एवं पहिरने सुधड़ कर्णफूल मरकत गिरि सदृश गहन हरित, जाहि पर सूर्यक दुर्बोध प्रभामण्डल उदीयमान अछि, अहाँ आउ । आउ हे देदीप्यमान किरीटधारी ! एक दिन आउ जे हमर आंखि अहांक दर्शन क' सकय ।'[३१]

एहि अवस्था सँ सिद्धि केवल एक डेग रहि जाइत अछि । नाम्मलवारक तिरुवोइमोज्झीक अन्तिम पद मे एकरहि विवरण देल गेल अछि जे ओ कोना ई डेग उठौलन्हि आ' परब्रह्म मे लीन' भ' गेलाह । अंतिम सँ पूर्वक तिरुवोइमोज्झी मे वर्णित अछि जे ईश्वर-भक्त कोना अपन चिरधाम कें प्राप्त होइत छथि :

'मेघ जे प्रशस्त आकाश कैँ
आच्छादित करबाक लेल
क' रहल छल बाधित भ्रमण,
बजौलक जोर सँ अपन तूर्य
आ' नाचल उल्लास सँ
जखन ओ सभ जे छल भक्त प्रभुक–
सातो लोकक पालनिहार
जनिक स्तुति होइत अछि निरन्तर–
प्रात कैलन्हि तनिक साहचर्य [३२]

हँ, तथा ओकरा प्राप्त कैलन्हि; आ' नाम्मलवार, जेना तरुवोइमोज्झी मे कहल गेल अछि, ओहि मे छलाह । मुदा एकरा व्यक्त करबाक लेल शब्द कहाँ अछि ? ओ लोकनि सम्भ्रमित छथि, विक्षिप्त जकाँ हाथ पसारि अनिर्वचनीय कैँ ग्रहण कर' चाहैत छथि । परिणति की ? ई एक प्रकारक शुन्य थिक जे एकटा उच्च, प्रशस्त एवं गहन कैँ आवृत कर' चाहैत अछि ! ई की एहि सँ इतर मृदु आलंकारिक प्रभामण्डल थिक ! की ई ज्योतिर्मय भाव-समाधि आ' तदन्तरक सिद्धि थिक ? के कहत ? एहि लेल हम असंग्धि छी । अहाँ हमर चतुर्दिक व्याप्त छी आ' हमर व्याकुलता शेषप्राय अछि ।'[३३]

अतः यात्राक अन्त सेहो ।

३०. उपरिवत् : ९.९.९
३१. तिरुवोइमोज्झी : ८.५
३२. उपरिवत् : १०.९.१
३३. उपरिवत् : १०.१०

नाम्मलवारक दर्शन

तत्वक प्रति नाम्मलवारक दृष्टिकोण एकटा रहस्यवादीक आ' कविक छनि, कोनो औपचारिक दार्शनिकक नहि । हुनक कृतित्व मे कोनो विन्यस्त दर्शन के व्यवस्थित पूर्वापरताक संग उपस्थित करबाक लेल समीचीन प्रयास नहि भेटत । एकर विपरीत, एहि में प्रायः अतीतावलोकन, एकगोट उद्दाम, उत्कट आकांक्षा, एक नैराश्य-जनित आग्रह जे शब्द सभ कें धूमिल क' दैत अछि, भावातिरेक सँ विचार आच्छन्न करब अछि । ई सभटा परमात्माक प्रतिएँ प्रबल भावावेशक प्रमाण चिह्न थिक मुदा केवल दार्शनिक स्पष्ट, निरपेक्ष चिन्तन, पद्धति तथा अनवरत प्रयोजन मे बाधक सिद्ध होइत अछि । तथापि दार्शनिक विचारक जे एकटा विग्रह हुनक कविता सँ आ' एहि मे व्यक्त अनुभूति सँ उद्भूत होइत अछि से असाधारण अछि । ई सभ हुनक कृति यद्यपि विकीर्ण भेटैत अछि तथापि एकठाम सुसंगत सम्पूर्णता से समेटल जा सकैत अछि । इएह, जकरा विषय मे कहल जाइत अछि जे, महान वैष्णव चिन्तक एवं आचार्य रामानुज कें वेदान्त सूत्र एवं गीता पर अपन भाष्य लिखवा मे प्रभावित कैलकन्हि ।

एहि दर्शनक कतेक अंश नाम्मलवार सोझहि वेद एवं उनिषद् सँ ग्रहण कैलन्हि से सुनिश्चित रूपें नहि कहल जा सकैत अछि । नाम पिल्लइ एवं पेरियावचन पिल्लइ प्रमुख वैष्णव टीकाकार लोकनि नाम्मलवारक कृति मे वेद, उपनिषद, इतिहास एवं पुराण सँ बहुत रास समानता देखालन्हि अछि । नाम्मलवारक जीवनक जे परंरागत विवरण अछि तकरा यदि स्वीकार कैल जाए त' देखब जे हुनका जन्म सँ ल' क' कतेको वर्ष धरि संसार सँ कोनो सम्पर्क नहि रहलन्हि । एकर अतिरिक्त हुनक जन्म समाजक ओही वर्ग मे भेल छल जकरा मूल वेद धरि प्रवेश वर्जित छलैक । अतः ओहि समय धरि, जखन ओ अपन जीवनक प्रारंभिक सोड़ह वर्षक मौन व्रत कें मधुकर कविक प्रश्नक स्मरणीय उत्तर देबाक लेल तोड़लन्हि, हुनका वेद एवं उपनिषदक साक्षात् वैयक्तिक परिचय नहि रहल हैतन्हि । अतः ई सोचब युक्तिसंगत हैत जे एहि प्रकारक समता, जे नाम्मलवारक कृति तथा महान संस्कृत धर्मग्रन्थ सभ मे पाओल जाइत अछि से एहि लेल जे वेद ओ उपनिषद दुनू भनहि आंशिक रूपें[1] रहस्यात्मक अनुभूति आ' सत्यक सहज बोधक अभिव्यक्ति थिक । एकर अतिरिक्त, वेद एवं उपनिषदक बहुत रास विचार नाम्मलवारक समय हिन्दू पुनर्जागरणक परिणाम

---

१. 'ईशावास्यम् इदम् सर्वम' / ई सभटा प्रभुक निवास थिक / तर्क सँ धटित नहि होइत अछि; ईशोपनिषदक आद्य वाक्य थिक । तहिना, ई जे श्रीमन् नारायण पूर्ण ब्रह्म छथि, तकरा तर्क द्वारा नहि स्थापित कैल जा सकैत अछि, मुदा केवल मात्र 'तैत्तरीय उपनिषद' सँ समर्थित अछि

स्वरूप प्रचलित रहल हो; ओकरा सभकेँ प्रतिष्ठापित करैत पुराण एवं इतिहास, सामान्य लोकाचार मे संगठित क' लेल गेल हो : आ इहो जे तमिल समाज मे नारायण वा तिरुमल बहुत पनिहि सँ पूजल जाइत छलाह।[२] तथापि हम चाहव जे एहि प्रश्न केँ ओहिना छोड़ि दी आ' वेद, उपनिषद एवं अन्य हिन्दू धर्म ग्रन्थ तथा तमिल द्वारा तिरुमल आराधना सँ नाम्मलवारक कृतिक संबन्ध ताकबाक वा निरूपित करबाक प्रयास नहि क' सत्यक विषय मे ओ जे कहैत छथि ताहि पर विचार करी।

नाम्मलवारक लेल ईश्वर चरम सत्य छथि। हुनक विचार पूर्णतः ईश्वरवादी अछि। ई जगत एवं व्यक्तिगत मानव आत्मा सेहो हुनका लेल सत्य अछि। तथापि, एहि लेल जे ईश्वर सँ पृथक आत्माक स्वतंत्र अस्तित्व नहि अछि अपितु हुनकहि अन्तर्गत अछि आ' ओ ओकरहि अन्तर्गत छथि, ओ सभ सत्यक अंग छथि आ' सत्य वस्तुतः एकहि थिकः

'ओ प्रदान कैलन्हि
शिव केँ, जे दहन कैलन्हि त्रिपुर केँ,
अपन दहिन कात।
अपन नाभिका सँ सृष्टि कैलन्हि
ब्रह्मक, अन्तरिक्षक चारू दिश अभिमुख,
जे ई जगत आ' ओ भ' सकथि दृष्टिगोचर;
आ' ओ छथि ओकर हृदय मे,
आ' तथापि यदि हम बाजी एहि द',
सभटा अछि हुनकहि अभ्यन्तर,
इएह अछि हुनक रहस्य।'[३]

तत्पश्चात, नाम्मलवारक लेल ई दृश्य जगत केवल माया नहि रहि जाइत अछि जेना किछु भारतीय आदार्शवादी लोकनिक लेल अछि। निस्सन्देह ई नश्वर अछि, मुदा ई अपना केँ ईश्वरक परिकल्पनाक अनुरूप वर्द्धन एवं विनाश तथा पुनः प्रवर्त्तन, जन्म एवं मृत्युक अनन्त चक्र मे निरन्तर पुनर्स्थापित करैत अछि। एकर उत्पत्ति ब्रह्म सँ अछि आ' ई हुनक अंशक अतिरिक्त आ'र किछु नहि भ' सकैत अछि। एकर अस्तित्वक मूल हेतु ओएह छथि, ओ एकर पोषण करैत छथि आ' प्रलयकाल मे ई हुनकहि मे समाहित भ' जाइत अछि, केवल पुनः सृष्टि हैबाक लेल। ई विलय पूर्ण नहि अछि। हुनक इच्छानुसार जगतक पुनः सृष्टि कैल जाइत अछि आ' ओकरा दोसर कालचक्र मे उत्पन्न एवं स्थित हैबाक स्वीकृति भेटि जाइत छैक।

'शिवक रूमे जगतक संहार क',
आ' ब्रह्माक रूप मे ओकर पुनः सृष्टि क',

---

२. तमिलक प्राचीनतम लिखित साहित्य, संगम युगक काव्य, सँ ई सिद्ध होइत अछि
३. तिरुवोइमोज्झी : १.३.९

ओ बिनैत छथि रहस्य
देवो लेकनिक ज्ञान-सीमा सँ बहिर्भूत ।[४]
'ई जगत अछि आवृत सागर सँ,
हम एकर रचना कैल,
आ' हमहीं थिकहुँ ई जगत ।
हमर शासन अछि एहि पर,
हम करैत छी एकर विनाश
आ' अन्त मे जाइ छी एकरा घोंटि ।
हमहीं थिकहुँ ईश्वर ।'[५]

'हमहीं थिकहुँ ओ जगत'– ई उक्ति अर्थगर्भित अछि । अपन अनन्त लीला मे हुनका द्वारा सृष्ट, पोषित एवं विघटित तथा पुनः सृष्ट हैबाक अतिरिक्त ई दृश्यमान ब्रह्माण्ड, जे अपन असंख्य अंश मे निरन्तर बदलैत, नष्ट होइत आ' नव जन्म प्रात करैत रहैत अछि, तदपि, ईश्वरक विग्रह थिक, हुनक विराट स्वरूप थिक । एहि रूपेँ ओएह जगत छथि । एकर प्रेत्यक अंश मे, पैध ओ छोट, आंतरिक छोट सँ छोट विन्दु, जलकण[६] बाटक कातक वनफूल[७] निष्कलंक नक्षत्र धरि[८] ओ सभ वस्तु मे अन्तर्यामी जकाँ विराजमान छथि । यदि हमरा लोकनि देखि सकी त' देखब जे सभठाम आ सभ बस्तु मे हुनक अस्तित्व छनि ।

'असीम गगन,
पावक, समीर, आ' क्षिति
ओएह छथि ई सभ किछु
आ जतेक जे पसरल अछि ओहि पर,
आ ओहि सभ मे,
शरीर मे प्राण जकाँ
ओ रहैत छथि अन्तर्हित, सभ ठाम,
आ' तइयो, ओ जे वेदक कीर्त्ति,
छथि तकरा सभक शाश्वत निवास ।
वस्तुतः, तीनू लोक अछि हुनकहि मे निहित ।[९]

अतः ई निष्कर्ष जे मनुष्यक हृदय मे सेहो, मानवात्माक अन्तरतम गहनता मे हुनकर प्रच्छन्न वेदिका अछि । नाम्मलवारक कहैत छथि :

---

४. उपरिवत् : १.१.८
५. तिरुवोइमोज्झी : ५.६.१
६. उपरिवत् : १.१.१०
७. पेरिया तिरुवनतति : ७३
८. तिरुवोइमोज्झी : ३.१.८
९. उपरिवत् : १.१.७

'ओ हमरा मे अन्तर्लीन भ'गेल छथि ।'[१०]
'यदि ओ हमरा हृदय मे नहि छथि,
त' फेर हम कोना जीवित छी ?'[११]
'ओ अएलाह स्वेच्छा सँ
आ' बसि गेला हमरा हृदय मे, गुप्त रूपेँ,
आ' एकाकार भ' गेल छथि हमर शरीर सँ,
आ' भ' गेल छथि ग्रथित हमर अस्तित्व सँ ।' [१२]

'अभ्यन्तर' एवं बहिःस्थ' शब्दक तमिल पर्यायवाचीक प्रयोग नाम्मलवार द्वारा बुझि-सुझि क' कैल गेल अछि :

'ओ छथि अभ्यन्तरमे आ' ओ छथि
बहिःस्थ ।'[१३]
यदि अहाँ कहैत छी जे ओ छथि अभ्यंतर मे,
ओ छथि,
आ' ई सभटा अछि हुनकहि रूप ।
यदि अहाँ करैत छी एहि पर प्रश्न,
तखन तर्क सभटा छाया
थिक हुनकहि छाया ।
मुदा ओ छथि, ओ छथि,
एहि द्विविध विशेषताक संग,
अभ्यंतरहु मे, अभ्यन्तर मे नहियो,
ओ छथि ।'[१४]

जीवक एहि द्विविध स्थिति मे ओ गुणस्वरूप, सर्वव्यापी एवं दूरस्थ छथि । बादक स्थिति मे, जखन नाम्मलवार अपन अन्वेषणक अन्त मे पहुँचि गेलाह आ' परमतत्व कँ सिद्ध क' लेलन्हि त' ओ बेशी उत्साह संग बजैत छथि :

'ओ, असीम रहस्य,
ओ जे छथि चतुर चोर,
अपरिचित अज्ञात कविक वेश बदलि
आएल छथि,
ककरहु सँ अलखित, कैलन्हि प्रवेश,

---

१०. तिरुवोइमोज्झी : २.५.३
११. उपरिवत् : १.७.६
१२. उपरिवत् : १.७.७
१३. उपरिवत् : १.३.२
१४. उपरिवत् : १.१.९

भ' गेला एकाकार हमर हृदय ओ जीवन सँ ।
अहा ! ओ ओहि सभ किछु कैँ खा गेलाह,
केवल अपना टा कैँ छोड़ि
रहबाक लेल केवल स्वयं,
एकटा असीम परितोष,[१५]

एहि तरहेँ ईश्वर मनुष्यक अन्तःकरण मे छथि आ' हुनका सँ बहिर्भूत कर्णगोचर एवं दृष्टिगोचर जगत मे हुनक सेवक, हुनका द्वारा प्रवर्तित प्राकृतिक शक्ति-समूह, अमर लोकनि, हुनक योजना कैँ पूर्ण करबाक लेल अथक क्रियाशील छथि । ओ भूत, वर्तमान आ' भविष्य तीनू छथि, ओ कालतत्त्व छथि जकरा हुनक सृष्टि प्रकट करैत अछिः

'हे अहाँ, जे छी अपन काल
ओ बीति गेल आ ओकरा एखनहु
अएबाक छैक ।'[१६]

एकटा दोसर आ' पूर्णतः भिन्न अर्थ मे से हो, ओ' भीतर' हु छथि आ' बाहर'हु यदि एकटा एकहर्टक सूक्तिक व्यवहार कैल जाए त ओ समस्त ब्रामाण्ड मे निहित छथि । एकर अतिरिक्त साक्ष्य ई अछि जे प्रत्येक सजीव ओ निर्जीव वस्तु मे हुनक निवास अछि आ' तैं मनुष्य मे सेहो : मुदा तइयो ओ बहिःस्थ छथि जे सभ सँ तटस्थ आ' ककरहु सँ अस्पृश्य नहि छथि । ओ सत्य छथि, दिक्काल एवं विभिन्न वस्तुक निरन्तर गति सँ बेशी ओकर सीमित वाणी सँ ऊपर छथि ।

-'ओ जे छथि रहस्य, हमर हृदय मे छथि
आ' सभक हृदय मे ।
ओ छथि हमर शरीर आ' प्राण,
पवन एवं पावक,
ओ छथि निकट,
तथापि छथि दूर,
मनन सँ ऊपर,
अस्पृश्य, निष्कलंक ।'[१७]
हे जीवधारी जन्तु,
जानबाक लेल, जानबाक लेल,
फेर-फेर जानबाक लेल,
अहाँ कतबहु करब प्रयास,
ई जे गाम्भीर्य अछि अथाह

---

१५. तिरुवोइमोज्झी : १०.७.१
१६. उपरिवत् : ३.८.८
१७. तिरुवोइमोज्झी : १.९.६

ई जे विस्तार आ' उच्चता अछि अपरिमेय
ई ज्ञानातीत रूपक स्थित,
कोना जानि सकब अहां ?
अहाँ कहियो ने जानि सकब ।'[१८]

ब्रह्म यद्यपि एकाकी छथि, नाम्मलवारक लेल एकर दूटा पक्ष अछि– सर्वव्यापी आ' ज्ञानातीत । तथापि, खास व्यक्तिक दृष्टिकोण सँ ई तीनटा लगैत अछि– मनुष्य, ब्रह्माण्ड आ' ब्रह्म । मनुष्यक आत्माक प्रत्यक्षतः व्यक्तिगत अस्तित्व अछि आ' तहिना ब्रह्माण्डक । परन्तु ब्रह्म दुनू मे निहित अछि । आ' दुनू ब्रह्म मे । मनुष्य आ' ब्रह्माण्ड दुनूक अस्तित्व अछि स्वतंत्र नहि । सर्म्पूतः ईश्वराधीन अछि । नाम्मलवार एहि सभक विषय मे दुर्बोध शब्दावली मे बजैत छथि । ओ ब्रह्मक परिभाषा एकहि तरहेँ जेना मानवीय भाषा में सम्भव अछि, दैत छथि । ओ एकरा निषेधात्मक रूपेँ कहैत छथि अर्थात् ओ अपरिमेय, अतर्क्य परिभाषा आ' मानवीय पहुँच सँ ऊपर, दिक्-काल सँ बहिभूर्त आ' अमर देवगण जनिक ओ सृष्टि कैलन्हि, तनिकहुँ ले अनधिगम्य छथि ।

'ओ एक.....
के जानि सकैत अछि हुनका ?
शिव आ' चतुरानन ब्रह्मा,
जे छथि केवल हुनक रूप
की ओहो लोकनि जानि सकैत छथि
ब्रह्मक स्वरूप ?'[१९]
ओ छथि स्वयंभू,
अतुलनीय ।
जे किछु अछि तकर मूलाधार छथि
ओएह ।
यदि विश्व विचलित होइत अछि
आ' अस्त-व्यस्त हैबाक लेल प्रवृत्त होइत अछि,
ओ, स्वयं क' सकैत छथि एक पुनर्सृष्टि ।
के अछि धरा पर जे क' सकए हुनक मूल्यांकन !'[२०]
'के अछि एतेक महान
आ' एहि तरहेँ सच्चरित,
जे ऊँच आ' नीकक सभ विचार–
मन्द पड़ि जाइत अछि ?

---

१८. उपरिवत् : १.३.६
१९. तिरुवोइमोज्झी : २.७.१२
२०. पेरिया तिरुवनतति : २४

ई छथि ओएह ।'[२१]
'ई सोचब कठिन अछि
जे ई हुनका छन्हि,
आ' ओ नहि छन्हि,
रूप आ' अरूपक, पृथ्वी पर आ' आकाश मे,
इन्द्रियक पहुँच सँ बहार,
ओ छथि, एकटा शाश्वत स्थायी कल्याण ।
जा सकैत छी हुनका लग ?[२२]

नाम्मलवार ठाम-ठाम ब्रह्मक सर्वसमन्वित, अनिर्वचनीय स्वरूप कें विरोधाभासक माध्यमे व्यक्त करैत छथि :

'हमर प्रभु, जे करैत छथि हमरा पर शासन,
छथि दारिद्रय आ' अेश्वर्य,
नरक आ' स्वर्ग,
शत्रु आ' मित्र,
विष आ अमृत ...
एहि तरहें, नाना रूप मे
ओ आत्म प्रदर्शन करैत छथि ।
'ओ छथि हर्ष आ' विषाद
जे हमरा लोकनि अनुभव करैत छी,
संभ्रम आ' शुद्धता,
दंड आ' अनुकम्पा,
उष्मा आ' छाया ।
ओ छथि अबोधगम्य ।
'ओ छथि पुण्य, ओ छथि पाप,
ओ छथि मिलन, ओ छथि बिछोह,
स्मृति आ' विस्मरण,
ओ जे अछि आ' ओ जे नहि अछि
ने ई, ने ओ
आ' ने आन कोनो वस्तु ।
'ओ छथि पाप, ओ छथि धर्मपरायणता;
लाल, श्याम आ धवल,
ओ छथि सत्य, ओ छथि असत्यता,

---

२१. तिरुवोइमोज्झी : १.१.१
२२. तिरुवोइमोज्झी : १.१.३

ओ छथि यौवन आ'जरा,
पुरातन आ' नब ...
'ओ छथि हर्ष आ' क्रोध ...
ओ छथि यश आ' अपयश ...
'ओ छथि तीक्ष्ण रौद, आ' शीतल छाहरि,
ओ छथि लघुता, ओ छथि महत्ता,
संकीर्णता, विस्तार ...
ओ छथि जे अछि गतिशील
आ' ओ जे अछि स्थिर,
ओ छथि सब किछु, आ' सभटा नहि ।'[२३]

तथापि नाम्मलवार इष्टदेवता मे विश्वास करैत छथि । ई नहि जे ओ एहि सत्य सँ अनभिज्ञ होथि जे ईश्वरत्व अनिर्वचनीय अछि आ' एकरा नीक वा महान वा सौभाग्यशाली छथि से ओ छथि एही, दुनू शब्द मे अन्तर्विष्ट अछि' ।[२४] मुदा जखन ओ ईश्वरक चिन्तन कैलनिह आ' हुनका लेल उत्कण्ठित भेलाह से इष्ट देवता श्री नारायणक प्रतिएँ । नारायणक लेल तैत्तिरीय उपनिषद मे कहल गेल अछि जे ओ अपन चक्र आ' अपन शंख, अपन सुवासित तुलसीक माला आ स्वर्णमय आभरण आ मकुट, नीलोत्पल – नेत्र सँ सौन्दर्यक आदर्श छथि । नारायण वा तिरूमल, जाहि नामें तमिल हुनका कहैत छथि, तनिक पूजाक कविता सब मे भेल अछि ।[२५] नारायण कें नाम्मलवार पूर्ण ब्रह्म मानि, स्पष्ट बोधगम्यतक संग, सूक्ष्म एवं स्थूल वस्तुनिष्ठ एवं इष्टक मिश्रित रूप मे व्यक्त कैलन्हि ।

ओ छथि धारण कैने सोनक किरीट'
अति प्रबल योद्धा
हमर प्रभु चतुर्भुज,
पहिरने शीतल तुलसीक माला ...
हमर नीलमणि सदृश प्रभु ।'[२६]

एहि तरहें आरम्भ क' ओ आगाँ कहैत छथिः

'ओ ने त' पुरुष छथि आ' ने स्त्री ...
ओ छथि हमर ज्ञानक सीमा सँ बहिर्भूत
ओ ई छथि आ' ई नहि
प्रकट होइत छथि लोकक इच्छानुरूप आकृति मे

---

२३. तिरुवोइमोज्झी : ६.३ (१,२,४,५,६ आ' १०)
२४. सन्त बर्नार्ड
२५. संगम युगक समय सामान्यतः ईसा पूर्व दोसर वा तेसर शताब्दी सँ दोसर शताब्दी धरि मानल जाइत अछि
२६. तिरुवोइमोज्झी : २.५.८.९

यदि केओ हुनक शरणापन्न होइछ ।
आ' तइयो से हुनक रूप नहि भ' सकैछ ।'[२७]

मुदा ई इष्ट देवता नारायण विषयक अछि जनिक नाम्मलवार गान करैत छथि, यद्यपि यत्र-तत्र मूर्त्त अभूर्त्त निर्वचनीय मे विलीन भ' जाइत अछि ।

कहू हमरा, हे प्रभु,
की ई थिक अहाँक आननक प्रभा-मण्डल
जे कुसुमित भेल अहाँक मुकुट मे ?
की अहाँक चरणक आभा
पुष्पित अछि कमल बनि,
जाहि पर अहाँ होइ छी स्थित ?
स्वर्ण-सम्पन्न अहाँक देहक कान्ति
सैह त' ने भेल अछि अहाँक स्वर्णिम परिधान
आ' दीप्त मणि जे छी अहाँ धारण कैने ![२८]

एतबा दूर धरि मूर्त्तक वर्णन अछि, तकर बाद भवात्मक सूक्ष्मता वैचारिक स्तर पर आबि जाइत अछि :

'अहाँ छी शाश्वत प्रभामण्डल
जकर ने त' होइत छैक प्रस्फुटन
आ' ने होइत अछि म्लान,
अहाँ छी प्रज्ञा, शुद्ध आ' अनन्त ।
अहाँ थिकहुँ सभ किछु,
पूर्णता, परितुष्टि ।'[२९]

नाम्मलवारक विश्वास छन्हि जे पृथ्वी सँ अन्तर्यामीक रूप मे सम्बद्ध रहलाक अतिरिक्त ओ एहि पर अनेको बेर प्रत्यक्षतः प्रकट भेलाह आ' अपना कें कायिक, दिक्-काल तथा नश्वरताक मायाजालक मर्यादा मे रखलन्हि । जन्म-मृत्युक एहि जगत मे ज्ञानातीतक आगमन, अवतार थिक । परब्रह्म द्वारा एहि प्रकारक अवतार, मनुष्यक प्रतिएँ हुनक असीम आसक्तिक कारणें होइत अछि आ' संगहि, जेना भगवत् गीता मे कहल गेल अछि आ' नाम्मलवार जकर पुष्टि करैत छथि, दुष्ट-दलन तथा धर्म-स्थापनाक उद्देश्य सँ ।

'अहाँ त्यागि देल
स्वर्गक अपन विश्रुत आदि रूप
आ' जन्म लेल एत'

---

२७. उपरिवत् : २.५.१०
२८. उपरिवत् : ३.१.१.
२९. तिरुवोइमोज्झी : ३.१.८

कंसक विनाशक लेल
जे उत्पीड़ित करैत छल,
धर्मात्मा कें ।'[३०]
'प्रभु, जे जन्म लैत छथि
—मनुष्य बनि,
ग्रहण करैत छथि,
क्लेश सँ भरल एहि जीवनकें,
आबि एत' हमरा समक्ष,
दुख सँ उठा ल' जैबाक लेल
—हमरा सभ कें,
अपन दिव्य धाम मे ।'[३१]

किछु गोटे छथि जे एहि अवतारवाद कें जैविक क्रम विकासक प्रतीकात्मक निरूपण बुझैत छथि आ' आनन्द कुमारस्वामी तथा आल्डस हक्सले सदृश किछु अन्य एकरा प्रतीकक असाधरण क्रम बुझैत छथि जे मनोविज्ञान एवं आध्यात्मिक शाश्वत सत्य कें व्यक्त करैत अछि ।[३२]

नाम्मलवारक लेल अवतारवाद एकटा ऐतिहासिक सत्य अछि आ' एकर पुनरावर्त्तनक आध्यात्मिक प्रामाणिकता अछि । ओ अपन कृति सभ मे अनेको ठाम घटित घटनाक रूप मे एकर उल्लेख कैने छथि । यदा-कदा ओ एकरा विषादक संग व्यक्त करैत छथि जे जहिया ई घटित भेल, ओ किएक नहि जन्म लेने छलाह । मुदा विभिन्न अवतार मानसिक दृष्टि सँ सेहो अनुभवगम्य अछि यद्यपि ईश्वर सम्प्रति बाह्य दृष्टि मे अदृश्य छथि । अतः अवतारवाद नाम्मलवारक लेल दू तरहें सत्य अछि । एक त' ओ कोनो निश्चित समय मे घटित होइत अछि आ' दोसर मनुष्यक अन्तरात्मा मे निरन्तर, जे ओकर स्वभाव कें बदलि दैत अछि । ओ अवतार सभक ठोस विवरण विस्तार पूर्वक दैत छथि यथा गोकुलक शिशु कृष्णक सुन्दर पक्षक, विकराल त्रिविक्रमक[३३] तथा हिरण्यकशिपुक संहारक नृसिंहावतारक ।[३४] नाम्मलवारक कें जे बेशो आकर्षित करैत अछि आ' जाहि सँ ओ गम्भीर रूपें प्रभावित होइत छथि से थिक अवतार द्वारा ब्रह्मक असीम विस्तार, जे उच्चतम सँ

---

३०. उपरिवत् : ३.५.५

३१. उपरिवत् : ३.१०.६

३२. 'वैष्णव ग्रन्थ मे कृष्ण-भक्त कें पहिनहि बुझा देल गेल छन्हि जे कृष्णलीला कोनो इतिहास नहि अपितु एकटा प्रक्रिया थिक जे मनुष्यक हृदय मे सदिखन रहैत अछि'– हिन्दूज्म बुद्धइज्म-आनन्द के कुमार स्वामी । 'कृष्णलीला, मनोविज्ञान एवं अध्यात्मक चिरस्थायी सत्यक प्रतीक थिक, ओही बातक जे परमात्मा प्रसंग मे जीवात्मा सदिखन स्त्रियोचित एवं निष्क्रिय अछि'–'द पेरिनियल फिलोसफी'–आल्डस हक्सले

३३. त्रिविक्रम अवतार मे भगवान एक डेग मे समस्त पृथ्वी कें नापि लेलन्हि आ' दोसर डेग मे आकाश कें

३४. असुराधिप हिरण्य जे भगवान द्वारा नृसिंहावतार मे मारल गेल

ऊपरहु उच्चतम छथि तनिक निम्नतम धरि, बोध शून्य धरि उतरि आएब; सामान्य जनक दायित्व, ओकर कठिन परिश्रम आ' कष्ट कें स्वयं वहन करब। उदाहरणक लेल, देवाधिदेव कृष्ण, शिशुक रूप मे, वृन्दावनक अबोध चरबाहक संग रहैत छथि आ' ऊखरि सँ बन्हा जाइत छथि, सेहो की त' माखन चोरेबाक लेल।[३५] नाम्मलवारक काव्य पर एहि सभ प्रभावक उल्लेख एहि पुस्तक मे अन्यत्र कैल गेल अछि।

नाम्मलवार जाहि-जाहि तीर्थस्थानक प्रशस्तिगान कैने छथि ताहि मे अधिकांश दक्षिण भारत मे, बहुतो केरल मे अछि। लोक कें आश्चर्य होइत छैक जे ओ स्वयं एहि स्थान सभ मे गेलाह। मुदा हुनक जीवनक जे परंपरागत विवरण अछि ताहि मे कहल गेल अछि जे ओ तिरुनगरी / वा कुरुहूर जाहि नामें जानल छल / क तेतरिक गाछ कें छोड़ि ओ कतहु नहि गेलाह आ' विभिन्न मन्दिर सँ भगवान हुनका दर्शन देबाक लेल अएलथिन्ह। तथ्य जे हो, मुदा नाम्मलवार द्वारा देवस्थान सभक संकेत प्रकृति-वर्णन सँ भरल अछि जे हुनका लेल प्रभुक वा हुनक अवतार शरीर छल। अतः तिरुनेवेलि जिलान्तर्गत ताम्रपर्णीक तट परहक तिरुप्पुलिंगुडिक उल्लेख पूर्वक ओ मन्दिरक प्रतिमा कें एहि शब्दें संबोधित करैत छथि :

'हे अहाँ ! जे विश्राम करैत छी
तिरुप्पुलिंगुडि मे।'[३६]

नाम्मलवारक लेल प्रत्येक देवमन्दिर जाग्रत देवताक निवास थिक। एत' देखब जे ओ वेन्कटम क विषय मे कोना बजैत छथि :[३७]

'हे ज्ञानातीत,
अहाँ करैत छी निवास,
अहाँक तुलसीक माला
छिड़िया रहल सुवास,
वेंकट मे।'[३८]

ईश्वरानुभूतिक लेल अपन सँघर्षक विषय मे नाम्मलवार हृदयस्पर्शी शब्दावली मे कहैत छथि। ओ एहि निष्कर्ष पर पहुँचैत छथि जे हुनक प्रयासटा सँ कोनो लाभ नहि, हुनका धरि पहुँचबाक लेल एकमात्र मार्ग अछि सम्पूर्ण समर्पण :

'हे अहाँ।
जनिक प्रशस्ति अछि अद्वितीय,
तीनू लोकक स्वामी,
अहाँ जनिकर अछि हमरा पर आधिपत्य,

---

३५. तिरुवोइमोज्झी : १.३.१
३६. तिरुवोइमोज्झी : ९.२
३७. तिरुमलाइ – तिरुपति, आन्ध्र प्रदेश
३८. तिरुवोइमोज्झी : २.६.१०

हे अहाँ !
जनिक जिज्ञासा करैत छथि
अनश्वर देव ओ ऋषिगण,
तिरूवेंकटम केर प्रभु,
हम छी आश्रयहीन
अतः होइ छी अहाँक चरणापन्न
आ' पबैत छी ओतहि ठौर ।'[३९]

नाम्मलवारक मतेँ ई आश्रय हमर योग्यता परिणाम नहि, अपितु ईश्वरक असीम अनुकम्पा थिक । अहि लेल हृदय खोलि देब भेल हुनका सँ प्रेम करब आ' ई प्रेम जखन तीव्र मनोभाव मे बदलि जाइत अछि, जाहि मे आन कथुक लेल स्थान नहि रहि जाइत छैक, नाम्मलवारक लेल बैकण्ठहु सँ, जे ईश्वरक चरम उपहार थिक, विशेष लाभप्रद आ' सुखद अछि । ओ एहि शब्दें हुनंका सँ अभिमुख होइत छथि :

'हमरा किछु निवेदन करबाक अछि
अहाँ सँ, हमर प्रभु ।
अहाँ सोचैत छी
की करी ओकरा लेल
जे करैत अछि अहाँ सँ प्रेम,
जे की दिऐक ओकरा सभ कें ।
किऐक, ओ स्वर्ग, बैकुण्ठ
ओकरा अहाँ अपन कृपा मे
द' सकैत छिऐक ओकरा सभ कें,
अछि की ओ बेशी आकर्षक, बेशी धन्य
ओकरा सभक धारणा सँ
जे करैत अछि निरन्तर अहाँक गुणगान ।[४०]

नाम्मलवारक लेल भगवत्प्रेम आ' हुनका प्रति समर्पण, सत्यक नगरी धरि जैबाक रास्ता थिक ।

'सभटा पुरान, पहिलुक कर्म
ओ चिरकालीन अनिष्टक बोझ,
भ' जैत नष्ट ।
नहि रहत कोनो अभाव
किछु ने अपूर्ण
यदि अहाँ अपन मन आ' हृदय सँ

---

३९. तिरुवोइमोज्झी : ६.१०.१०
४०. पेरिया तिरुवनतति : ५३

हटा दैत छी सवटा मैल,
आ'सब दिन करैत छी पूजा
श्री[४१] पतिक करूणामय चरणक ।
'यदि मृत्यु ओ अबैत अछि,
मरबाक अछि पूजा करैत
सैह थिक अहाँक शक्ति ओ जय ।'[४२]

आ' सत्य स्वतः प्रेम थिक । ओ हमर चारूकातक संसार मे सर्वत्र हमरा आवृत कैने छथि । ओ अवतार ग्रहण क' हमरा लग अबैत अछि आ' जखनहि हम अर्चना द्वारा अपन क्षुद्र अहम् कात क' दैत छी ओ हमरा प्रभावित करैत अछि । ओ भनहि आनक भेल अबोधगम्य एवं अनधिगम्य रहौक, मुदा 'ओकरा लेल' जे ओकरा सँ प्रेम करैत छैक, वस्तुतः सहजहि प्राप्त अछि ।'[४३]

अन्तरात्मक द्वन्द्व आ' तीव्र जिज्ञासा, जकर ओ विवरण दैत छथि, तकर अछैतो, नाम्मलवारक दर्शन एक प्रकारक स्वीकारोक्ति आ' आशाक अछि । हुनका मतेँ ईश्वर छथि । मनुष्यक मुक्ति निश्चित अछि यदि ओ केवल कनगुरिया आँगुर उठा दैत छथि ।[४४] हुनक कृपा असीमता केँ टपि परम परितोष, प्रकाश एवं प्रेमक संचार करैत अछि ।

जय हो, जय हो, जय हो,
जीवनक दुखद अभिशाप कटित भेल ।
अपकर्ष क्षीण भ' गेल,
आ' नरक भेल विध्वस्त ।
रहि नहि गेल किछु एत'

---

४१. श्री मन्नारायणक दैविक अर्द्धांगिनी । हुनक कृपाक प्रतिरूप

४२. तिरुवोइमोज्झी : १.३.८

४३. उपरिवत् : १.३.१

४४. आत्म समर्पणक प्रति नाम्मलवारक जे दृष्टिकोण अछि तकर दू गोट व्याख्या कैल गेल अछि । एकटा अछि श्री पिल्लै लोकाचार्य/तेरहम शताब्दी/द्वारा जकर अनुसरण श्री मनवल ममुनि (१३७३-१४४३) करैत छथि । एहि मे कहल गेल अछि जे भगवत्कृपा मनुष्यक प्रयास पर कनेको आश्रित नहि अछि आ' ई जे ओकर असीमता प्रत्येक जीवात्मा केँ अपना मे समेटने अछि आ' ओकरा सबकेँ अपनहि इच्छा-शक्ति सँ मुक्त करत । पुनः आत्मसमर्पण स्वतः उद्देश्य सिद्धिक हेतु नहि अछि मानवक केँ आत्मा केँ ओकर स्वाभावक अनुकूल बनाएब अछि आ' से थिक ईश्वर पर पूर्ण निर्भरता । दोसर व्याख्या श्री पिल्लैलोकाचार्यक कनिष्ठ समसामयिक श्री वेदान्त देसिक द्वारा अछि । ओ दृढ़तापूर्वक कहैत छथि जे आत्मसमर्पण एक प्रकारक कर्त्तव्य थिक जकर मनुष्य केँ आदेश देल गेल अछि/ द्रष्टव्य : गीता 'सर्वधर्म' एवं तत् परवर्त्ती/आ' एकरा नाम्मलवार स्वयं ग्रहण कैलन्हि । तथापि, स्वीकार करैत छथि जे आत्मसमर्पण एकटा व्याज थिक जे तत्कालहि भगवत्कृपाक द्वार केँ खोलि दैत अछि । हुनका मतेँ आत्मसमर्पण आ' भगवत्कृपा, पहिल मनुष्य द्वारा आ' दोसर ईश्वरक दिश सैं, केँ एकटाक बाद दोसर दू गोट भिन्न घटना नहि बूझक चाही । दुनू युगवत् अछि आ' मनुष्यक मुक्तिक, एकटा वक्र रेखाक सृष्टि करैत अछि । श्री रामानुजक समयक पहचात एहि दुनू व्याख्या केँ ल' क' पर्याप्त विवाद भेल जे दक्षिणक वैष्णव समाज केँ डोला देलक

एतेक धरि जे कलियुगक अन्त भ' जैत,
देखू, श्याम-सागर जकाँ हमर प्रभु,
तनिक सेवकक अपार भीड़,
व्यवस्थित भ' पृथ्वी पर सर्वत्र
नचैत छथि, करैत हुनक स्तुतिगान ।'[४५]

हिन्दू देवकुलक देवता लोकनिक प्रति नाम्मलवारक विचार अर्थपूर्ण अछि । अहि मे अन्तर अछि मुदा परब्रह्मक रूप मे श्री नारायणक प्रति हुनक निष्ठा अटल अछि । हुनक कहब अछि जे आन-आन देवताक सृष्टि हुनकहि द्वारा कैल गेल । आन-आन देवताक माध्यमे हुनक आराधना कैला सँ हुनका पूर्णतः नहि जानल जा सकैत अछि ।[४६] श्री नारायण कें ब्रह्म स्वीकार करितहुँ ओ ओहि पौराणिक कथाक बखान करैत छथि जे ओ शिव कें जघन्य पाप सँ रक्षा कैलन्हि, जाहि सँ, ब्रह्माक एकटा मूड़ी काटि लेबाक कारणें ओ ग्रसित छलाह ।[४७] हुनका आश्चर्य होइत छन्हि जे ई आन्हर दुनिया आन-आन देवताक दिश किऐक तकैत अछि जखन श्री नारायण, जे मूल छथि, ओकर रक्षा करबाक लेल तत्पर छथिन्ह ।[४८] ओ सभ सँ श्री नारायण अर्चना कर' कहैत छथि कारण जे ओएह ओकरा सभक तथा देवता लोकनिक, जनिका प्रति आब ओ नतमस्तक होइत अछि, सृष्टि कैलन्हि ।[४९] ओ विशेष रूप सँ लिंग पूजक (शैव), जैन आ' बौद्ध आ' हुनका लोकनि कें, जे एहि विषय मे निरन्तर तर्क-वितर्क कैल करैत छथि', ई अनुभव करबाक आग्रह करैत छथि जे जकरा ककरहु ओ ब्रह्म बुझथुन्ह ओ अन्ततोगत्वा श्री नारायण थिकाह ।[५०]

तथापि ओ लोक सँ त्रिमूर्त्ति-विष्णु ब्रह्मा आ' शिवक पूजा करबाक आ' करैत रहबाक आ' एहि तीनू कें अधिकाधिक जानबाक लेल निवेदन करैत छथि ।[५१] ओ कहैत छथि सभ देवता श्री नारायण द्वारा गृहीत हुनक विविध रूप छथि ।

'ओ, जे छथि समस्त ऐश्वर्यक स्वामी,
कैलन्हि अपन रूप स्थापित
विभिन्न देवताक रूप मे ।'[५२]
'कोना करब हम हुनक स्तुति !
हुनका कही नील-मणि
जनिका लेल होइत अछि सभ स्तुतिक उद्‌गम,

---

४५. तिरुवोइमोज्झी : ५.२.१
४६. तिरुवोइमोज्झी : २.२.१०; २.७.१२; ४.१०.४
४७. उपरिवत् : २.२.२. तिरुविरुत्तम : ८६
४८. तिरुवोइमोज्झी : ४.१०.१
४९. उपरिवत् : ४.१०.२
५०. उपरिवत् : ४.१०.५
५१. उपरिवत् : १.३.६
५२. उपरिवत् : ५.२.८

अथवा कही ईश्वर
जे धारण कैने छथि शीतल चन्द्रमा कें जटा मे !
वा चतुर्मुख ब्रह्मा ![५३]

एतय, नाम्मलवारक परमब्रह्म, श्री नारायण, हुनक दृष्टि मे विष्णु, शिव आ' ब्रह्मा क त्रिमूर्त्ति बनि प्रकट होइत छथि । ओ कहैत छथि 'हिनक प्रार्थना करू । शिव, ब्रह्मा, इन्द्र आ देव-सूमहक समान रूपें आ' एक संग प्रार्थना करू । ओ सब प्रभुक रूप छथि जे तीनहु लोक मे व्याप्त अछि । सभक स्तुति करू आ' कलियुगक अन्त भ' जैत ।[५४] पुनः ओ ईश्वरक शरीर कें शिव, ब्रह्मा आ' लक्ष्मीक बीच समविभाजित देखैत छथि ।[५५] ओ आओर आगाँ बढ़ैत छथि । ओ श्री नारायण कें 'त्रिनेत्र' कहि सम्बोधित करैत छथि जे सामान्यतः शिव कें कहल जाइत अछि ।[५६]

धर्मशास्त्र पर केन्द्रित भाष्यकार लोकनि एहि अन्तर रखैत कथनक समाहारक लेल आ' एकरा नाम्मलवारक कहि पुष्ट करबाक लेल जे श्री नारायण सभ उद्गमक उद्गम छथि, अत्यन्त प्रयलशील रहलाह । एहि मे सन्देह नहि जे नाम्मलवारक धारणा छल जे श्री नारायण परब्रह्म छथि । मुदा जखन हुनक धारणा रहस्यात्मक अनभूति मे विस्तारित भेल त सभ ठाम आ' सब वस्तु मे, एतेक धरि जे अन्य द्वारा पूजित देवता आ' अवलम्बित धर्महु मे हुनका नारायण दर्शन भेलन्हि :

'प्रत्येक व्यक्ति, अपन विवेक अनुरूप
अभिमुख होइछ अपन देवता दिश
आ' पहुचैत अछि हुनका लग ।
ई देवगण छथि परिपूर्ण ।
आ' सभ जे हुनका लग जाए चाहैछ
प्रत्येक अपना-अपना ढंगें
पहुँचि जाइत अछि प्रभुक शरण मे ।'[५७]
'अहाँ बनौने छी
पूजाक अनेको विधान
आ' लोकमन मे–
बहुत रास भिन्नता सँ,
बहुत रास धर्म
एक–दोसर सँ प्रतिकूल,

---

५३. उपरिवत् : ३.४.८. हरित वर्णक छथि विष्णु वा नारायण एवं शीतल चन्द्र चूड़ धारण कएनिहार देव छथि शिव
५४. तिरुवोइमोज्झी : ५.२.१०
५५. उपरिवत् : ४.८.१
५६. उपरिवत् : १०.१०.१
५७. उपरिवत् : १.१.५

आ' प्रत्येक मे अनेकानेक देवता ।
आ' एहि तरहेँ अहाँ
बढ़ौने छी असंख्य अपन रूप ।
हे अहाँ अद्वितीय,
ककरहु सँ अहाँ छी अतुलनीय,
जगौने छी अपन लालसा,
अहाँक लेल ।'[५८]

एहि तरहेँ नाम्मलवार अपन 'तिरुविरुत्तम' मे कहैत छथि जकरा हुनक प्रारंभिक कृति बूझल जाइत अछि । अन्त मे, अपन सिद्धिक चरमावस्था मे, ओ प्रतीकक माध्यमे बजैत छथि जे क्रमशः अमूर्त्त मे बदलि जाइत अछि आ' अनिर्वचनीयता दिश ल' जाइत अछि :

'अहाँ छी शून्य
जे पसरल अछि चारूकात
गहनता सँ बढ़ि क' गहनता
उच्चता सँ बढ़ि उच्चता ।
अहाँ छी चरम ऐश्वर्य,
जे अछि फुलाइत,
सर्वोत्तम आ' द्योतित करैत एहि केँ ।
अहाँ छी आ'रो अधिक,
असीम हर्षोन्माद,
हमरा आवृत कैने
हमर आग्रही आकांक्षा केँ तृप्त करैत
हमर अहम् केर अन्वेष केँ शेष करैत ।'[५९]

मुदा जे नाम रूप ओ एहि शून्य केँ, एहि महिमा केँ, एहि हर्षोल्लास केँ प्रदान कैलन्हि से सबटा श्री नारायणक छलन्हि । आ' ओ हुनका धरिक जे मार्ग प्रदर्शित कैलन्हि आ' जकर अनुसरण कैलन्हि से विपुल प्रेमक मार्ग छल । एहि मार्ग पर चलने आन सभ केँ छोड़ि देम' पड़ैत अछि आ' आत्मसमर्पण क' देम' पड़ैत अछि जे प्रश्न उठबैत तुच्छ अहम् केँ असीम एवं अजर केर बोध करबैत अछि ।

---

५८. तिरुविरुत्तम : ९६
५९. तिरुवोइमोज्झी : १०.१०.१०

नाम्मलवारक काव्य

नाम्मलवारक सदृश सत्यान्वेषी, जनिका निष्ठा एवं सहजानुभूति सँ सत्यक बोध भेलन्हि, जे रहस्यावादी छलाह, कखन कवि बनि गेलाह ? एहि प्रश्नक उत्तर देबाक लेल पहिने काव्यानुशीलनक विशाल एवं जटिल जगत मे, ओकर लक्ष्य एवं प्रभेद मे जाय पड़त आ' ओहि सँ जे उपलब्धि हैत से प्रायः काव्याकर्षणक ओस सँ सिक्त त' भेटत मुदा, संगहि विवेचन सिद्धान्त एवं परिभाषाक कुहेस सँ आवृत्त सेहो। अतः हम ओहि सामान्य विवेचनक परिहार क' रहल छी। हमर तात्कालिक ब्यास रहत नाम्मलवारक कविताक स्वरूपक सोदाहरण परीक्षण करब।

रवीन्द्रनाथ ठाकुर कहने छथि जे अनुवादक माध्यम सँ कविताक रसास्वादन करब ओहिना भेल जेना कोनो प्रतिनिधिक माध्यम सँ कोनो स्त्री सँ प्रेम करब। नाम्मलवारक विषय मे, अंग्रजी मे लिखबा मे, हमरा कष्ट होइत अछि, एहि लेल जे कविक रूप मे नाम्मलवारक विशेषताक बोध करेबाक लेल अनुवादक आश्रय लेब' पड़ि रहल अछि/मुदा कविताक अनुवाद पूर्णतः अपर्याप्त होइतहि छैक आ' श्री अरविन्दक कहब अछि जे नाम्मलवारक अंग्रेजी मे अनुवाद करब सर्वथा असंभव अछि। महान मणिप्रवलक भाष्यकार लोकनि सँ नाम्मलवारक कृतिक जे धार्मिक आ' बौद्धिक विश्लेषणक सूत्रपात भेल आ' आइ धरि होइत रहल अछि, ताहि मध्य, कविक रूप मे नाम्मलवारक महत्त्व कें किंचित् आच्छन्न क' देल गेल अछि। एत' ई प्रश्न नहि अछि जे धर्मशास्त्र आ' काव्य मे कोन पैध आ' ने ई जे नाम्मलवार कविक रूप मे श्रेष्ठ छथि वा सन्तक रूप मे, रामानुज वैष्णव सम्प्रदायक अग्रदूतक रूप मे। एहि प्रकारक तर्क-वितर्कक कतहुँ अन्त नहि हैत आ' प्रायः कोनो निष्कर्ष पर नहि पहुँचि सकब। हमरा एतबहि कहक अछि जे नाम्मलवार आ'र जे किछु रहल होथु आ' ताहि मे कतबहु महान रहल होथु, ओ कवि सेहो छलाह आ' तमिल साहित्य मे हुनकर महत्त्वपूर्ण योगदान रहलन्हि।

दर्शन आ' धर्म दर्शन काव्यक रूप धारण क' सकैत अछि जखन प्लेटो अपन सारथी तथा गुफाक प्रतीक प्रस्तुत करैत छथि वा जखन शंकर, प्राकृतिक जगतक प्रातिभासिक भाव कें परिभाषित करबाक लेल साँप ओ डोरीक समरूपताक व्यवहार करैत छथि। मुदा धार्मिक उक्ति तथा दार्शनिक सिद्धान्त स्वतः काव्य नहि भ' सकैछ। गूढ़ विचार कें सभसँ पहिने अनुभव मे अन्तरित कर' पड़ैत छैक आ' ओहि परिवर्त्तित रूप कें शब्द आ' लयक माध्यमे मनोयोग तथा 'दृश्य एवं श्रव्य जगत' सँ सम्बद्ध कर' पड़ैत छैक जाहि सँ ओहि परी लोक मे प्रवेश भ' सकैक जकरा काव्य कहल जाइत अछि। नाम्मलवारक लेखनी सँ एही चमत्कारक सृष्टि होइत अछि।

तथापि नाम्मलवार कदाचिते अपना कें कवि कहैत छथि । जखन ओ से कहैत छथि त' इएह कहैत छथि जे हुनक समस्त काव्यक उद्‌गम ईश्वर छथि :

'की कहि सकैत छी हम ?
किऐक त' हमर जीवनक जीवन
–एहि सँ एकाकार अछि,
ओ रचैत छथि काव्य हमरहि शब्द सँ ।
नहि, ओ थिक हुनकहि शब्द,
आ' ओएह छथि ओ जे गवैत छथि आत्मस्तुति ।'[१]

आलवार समान रूपें असंदिग्ध छथि जे हुनक समस्त 'काव्य हुनकहि दिश, ओही चक्रधारी प्रभुक दिश प्रवाहित अछि ।'[२] ओ कविगण सँ कहैत छथि जे लोकक प्रशस्ति नहि गाबथु ।

ओ प्रश्न करैत छथि जे 'एहन लोकक गान करबाक कोन प्रयोजन जे अपन अज्ञानता मे सोचैत अछि जे ओ शाश्वत अछि, अपन महानताक अहंकार करैत अछि आ' धन-सम्पत्ति कें ऐश्वर्य बुझैत अछि ?''[३] ओ कहैत छथि– ''हे कविगण ! आउ यदि अहाँ जीवित रह' चाहैत छी त' अपना हाथें श्रम करू आ' पसेनाक कमाई सँ भोजनक उपार्जन करू । धनिकक प्रशंसा मे किऐक गवैत छी ? अहि पृथ्वी पर वस्तुतः धनिक अछिए के ? हम त' ककरहुँ नहि देखैत छिऐक । अपन देवताक प्रार्थना करू । अहाँक सभटा गीत हुनका धरि पहुँचत जे अपन मुकुट मे रक्ताभ विद्युत धारण कैने छथि, जे श्रीक पति छथि ।'[४] ओ आगाँ कहैत छथि– 'जहाँ धरि हमर प्रश्न अछि, कहियो ने गाएब, मनुष्यक विषय मे हम कोना गाबि सकैत छी जे माया थिक ।'[५]

ई युग-युगक चीत्कार थिक :

''जोलहाक भरनी सँ बेशी तीव्र गतिएँ हमर दिन बीति गेल आ' विलीन भ' गेल... मन राख जे हमर जीवन श्वास मात्र थिक ।'[६]

''एहि पृथ्वी पर रहनिहार प्रत्येक व्यक्ति बसातक फुत्कार थिक, प्रत्येक व्यक्ति जे चलैत-बुझैत अछि केवल छाया थिक ।'[७] मुदा केवल मनुष्येटा एहि तरहक चीत्कार करबा मे समर्थ अछि, कारण जे केवल ओएह क्षण-भंगुरता तथा चेतना आ' नश्वर शरीर जाहि सँ ओ आबद्ध अछि, तकरा बीच द्विभाजन कें स्वीकार करैत अछि । आ' कोनो पदार्थ जे मानवीय अछि, भनहि ओ एत' जे मनुष्यक जीवन अछि तकर घोर असन्तोष सँ ग्रस्त

---

१. तिरुवोइमोज्झी : ७.९.२
२. उपरिवत् : ३.९
३. उपरिवत् : ३.९.२
४. तिरुवोइमोज्झी : ३.९.६ श्रीपति लक्ष्मीपति/छथि श्री मन्नारायण
५. उपरिवत् : ३.९.८
६. द बुक आफ जॉब : ७.६
७. द बाइबिल साम्स : ३९.५.६

हो, कविताक विषय भ' सकैत अछि, जेना ओ नाम्मलवार मे किछु अंश मे पाओल जाइत अछि ।[८] हुनका लेल मनुष्य 'ओहिना चंचल आ' क्षणिक अछि जेना विद्युत रेखा' आ' समस्त पार्थिव जीवन मिथ्याभिमानक एकटा 'बुलबुला थिक जे वर्षा मे प्रकट होइत अछि आ' नष्ट भ' जाइत अछि ।'[९] नाम्मलवार वृद्धावस्थाक कारूणिकता अवं निस्सारताक वर्णन करैत छथि । केओ अपन यौवन एवं ऐश्वर्यक प्राचुर्य्य मे, मिष्टभाषी रमणीक संग भद्रतापूर्ण व्यवहार करैत मोन भरि खैलक-पीलक मुदा आब अपन दुब्बर-पातर एवं सिकुड़ल हाथ कें एक कौर भातक लेल पसारैत अछि ।'[१०] राजमहलक जोर सँ बजैत नगाड़ा शान्त भ' जाइत अछि ।

'ओ सभ जे सम्पूर्ण पृथ्वी पर राज कैलन्हि
आब राति मे बौआइत छथि,
हुनक पैर कें काटि लेने अछि गलीक करिया कुक्कर ।
फूटल बासन नेने हाथ मे
याचना करैत छथि समस्त संसार सँ
भोजनक लेल ।'[११]

ई सब भाव/आ' ई सब अनुभूत थिक जेना बिम्ब सभ मे देखबा मे आओत, जे आलवार द्वारा चरमक अन्वेषणक प्रारंभिक बिन्दु थिक, पृथ्वी कें अस्वीकार करब थिक । एत' धरि नाम्मलवार संगमयुगक[१२] प्रारंभिक कवि लोकनि सँ अन्तर रखैत प्रतीत होइत छथि । ओ लोकनि प्रकृति एवं मनुष्य, रंगमंच एवं अभिनेता मे व्यस्त रहलाह कारण जे जीवनक जीवन्त नाटक हुनक सतर्क एवं सूक्ष्मावलोकन मे सुस्पष्ट छल । एहि ठाम नाम्मलवार अपन समसामयिक रहस्यवादी एवं भक्त कवि लोकनि सँ समानता रखैत छथि । ऐहिक जगत मे स्थायी अर्थबोधकताक अन्वेषण एहि युगक विशेषता छल आ' एहि अन्वेषक लोकनि मे नाम्मलवार सर्वश्रेष्ठ छलाह ।

एकर अतिरिक्त, पृथ्वीक अस्वीकरण वा एकर निषेध', ओ अज्ञान जे लोक कें एक ध्रुव सँ दोसर घरि आच्छादित कैने अछि', नीक जकाँ कविता बनि सकैत अछि, यदि कवि-कल्पना एकरा स्थूल जगत सँ सम्बद्ध रखैत अछि । नाम्मलवार बेर-बेर सएह करैत छथि । उदाहरणक लेल, इन्द्रिय उपभोगक मूल्यहीनता कें एत' पूर्ण विवरणक संग व्यक्त कैल गेल अछि जे अमूर्त्तक परिहार करैत अछि :

---

८. 'सत्यान्वेषणक यात्रा'क आरंभिक अनुच्छेद द्रष्टव्य
९. तिरुवोइमोज्झी : १.२.२ तथा ४.१.६
१०. तिरुवोइमोज्झी : ४.१.७
११. उपरिवत् : ४.१.१
१२. उपवादस्वरूप 'तिरुमुरुकत्रुपद्दाइ' एवं 'परिदल'क किछु कविता सभ ईश्वरपरक अछि, किन्तु ओहि मे ओ वेदनाजन्य आकांक्षा एवं भावक वैयक्तिक ऊहापोह नहि अछि जे आलवार एवं नयनमार सभमे भेटैत अछि

'अ' ओ सभ जे आमोद-प्रमोद कैलन्हि
मधुर आलिंगन मे
रत्नाभूषिता सुकेशीक ।
एहि सँ पहिने जे ओ जानथि
जे ओ कत' छथि,
ओ बौआइत छथि भग्न, परित्यक्त,
सामान्य-समूह सँ उपहासित ।'[१३]

ई धारणा जे मानवीय सम्बन्ध असन्तोषजनक अछि, एहि मे व्यक्त भेल अछि :

'जनकिा सँ हमरा लोकनि बिआह कैल
से स्त्रीगण,
हमर धिया-पुता, सर-कुटुम्ब,
एक ठाम होइत छी आ' बिछुड़ि जाइत छी,
एकर कतहुँ अन्त नहि,
कत' अछि प्रेम ? कतहुँ नहि !'[१४]

भगवत्कृपा सभक समक्ष 'पसरल शीतल, सौम्य, पुष्पशय्या'[१५] जकाँ अबैत अछि। जखन हमरा लग धन रहैत अछि त सर-सम्बन्धी सहायताक लेल घेरने रहैत अछि। मुदा ओ सब जोंक अछि जे अपनहि शोणितक स्वाद लैत अछि।'[१६] 'ई संसार एकटा झुरमुट थिक, ई अनन्त मृगतृष्णा थिक।'[१७] आ' 'पाँचो इन्द्रिय भ्रमक जाल थिक, एक प्रकारक चक्की थिक जाहि मे पाँचटा असाध्य रोगक फलक लगा क' ककरहुँ निर्दयतापूर्वक पीसल जाइत अछि।'[१८]

पृथ्वीक तिरस्कार ? एहिना बुझि पड़ैत अछि। मुदा ई एहि पृथ्वी सँ, जाहि सँ आलवार बिमुख होइत छथि, संचयित बिम्ब सँ ग्रथित अछि। आलवार कें, पहिने ई संसार असार मृगतृष्णा बुझि पड़ैत छनि, तथापि ओ एकरा एकटा रूप द' चित्रित करैत छथि; आ' मोह-भंग स्थूल आकार ग्रहण क' लैत अछि।

आलवार जेना सत्यक दिश अग्रसर होइत छथि, त' अन्वेषणक जे मनोवेग हुनका नियंत्रित कैने रहैत अछि, हुनक चारूकातक प्राकृतिक जगत कें आच्छादित कैने बुझि पड़ैत अछि :

---

१३. तिरुवोइमोज्झी : ४.१.५
१४. उपरिवत् : ९.१.१
१५. उपरिवत् : ४.१.५
१६. उपरिवत् : ९.१.२
१७. उपरिवत् : ३.२.९
१८. उपरिवत् : ७.१

'हे समुद्र तालक दीन वक,
ओत' ठाढ़ जत' जोरक लहरि टकराइत अछि,
निरन्तर, अथक अपन अन्वेषण मे ।
हमर माय सूतलि छथि;
तहिना उन्निद्र देवगण सेहो स्वर्ग मे;
मुदा अहाँ नहि ।
अहाँ छी हमरहि जकाँ
प्रेम सँ पाण्डुर आ' सन्तापित !
अहूँ की गमा चुकल छी अपन हृदय
हुनका लेल !'
'हे पपिहरा !
तीक्ष्ण आ' बेधक अछि अहाँक स्वर आ' विषादपूर्ण,
राति भरि करैत रहैत छी पी,पी,
अहूँ की गमा चुकल छी हृदय अपन
हुनका प्रति,
आ' लालाथित छी,
चूर्णित, सुरभित तुलसीक लेल
जे छथि ओ पहिरैत !
'कतेक आश्चर्यजनक हे अशान्त समुद्र
जे अहाँ चीत्कार करी दिन-राति,
अहुँक की ओ हेराएल छथि
आ' तकैत छी, कष्ट भोगैत हमरहि जकाँ
हुनक चरण मे शरणक लेल तृषित,
ओ जे लंका मे आगि लगौलन्हि
आ' युद्ध कैलन्हि ?
'भ्रमणशील बसात,
अहाँ जाइत छी सर्वत्र,
दिनक प्रकाश मे आ' नक्षत्र-ज्योतित राति मे,
पता लगबैत, अन्धवत् टापर-टोइया दैत,
सागर मे आ' पर्वत तथा आकाश मे ।
अहूँ की रोगग्रस्त, विभ्रान्त हमरहि जकाँ

युग-युग सँ,
प्रदीप्त चक्रधारी प्रभुक प्रेम सँ ?
'हे आकाश, धन्य अहाँ,
हमरहि सब जकाँ नोर मे द्रवीभूत होइ छी ।
अहूँ की ग्रस्त छी प्रेमक लपेट मे,
हुनक प्रेम, ओ जे छथि अनधिगम्य ?
'अहाँ उत्सर्गित कैल, निरीह चन्द्रमा कें,
अपन कान्ति सँ शून्य भेलहुँ,
आ' आब छी अहाँ निष्फल,
अन्धकार मे जे आच्छादित कैने अछि–
श्यामाकाश कें ।
अहूँ की हमरे जकाँ
हुनक बात पर विश्वास कैल,
हुनक बात जे वस्तुतः 'सत्य' थिक,
आ'र की ?
अहूँ की हुनका मे विश्वास अर्पित कैल
आ' प्रदीप्त चक्रधारी प्रभुक लेल
लालायित छी ?
'अहाँ सभ दिन रही,
हे श्याम आ' प्रतिशोधी राति !
अहाँ अबैत छी बिना पुछनहि
हमरा सभ लग,
हम सभ अर्पित क' चुकल छी हृदय
हुनका प्रतिएँ
आ' क' रहल छी चीत्कार असहाय भेल ।
अहाँ जोड़ि दैत छी अपन निर्दयता
हुनका संग ।
अहाँ रही बहुत दिन धरि !'[१९]

लगैत अछि जे आलवार एकाकी नहि छथि । ई त' समस्त ब्रह्माण्ड अछि जे हुनका संग-संग सृष्टि कर्त्ताक चरण-स्पर्शक लेल लालायित अछि ।

---

१९. तिरुवोइमोज्झी : २.१

ई अंत एकटा प्रेम-कविताक रूप मे रचित अछि। एहि मे प्रेमिकाक उक्ति अछि। केवल नर-नारीक बीचक प्रेमटा कें नहि, अपितु समस्त मानवीय सम्बनध कें नाम्मलवार द्वारा विभिन्न रूपें ईश्वराभिमुख कैल गेल अछि; यद्यपि मूलतः ओ ओकर संक्षिप्त अवस्थिति तथा अविश्वसनीयता सँ अभिभूत रहलाह। 'तिरुविरुत्तम' मे 'माता, पिता, श्रीपति' मानि भगवानक स्तुति गान कैल गेल अछि, ओहि भगवानक जे आलवारक दीर्घ तपस्या कें फलीभूत करैत छथि। एहि सँ ओहि अभीष्ट कें प्राप्त करैत छथि जे हुनका चिरकाल सँ चल अबैत 'जीवन-मरण अनन्त कालचक्र सँ मुक्त करैत अछि।'[२०] 'तिरुवोइमोज्झी' एहि अनुपम रहस्य कें' समस्त जीवनक जीवन आ' तथापि माता जे आलवारक जन्म देलन्हि आ' हुनक पिता तथा (स्वामी) जे हुनका अज्ञेय कें क्षमता देलन्हि, एहि रूपें निर्देशित करैत अछि।'[२१] निम्नोधृत पंक्ति मे परमात्मा कें नृपति कहल गेल अछि :

पृथ्वी परक नृप सभ जकाँ
एक दिनक लेल राज क' चल जाइत छथि,
सूर्य अस्त भ' गेलाह
आ' अन्धकार व्याप्त भ' गेल
हमरा सभकें की करक अछि, महान नृप
जे नापलन्हि सब लोक कें।
स्वर्गाधिपति,
एक एवं एकहिटा नृप ?
अपन कृपा करू
मुदा अहाँ, खेद अछि, त्यगि देल आ' निराश कैल,
आ' केवल अन्धकार अछि आबि गेल।[२२]

पुनः, 'परमात्मा ओ नृपति छथि जे सातो लोक मे शाश्वत, अप्रतिम राजदण्डक उपयोग करैत छथि, जनिका असीम, अनश्वर शक्ति छन्हि।'[२३] परमात्मा सर्वज्ञ सेहो छथि जे अहि व्यापक विश्व कें, जे अपनहि बुद्धि सँ भ्रमित अछि, अपना धरि पहुँचबाक लेल सुनिश्चित आ' आलोकित करैत छथि।[२४] एक गोट शिक्षक जकाँ ज्ञान प्रदान करैत परमात्मा मित्र सेहो छथि, एकटा विश्वनीय मित्र।[२५] सर्वोपरि त' ई जे परमात्मा एकटा प्रेमी छथि जनिका लेल आलवार जिज्ञासु छथि आ' लालयित छथि। मानवीय प्रेम, आदिम प्रेरणा

२०. उपरिवत् : ९५
२१. उपरिवत् : २.३.२
२२. तिरुविरूत्तम : ८०
२३. तिरुविरूत्तम : ४.५.१
२४. तिरुवोइमोज्झी : ४.८.६
२५. उपरिवत् : ७.५.९

जे नर-नारी कें एक-दोसरक प्रति आकर्षित करैत रहल अछि, आलवारक हाथ मे पड़ि प्रतीक सेहो बनि जाइत अछि। परमात्माक प्रतिएँ अपन मनोवेग कें व्यक्त करबाक लेल व्यवहृत प्रतीक मे ई अत्यन्त मार्मिक अछि। तिरुविरुत्तम तथा तिरुवोइमोज्झी दुनू मे अनेको स्थल अछि जत' आलवार स्वयं कें एहि प्रतीकक माध्यमे व्यक्त करैत छथि। से जखन करैत छथि त' ओ लौकिक प्रेमक वर्णन करैत छथि। ई प्रेम ततेक प्रबल, तीव्र एवं सम्मोहक अछि जे ई अपनहि इच्छाशक्ति सँ हमरा सभ कें जेना पृथ्वी पर सँ लोकोत्तर मे ल' जाइत अछि। आलवार एकहि समय मे दू लक्ष्य दिश अनजानहि आगाँ बढ़ैत छथि। ओ पार्थिव प्रेम कें विशद रूपें व्यक्त करैत छथि जे ओकरा केवल कृत्रिम ईश्वरपरक रूपक हैबा सँ बचबैत अछि आ' ओ प्रेरक शक्ति उपलब्ध करबैत अछि जे मानवोचित अछि। अहिना हुनक प्रयास रहैत अछि जे प्रतीकक निर्वाह हो जे निरन्तर हुनक ईश्वरीय भावना सँ ओतप्रोत रहैत अछि आ' एहि तरहें ओकरा केवल पार्थिव कविता हैबा सँ बचबैत अछि।

मुदा ओहि मे पार्थिव प्रेमक विवरण एवं उत्साह अछि आ' से ओकरा कविताक रूप दैत अछि। कोनो प्रेमिका जकाँ आलवार अपन प्रेमी कें सन्देश पठेबाक चेष्टा करैत छथि। संदेशवाहकक चयन अपन चारूकातक प्राकृतिक जगत सँ कैल जाइत अछि। एहि लेल आलवारक ध्यान पक्षी, मेघ,मधुमाछी तथा पवन मे सँ प्रत्येक दिश जाइत छन्हि :

'मनोहर पंखयुक्त वक,
निर्दोष एवं कोमल हृदयक।
अहाँ आ' अहाँक शुभ सखा,
दया करब हमरा पर
आ' हमर संदेशवाहक बनि
जैब हुनका लग।'[२६]

पक्षीक उदासीनता सँ हुनका असन्तोष होइत छन्हि :

'छोटकी चिड़इ, अहीं छी,
हम ई जनैत छी :
अहाँ हमरा निराश कैल,
हम कहने रही ल' जाइक लेल
—हुनका लग हमर वेदना
अहाँ से कैल नहि।
नमित, म्लान
नष्ट भ' गेल हमर रूप-रंग।
आब तखन अहाँ चल जाउ।

---

२६. तिरुवोइमोज्झी : १.४.१

ताकि लिअ ककरो आन कैँ
जे आनि देत सभ दिन
मधुर भोजन,
अहाँक गलथैलीक लेल ।'[२७]

ओ कोइली दिश अभिमुख होइत छथि :

'जोड़ खाइत कोइली
अहाँ सन नहि होइत अछि चुप रहब
अहाँ कैँ की हानि हैत यदि जाइत छी
हुनका लग हमर सन्देश ल' ?
अन्ततः ई की थिक जे हम अहाँ सँ चाहैत छी ?
इएह ने जे हुनका लग जाइ आ' कहिअन्हि,
एत' हम छी,
असमर्थ, अपन पूर्वक कर्म सँ
हुनक चरणक सेवा सँ
आ' हुनका सँ दूर, बहुत दूर हटल जाइत
भोगि रहल छी अपन भाग ।'[२८]

पुनः **महनरिलक प्रति** :[२९]

नील महनरिल,
अहाँ करब बा नहि
दिअ' ई वचन,
ल' जैब हमर समाद हुनका लग !
मुदा हम हुनका कहबन्हि की ?
ओ श्याम, मेघवर्ण,हमर प्रभु,
ओ जे जनैत छथि हमर वेदना
तइयो नहि करैत छथि दया हमरा पर
आ' ने कहैत छथि–
''ई दुखभोग आब नहि रहत ।'[३०]

ओ सम्भ्रान्त भेल आगाँ कहैत छथि : हमर सन्देश ल' गेनिहार केओ नहि अछि ?

---

२७. उपरिवत् : १.४.८
२८. तिरुवोइमोज्झी : १.४.२
२९. महनरिल : एक प्रकारक पक्षी
३०. तिरुवोइमोज्झी : १.४.४

लग मे एकटा मधुमाछी भनभना रहल छल । आलवार ओकररहि सँ कहैत छथि :

'हे मधुमाछी !
मनोहर धारी सँ युक्त चारू भर घुरैत,
जाउ, आ' यदि हुनका सँ भेंट हो,
जे छथि दयामय चक्रधारी प्रभु
तनिक सँ कहबाक कृपा करब;
"अहाँ क' रहल छिऐक बिलम्ब, अति बिलम्ब,
अबिओक आ' करिओक अपन कृपा प्रदान
ओकर प्रणान्त हेबा सँ पहिनहि ।
अबिओक अपन गरुड़ पर चढ़ि
जकर पाँखि छैक चाकर समुद्र जकाँ,
अबिओक एहि संकीर्ण गली,
मे, जत' अछि ठाढ़ि ।'[३१]

भ्रमणशील पवन आलवार कें प्रभावित करैत अछि । बसात त' सभ तरि जाइत अछि, फेर हमर समाद किऐक ने ल' जैत । ओ अबैत अछि मुदा समाद जे पठेबाक छल से आलवारक कंठहि मे अँटकि जाइत छनि ओ सोचैत छथि जे बसात प्रायः हमरा लेल प्रभुक अप्रिय खबरि आनैत अछि । प्रभु, जिनका अपन असीम अनुकम्पा सँ जीवात्माक रक्षाक लेल उत्सुक रहक चाही, कारण जीवात्मा 'हुनक अम्लान चरण कमल' धरि पहुँच चाहैत अछि, अपन स्वाभावक प्रतिकूल तटस्थ आ' अशुद्ध छथि । ई आलवार कें परित्यक्त बना दैत अछि । ओ चीत्कार करैत छथि–"यदि सैह हो त' हे शीतल बसात ! हमर शरीर कें चीरि दिअ आ हमरा मरि जाए दिअ ।' [३२]

जखन कखनहु नाम्मलवार एकर उल्लेख करैत छथि त' इएह मनोभाव व्याप्त भेटैत अछि आ' वैवाहिक प्रतीक कें जीवन्त बनबैत अछि । निम्नलिखित अश मे सन्तापित नायिका परमात्माक प्रेम मे पड़बाक लेल स्वयं के दोषी मानैत अछि ।

'गाम अछि सुप्त
आ' सम्पूर्ण संसार अछि डूबल निशीथक अन्धकार मे ।
सकल काल अछि भेल एकत्र
–एहि दीर्घातिदीर्घ राति मे ।
यदि ओ नहि अबैत छथि,
के अछि एत' जे हमर करत रक्षा,
हम जे छी पातकी ?

३१. तिरुवोइमोज्झी : १.४.६
३२. उपरिवत् : १.४.९

ओ रक्ताभ सूर्य कहियो नहि औताह
पूर्वाकाशक रथ पर चढ़ल ?
की ई राति कहियो ने बीतत,
अपितु चलितहि रहत हमरहि जकाँ म्रियमाण,
कण-कण क' ?.....
संसार सूतल अछि, उदासीन, शान्त ।
मुदा हम छी जागलि ।
हे हृदय, हमर नासमझ हृदय,
अहाँ किऐक हुनका सँ प्रेम कैल, किऐक ! [३३]
एकटा दोसरा ओही भावक अछि :
'चेमलीक सुगन्ध सँ भाराक्रान्त मलयानिल
उठबैत अछि टीस
साँझ मे अबैत अछि भसिआइत
समृद्ध कुरिनजिप्पन ।[३३अ]
गोधूलिक रक्ताभ
क' दैत अछि हमरा मत्त ।
पश्चिमाकाशक प्रदीप्त मेघखण्ड
क' दैत अछि हमरा क्षत-विक्षत ।
ओ जे छथि रहस्यक स्वामी.....
हुनक आँखि छन्हि नील कुमुदिनी जकाँ,
वा ओ अछि कमल ?
ओ चुम्बन लेने छथि एहि कान्ह पर,
एहि वक्षस्थल पर ।
आ' हम नहि जनैत छी
जे कत' जाउ शरणक लेल ?
'हम छी फूल
जकरा दिव्य भ्रमर चूसि क' चीरि देलक ।
कोना केओ एकरा सहि सकत ?
हमर हृदयो हमर नहि रहल
हमरा लेल ई कोनो काजक नहि,
आ' हम जनैत नहि छी

---

३३. उपरिवत् : ५.४
३३अ. प्राचीन तमिल गीत

जे शरणक लेल जाउ कत' ।[३४]

प्रेमिका बेर-बेर प्रेमीक पुकार करैत अछि मुदा कोनो उत्तर नहि :

'हम सोर क' रहल छी अहाँ कैं एत ',
निरन्तर, अपन दूनु हाथ माथ पर रखने,
सोर करैत, जोर सँ सोर करैत
मुदा अहाँ अवैत छी नहि
हमरा आँखिक समक्ष, जे देखि सकी
अहाँक सौन्दर्य,
आ' ने अहाँ उत्तर दैत छी
हम जे बजबैत छी'.....
'हम सोर करैत रहैत छी :
''आउ हमरा आँखिक समक्ष
आउ हे स्वर्णाभ,
कमलनयन नृत्यरत ।''
हम चीत्कार करैत छी,
हम जे छी निर्लज्ज ।
एत' हमर प्रलापक कोन अर्थ ?
ओ छथि ज्ञानातीत
अमर देवगण सँ सेहो ।[३५]

एहि मे ओहि प्रेमिकाक / जकर नाम नायकी देल गेल अछि / वर्णन अछि जे गामक ओहि गुरुजन कैं सम्बोधित करैत अछि जे ओकर व्यथा कैं बुझबा मे असमर्थ छथि। संगहि ई अंश नायकीक आश्चर्यजनक आसक्ति सँ मर्मस्पर्शी अछि :

'किऐक ऐ माता लोकनि
किऐक तमसाएल छी हमरा पर ?
जाही क्षण हम हुनका देखल
तिरुक्कुळ गुड़िक[३६] प्रभु कैं,
हमर प्रभु शंख-चक्रधारी,
कमलनयन बिम्बाधर कैं,
'हमर हृदय चल गेल हुनकहि संग
हम कोना एकरा रोकि सकितहुँ ?
आउ, हमरा हृदय सँ देखू

---

३४. तिरुवोइमोज्झी : ९.९.१, ४
३५. तिरुवोइमोज्झी : ४.७.१, ४
३६. तमिलनाडुक तिरुनेलवेलि जिलाक एकटा गाम

आ' देखू जे ओ छथि ठाढ़ हमरा समक्ष सभठाम
हे माय लोकनि ! हमरा जुनि फज्झैत करू ।
हम छी किंकर्त्तव्यविमूढ़, निःशक्त ।
हमरा आँखिक समक्ष आ' हृदय मे,
ओ रहैत छथि एकदम ठाढ़
अपन विजयोल्लासित धनुष
आ' गदा तथा शंख, चक्र आ' शंखक संग' ।[३७]

एहि अंश मे प्रेमातुर नायिका अपन सखी कें सम्बोधित करैत अछि :

'हे मृगनयनी प्रिय कुमारि लोकनि,
अहाँ कहि सकैत छी हमरा ?
कहिया हम,
हम जे छी पातकी,
हुनका प्रतिएँ प्रेम सँ थाकल-ठेहिआएल,
नृपति जे निवास करैत छथि तिरुवल्लभाज्ह [३८]
जत' सुस्वादु ताल समैटने अछि आकाश कें
आ' मधुमय चमेली गमकैत अछि मधुर,
कहिया हम भ' जैब हुनका संग एकाकार ।
'किऐक, सखि ।
हमर भर्त्सना कैने कोनो लाभ नहि,
ओ जे एत' ठाढ छथि तिरुवल्ल्भाज्ह मे
जत' दक्षिणी पवन
आलिंगन करैत अछि स्वर्णिम पुन्नै कें
आ' महिज्झ तथा टटका माधवी लता कें,
आ अबैत अछि सुगन्धि सँ भाराक्रान्त,
कहिया हम धारण करब अपना माथ पर
हुनक चरणक धूलि ?' [३९]

एहि दोसरो मे ओ अपन सखी कें सम्बोधित करैत अछि :

गाम छिड़िअबैत अछि तिरस्कारक शब्द
ओ सभ केवल सहायक होइत अछि
हमर हृदय–क्षेत्र कें उर्वर बनेबा मे ।
हमर मायक कटु वचन एकरा जल दैत अछि ।

---

३७. तिरुवोइमोज्झी : ५.५
३८. केरलमे एक नगर
३९. तिरुवोइमोज्झी : ५.९

प्रेमक सजीव धानक बीच
जकरा ओ एत' बाउग कैलन्हि
अंकुरित भ' बढ़ि गेल अछि
समुद्र-सदृश विशाल ।
अपितु, ओ जे मेघ वर्णक
छथि अत्यन्त निष्ठुर, हे सखी' [४०]

प्रेमिका क्रोधक अभिनय करैत अछि आ' अपन प्रेमीक भर्त्सना; ओ एक छोट कन्या जकाँ बजैत अछि । ओकर प्रेमी ओकरा एवं ओकर संगी सभ सँ छल कैलथिन्ह अछि । ओ ओहू सँ बेशी अधलाह कैने छथि । ओ लोकनि जे किछु करैत छलीह, खेल मे बालुक जे छोट घर सभ बनबैत छलीह, फुसिएक जे भानस करैत छलीह तकरा प्रति ओ सर्वदा उदासीन रहैत छलाह । आलवार चीत्कार करैत छथि–'नहि, नहि हमरा हुनक प्रेम सँ किछु नहि लेबाक– ओ देबाक अछि । आब अति भ' गेल' । ई एकटा एहन चीत्कार अछि जे बहुतो लोकक हृदय सँ प्रतिध्वनित होइत अछि । सभ दुख सँ विस्मित अछि जे ओ जे करैत अछि तकरा प्रति परमात्मा एतेक उदासीन कोना भ' सकैत छथि । ओ जे बनलौक से जेना बसात मे खेलौनाक किला रहय ।

'हम अहाँ कैं जनैत छी,
अहीं छी जे जरौलहुँ
लंकाक क्षमतापूर्ण प्राचीर कैं
हम जानैत छी अहाँक दाव-पेंच
अहाँ नहि ठकि सकैत छी हमरा सभ कैं
आब फेरो ।
घुमा दिअ हमरा सभक खेलौना.....
'आ' जाउ छोड़ि दिअ हमरा सभ कैं
नहि बाजू अपन झूठ, प्रभु ।
पृथ्वी आ' स्वर्ग जनैत अछि
एहि कैं नीक जकाँ ।
अहाँ छी विनाशकारी चक्रयुक्त,
हम अहाँ कैं कहब ई बात :
नहि, ने खेल करू आ' ने हस्तक्षेप
हमरा सभक बजैत सूगाक संग
आ' ने पूवैक संग
बनबैत हमरा सभ सन

---

४०. तिरुवोइमोज्झी : ५.३.४

निरीह मिष्ठभाषिणी छोट कन्या कैँ
विवर्ण एवं क्षीण ।' [४१]

नायकीक एकटा सखी गामक महिलागण सँ कहैत छथि ।

'हे माय लोकनि अहाँ ओकरा सँ प्रेम नहि करैत छिऐक ।
छोड़ि दिऔक ओकरा एकसरि ।
ओ अछि ठाढ़ि,
कुमुदिनी सन नील ओकर आँखि
छैक नीर सँ भरल,
हुनक शुद्ध उज्जर शंख,
हुनक चक्र आ' कमल-नयनक
उल्लेख करैत ।
ओ आराधना करैतं अछि ओहि स्थानक
जत' छथि ओ,
तोलाइविल्लिमंगलम् [४२]
अपन चाकर रत्न-सदृश वेदिकाक संग.....
छोड़ि दिओक ओकरा एकसरि
अहाँ ओकरा त्यागि देल, हे माता लोकनि,
रह' दिओक,
ओ अछि गेलि ओत'
तोलाइविल्लिमंगलम्
आ' बजैत अछि,
सर्वदा मधुर एवं मित,
आँखि सँ उमड़ैत नोर,
हुनका विषय मे,
जे विश्राम करैत छथि लहराइत सागर मे
जे चरब' गेला अछि माल कैँ
वन मे ।
ओकरा चल 'दिऔक अपना मने ।' [४३]
एहि'मे नायकीक माय कहैत छथि :
'रहस्यक प्रभु,
ओ जे छथि श्याम, वर्षाक मेघ सदृश

---

४१. तिरुवोइमोज्झी : ६.२
४२. तिरुनेलवेलि जिला मे अलवरतिरुनगरीक निकटक एकटा गाम
४३. तिरुवोइमोज्झी : ६.५

ओ प्रेमी जे नापलन्हि तीनू लोक कें,
ओहि कमल-नयनक प्रति
हमर पुत्री, मृदु सुगन्धित केशयुक्त
हारि गेल अपन शंखक चूड़ी.....
हुनका लेल, जे अपन किरीट पर
धारण करैत छथि
तुलसी, शीतल एवं सौरभयुक्त,
ओ नष्ट क' चुकलि अछि
अपन दमकैत रंग.....
ओहि श्यामवर्णक लेल,
जे घोंटि गेलाह सकल लोक कें,
ओ रक्ताधार चंचल चोर
जानिका छन्हि नचैत चक्र
तनिका लेल
कुंचित केशनि हमर दुहिता
गमौलक अपन सौन्दर्य
आ' अपन कौमार्य ।'[४४]

एहि मे नायकी अपन सखी कें सम्बोधित करैत अछि :

एहि सँ हैतैक की, हे सखि,
गामक उपहास सँ ?
एहि सँ हमर बिगड़त की
जे लालसा कैलक हुनका लेल,
हमर प्रभुक,
आ' बिसरि गेल अपन हृदय आ' विवेक ?
'ओ अपनहि संग ल' गेलाह
हमर लज्जा, हमर कौमार्य
आ' बैसल छथि ऊपर स्वर्ग मे
देवता लोकनिक प्रभु बनि ।
हँ, हम शपथ खाइत छी
हम लागल रहब
एहि अपकीर्त्तिक समाचार कें
पसारब मे

---

४४. तिरुवोइमोज्झी : ६.६

आ' ओएह करब जे एकटा नारी कें
नहि करबाक थिक,
निर्लज्ज भ' तड़िपतक अश्व पर चढ़ि
आ' संसार कैं सुना देब
हुनक विश्वासघात ।'[४५]

एहि पंक्ति मे नायकीय कोनो सखी गामक माय लोकनि सँ कहैत अछि । गामक माय लोकनि नायकी कैं अपदूत सँ ग्रस्त बुझि उपचार करैत छथिन्ह । सखि एहि लेल सचेत करैत अछि :

किनका लग जाउ, हे माय लेकनि !
आ' कोना;
एहि दीप्त-मुख अल्हड़ि रमणीक
एहि कष्ट सँ उपचारक हेतु ?
ओ ठाढ़ि अछि भ्रान्त
तकैत हुनकहि,ओ जे छथि रहस्यमय रथी
जे पाण्डव कैं कैलन्हि
युद्ध लेल तत्पर
आ' दियौलन्हि विजय ।
देखू हे मायलोकनि
नहि दिअ कोनो ध्यान
एहि कट्टुविचिक बात पर
आ' अखन छितरा जाउ,
आ' करू, ग घरक काज
अहाँ करू प्रार्थना रहस्यमय प्रभुक चरणक
जे धारण कैने छथि,
मधुर तुलसी
ओएह केवल ओएह
हैतिन्ह सर्वश्रेष्ठ उपचार
ओकर रोगक लेल ।
'हे माय लोकनि
नहि करू नहि करू,

---

४५. उपरिवत् : ५.३ सार्वजनिक स्थान मे ताइक पातक बनल घोड़ाक प्रतिरूप पर बैसब एहि बात कैं व्यक्त करबाक एकटा पारंपरिक प्रथा थिक, जे प्रेमी अपन प्रेम मे विफल भेल अछि । परंपरा सँ ई प्रतीक केवल पुरुष धरि सीमित छल । नाम्मलवार एकरा प्रेमिका धरि विस्तारित करैत छथि । तिरुमंगै सेहो सैह करैत छथि

भूत-प्रेत कैं नियंत्रित करबाक प्रयास
जे आहाँ सोचैत छी जे ओकरा
ग्रस्त कैने अछि ।
जतेक अहाँ करैत छी प्रयास
ताहि सँ बेशी बढ़ैत ओकर अशान्ति ।
केवल एकहिटा अछि प्रतिकार ।
ओकरा पर छीटू हुनक चरणक धूलि
जे करैत छथि प्रेम
रहस्मय प्रभु जे छथि नीलवर्णक ।'[४६]
नायकीक मायक उक्ति अछि :
पृथ्वी पर बैसि
प्रेम-स्पर्श करैत बजैत अछि
"ई हमर वामन[४७] क पृथ्वी थिक ।"
ओ तकैत अछि आकाश दिश
भक्तिपूर्वक
आ' करैत अछि ओहि दिश
आंगुर सँ संकेत
बजैत "ओत' अछि हुनक वैकुण्ठ
आँखि सँ ढ़रकैत नोरक संग
ओ भ' जाइत अछि ठाढ़ि
आ' करैत अछि चीत्कार, 'हे सागर -वर्ण ।'
'हे महिला-गण,
की करिएक हम हुनका लेल
जे कैने छथि अपन सम्मोहन
ओकरा पर, हमर पुत्री पर ?
'ओ संकेत करैत अछि चन्द्रमा दिश
आ' चिकरैत अछि
"ओ छथि ओत', नील-वर्णक !"
ओ तकैत अछि आगूक पहाड़ दिश
आ' कहैत अछि ओकरा, "आउ हमर प्रभु ।"
जखन ओ देखैत अछि कारी मेघ कैं
झहरैत,

---

४६. तिरुवोइमोज्झी : ४.६
४७. ईश्वरक अवतार

ओ बाजि उठैत अछि जे "हमर प्रभु आबि गेला ।"
हम नहि बुझैत छी जे की परिणाम हैत
एहि विचित्र लीलाक
जकर छथि ओ नायक
हम जे कन्याक जन्म देल,
एहि लेल जे हम छी घोर पापी ।'[४८]

ऊपर जे नाम्मलवारक अनूदित उद्धरण देल गेल अछि से संगम युगक प्रेम-कविता सँ साम्य रखैत अछि ।[४९] समुद्रक आर्त्तनाद, अन्हरिया रातिक एकान्त एवं दृश्यतः अशेष विस्तार, स्पर्श मात्र सँ ककरहु दग्ध करैत दक्षिणी पवन, सगर राति पी-पी करैत प्रेम पक्षीक स्वर, चन्द्रकिरणक असह्य स्पर्श, विरह-सन्ताप दैत पावस ऋतु, यदि किछु एक उल्लेख कैल जाए त एहि समय विवरण संगम प्रेम-कविताक अंशीभूत अछि जे एखनहु धरि प्रचलित अछि । प्रेमिका विवर्ण आ' कृश भ', अपन लावण्य कैं गमा क' ई जे कहैत अछि जे ओ अपन अपन प्रेमीक लेल अपन कंगण हेरा देलक से हो संगम कवि द्वारा व्यवहृत यद्यपि अनजानहि/ प्रेम विषयक प्रतिध्वनि थिक । विरहिणी प्रेमिकाक मनोदशाक निर्माण, प्रेमी कैं उपालम्भ, सखी पर निष्ठा, माय कैं अथवा गामक श्रेष्ठक प्रति जे ओकरा बुझि नहि पबैत छथि, प्रतिवाद, सभक समक्ष ताइक पातक घोड़ा पर चढ़बाक संकल्प, नायकी दुष्टात्मा सँ ग्रस्त अछि तकर अनुमान–ई सभटा संगम परम्परा क भाग अछि ।[५०] एहि प्रेम नाट्यक गीतात्मक कथाक्रम मे जे पात्र सभ भाग लैत छथि– माय, धात्री आ' प्रेमिकाक सखी सभ, स्वयं प्रेमी तथा ओकर सखा, कट्टुविच्ची जकरा नायकी कैं दुष्टात्मा सँ ग्रस्त बुझि उपचारक लेल बजाओल जाइत अछि–सभटा आदर्शीकृत चरित्र-समूह सँ अछि जे संगम कालक प्रेम गीत मे भेटैत अछि ।

ई अवश्य जे ई सभटा विवरण, स्थिति आ' चरित्र कैं नाम्मलवार वन्याक रूप में बदलि देलन्हि, जाहि सँ ईश्वरक प्रति हुनक आसक्तिक अनुभव हुमरा सभ कैं तीव्र रूपेँ होइत अछि । तथापि, नाम्मलवारक मानवीय प्रेम-प्रतीक-युक्त कविता मे तथा संगम युगक प्रेम कविता मे समानता अछि । सम्प्रति तकर आलोक मे एकर व्याख्या नहि कएल जा सकैत अछि, नाम्मलवारक जे जीवन वृत्त स्वीकार कैल जा सकैत अछि, जे ओ अपन पूर्वयुगक कविताक बहुत रास बात कैं कोना आत्मसात कैलन्हि । मुदा ई बात ते अछि, भने ई केवल तमिल काव्यक अध्येता कैं आकर्षित करत । संगम-कवि जकाँ नाम्मलवार से हो परोक्ष व्यंजनाक प्रयोग करैत छथि । उदाहरणार्थ :

'साँझ पड़ि गेल । ओ अएलाह नहि ।
आ' गाय सभ तड़पि रहल अछि.....

---

४८. तिरुवोइमोज्झी : ४.४

४९. द्रष्टव्यः नाम्मलवारक कृति, तिरुविरुत्तम शीर्षक अध्याय

५०. नारी द्वारा ताइक पातक घोड़ा पर चढ़बाक संकल्प वर्णन द्वारा आलवर परम्पराक तिरस्कार करैत छथि । ई परिपाटी पुरुष धरि सीमित रहल अछि । तिरुमंगै आलवार नाम्लवारक अनुसरण करैत छथि

घंटी टुनटुना रहल छैक कारण जे साँढ़,
कैलक अछि ओकरा सभ संग संगम,
निष्ठुर मुरलीक ध्वनि बहरा रहल अछि
चमकैत चमेलीक कोंढ़ी
आ' नील कुमुदिनी सँ
मधुमाछी फरफराइत आ' नचैत अछि।
सागर अपन सीमा छोड़ि
छुबैत अछि अकाश कैं,
जोर सँ करैत ध्वनि।
ई की थिक जे हम कहि सकी ?
कोना हम करब अपन रक्षा
एत' हुनका बिना ! [५१]

कवि जे सायंकालीन परिदृश्यक वर्णन कैलन्हि अछि से अर्थगर्भित अछि। संगहि ओ जे व्यंजनाक सृष्टि करैत छथि तकर उपेक्षा नहि कैल जा अछि वा नीरव शांतिक, जे क्षणेक पश्चात उपस्थित होइत अछि। ओकरा सभक उपस्थिति प्रेमातुर आत्माक हार्दिक यंत्रणा कैं वैषम्य देख क' बढ़ा दैत अछि; कविताक इएह विषय थिक।

प्रकृति–वर्णन द्वारा एहि तरहक व्यंजकता कैं दुखद भ्रान्तिक संग नहि ओझरेबाक थिक। ई दुर्बोध थिक आ' एहि सँ नाम्मलवार अपन पूर्वकालीन कवि सदृश साम्य एवं वैषम्य सं युक्त सम्पन्न एवं सुकोमल स्वर मे रचना करैत छथि।

नैसर्गिक जगतक अतिरिक्त नाम्मलवार कैं पौराणिक जगतक विपुल बोध छलन्हि जाहि मे पृथ्वी पर विभिन्न अवतार मे भगवानक क्रिया-कलाप लिपिबद्ध कैल गेल अछि। अवतारक प्रति हुनक विश्वास आलवार कैं इतिवृत्तक चरित्र सं स्वयं कैं तादात्म्य स्थापित करबाक वा ओहि मे वर्णित स्थिति मे स्वयं कैं अनुमानित करबाक अनेको अवसर प्रदान कैलक। एहि तरहेँ गोपी बनि ओ श्रीकृष्ण कैं, हुनका छोड़ि गायक पाछां चल जैबाक लेल, उपलंभ द' सकैत छलाह। अवतारक अवधि मे जे किछु भेल तकरा ओ विस्तारक संग निरूपित करैत छथि। वामन रूप में अवतरित भ' राजा बलि सँ तीन डेग पृथ्वी माँगव त्रिविक्रम रूप मे अकस्मात असीम भ' समस्त पृथ्वी आ' आकाश कैं नापि लेब; रामक रूप मे पैदल वन मे घूमब, समुद्र कैं पार करब, आगि लगा आ' अस्त्रक बलें लंका कैं ध्वस्त करब, घूरि क' अयोध्या आएब आ' राजा बनि सभ जीव-जन्तु कैं एतेक धरि जे घासक पत्ती पर्यन्त कैं अपन अस्तित्व बोध करा देव; वराह रूप में पृथ्वी कैं जल सँ उठा ओकर रक्षा करब आ' सखा रूप में अर्जुनक सारथी तथा हुनक आ' हुनक भ्राता लोकनिक दूत बनब एहि सभटाक वर्णन अछि। अपन कविताकेँ रंग एवं मूर्त्त रूप देबाक अतिरिक्त अपन अवतार मे ईश्वर जे मानवीय स्थिति आ' सम्बन्ध धारण कैलन्हि ताहि सभटा कैं आलवार पवित्र बनौलन्हि। आलवारक लेल सभ केवल प्रतीक नहि छल अपितु वास्तविक

५१. तिरुवोइमोज्झी : ९.९.१०

छल। अतः हुनक लेखनी सँ प्रतीक कें पूर्ण दीप्ति आ' विश्वनीयता प्राप्त छलैक। भगवानक लीलाक वर्णनक संग अपन अथवा पौराणिक चरित्रक मनः स्थितिक एकनिष्ठ एवं परस्पर-व्यवहार कें आलवार अनुभवक विविध संकेतें व्यक्त कैलन्हि अछि।

उदाहरणक लेल एत' भगवानक प्रेम सँ आक्रान्त रमणीक माय द्वारा ओकर कन्याक प्रति भगवानक निष्ठुरताक वर्णन भेल अछि :

'आह मुदा हमर सुमुखी
कन्या बताहि जकाँ नचैत अछि
ओकर हृदय छैक प्रज्वलित, गलैत
नाम जपैत 'नरसिंघ'क !
आ' क्षीण होइत।' [५२]

हिरण्यकशिपुक वध करबाक लेल भगवान नृसिंहावतार नेने छलाह। माय प्रश्न करैत अछि, हमर दीन दुहिता कोना ओहि भयानक कें बजा सकैत अछि ? परवर्ती पद सभ मे भगवानक निर्देश सहस्त्र भुजाधारी वाणक बध कैनिहार लंकाक संहारक, कंसक विनाशक आ' सुदर्शन चक्रधारीक रूप मे भेल अछि जे मायक भ्रान्त मन मे हृदयहीन छथि। माय जकाँ बजितहुँ आ' ओकरहि व्यथित एवं चकित दृष्टि एवं अपन दशाक चित्रण करितहुँ आलवार अपन भगवत्प्रेम मे लीन भ' जाइत छथि आ' ओहि शीतल तुलसीधारी कें सर्वाधिकारी, अपन अत्यन्त प्रिय आ' अपन आत्माक लेल अमृतोपम कहैत छथि।[५३] एहि तरहें नाटक आ' गीत मिलिक' एकटा एहन रूप धारण क' लैत अछि जे साहित्यिक विधाक विशिष्टता सँ बढ़ि भक्त हृदयक स्पन्दन बनि जाइत अछि। विभिन्न प्रकारक अनेको पद, जे पूर्णतया गीतात्मक अछि, ताहि मे नाम्मलवार निरन्तर अवतार सभक संकेत करैत छथि। एहि मे किछु त सर्वथा वर्णनात्मक अछि यद्यपि एकर विवरण हमरा सभ कें कविक भाव दशा सँ परिचय करबैत अछि। आगाँक अनूदित उद्धरण [५४] मे हम आलवारक कल्पनाक उड़ानक छोटछीन प्रयास कयल अछि। हम स्वीकार करैत छी जे हम मूलक भवोत्तेजक छन्द क्षमता तथा आलंकारिक पुनरावृत्तिक झंकार ओ महत्त्व कें अंग्रेजी मे उतारबा मे असमर्थ छी। एहि कविता मे सृष्टि आ' विनाश तथा संगहि कतिपय अवतारक विषय मे कहल गेल अछि :

'ऊपर उठल चक्र,
शंख आ' धनुष,
ध्वनित भेल दिग-दिगन्त
'जय हो अहाँक।''
ब्रह्माण्ड मे छल पड़ल दराड़ि
आ' आबि गेल छल प्रलयक बाढ़ि[५५]

---

५२. तिरुवोइमोज्झी : २.४.१
५३. उपरिवत् : २.४.६
५४. उपरिवत् : ७.४
५५. संसारक विलय

जखन प्रभु समस्त जगत कैं–
आत्मसात क' लेलन्हि
आ' नवयुगक भेल आविर्भाव ।
'नदी सभक विक्षोभ
समुद्र सँ पहाड़ दिश क' वहव
पहाड़ रूपी मथानी मे लेपटाएल
सर्पराजक तीव्र आक्रोश
आ' मातल जाइत सागरक
घोर निनाद
गर्जनयुक्त ध्वंश मे
मिलि गेल देवता लोकनिक स्तुतिगान
जखनहि प्रभु काछलन्हि
अतल सँ अमृत ।[५६]
'धरतीक सातो विस्तार घसकल नहि,
सातो पहाड़ डोलल नहि
आ' सातो समुद्र उद्वेलित नहि भेल
जखन प्रभु उठा लेलन्हि पृथ्वी कैं
अपन गजदन्त सँ[५७]
'नक्षत्र सभ कांपि गेल
आ' पृथ्वी एवं जल
ग्रह तथा आकाश आ' एकर दीप्ति
आगि ओ बसात तथा पर्वत ।
सभ गेल कांपि आ भ' गेल छिन्न-भिन्न
जखनहि प्रभु आत्मसात कैलन्हि–
साती लोक कैं
प्रलय काल मे ।
'लड़ैत मांसल मल्लक,
राजा लोकनिक सेनाक योद्धा सभक भिड़न्त
एकर तुमुल नाद
आ' स्वर्ग मे होइत
चकित देवगणक कोलाहल
ई सभटा मिलि गेल
जखन प्रभु संचालन कैलन्हि–

---

५६. प्रसंग देवतालोकनि द्वारा समुद्र मंथनक अछि
५७. एत' वराह अवतारक प्रसंग अछि

महाभारतक युद्धक ।[५८]
'पश्चिम मे उठल शोणित सनक लाल धधरा,
ब्रह्माण्डक सभ दिशा उठि गेल
खण्ड प्रलयक स्थिति मे,
जखनहि प्रभु
सिंहक रूप मे पर्वत कें विदारैत
संहार कैलन्हि असुरक
ओकरा अपार कष्ट दैत ।[५९]
'मृतकक छल अम्बार लागल पहाड़ जकाँ
आ' सागर मे बहैत छल शोणित
वाण छल छुटैत– लग–पास कें भरैत
जखन प्रभु
लंका कें जरा खाक क' देलन्हि ।[६०]
'ओहि दिन छल सृष्टिक दिन
क्षण मे आबि गेल अस्तित्व मे
पृथ्वी, पावक, वायु आ' आकाश
जाज्वल्यमान युग्म–सूर्य आ' चन्द्रमा,
पर्वत तथा मेघ
वर्षा, समस्त जीव-जन्तु
आ' अमरलोकनि ।
ओहि दिन छल
जगतक निर्माणक दिन
प्रभु द्वारा ।
'सभ पशु लेलक शरण ओहि तर मे
वन्य पशु सभ नीचा गुड़ुकि गेल ।
गिरिताल भरि गेल आ' पानि बहि चलल बाढि जकाँ
नीचा दिश क' तूर्यनाद करैत
समस्त गाम कें भेटलैक आश्रय
एकरा नीचा
पर्वत जकरा प्रभु धारण कैलन्हि
विनाशकारी वर्षा सँ प्रतिकारक लेल–
कवच जकाँ । [६१]

---

५८. कृष्णावतारक प्रसंग
५९. नृसिंहावतारक प्रसंग
६०. रामावतार मे
६१. कृष्णावतार मे प्रसंग गोवर्द्धन धारणक

एकर अतिरिक्त, नाम्मलवारक लेल, जेना हम अन्यत्र संकेत देल अछि[६२] परमात्मा केवल कल्पना नहि छथि। ई अवश्य जे नाम्मलवार अनिर्वचनीय कें दुर्बोध शब्दावली मे निरूपित करैत छथि। मुदा मुख्यतः ओ इष्ट देवता कें असीम सौन्दर्य एवं लालित्य सँ युक्त देखैत छथि। भगवानक शंख-चक्र, हुनक स्वर्ण मुकुट, कमल वा नील कुमुदिनी सदृश हुनका नयन तथा हुनक शरीर जे प्रभापूर्ण मरकत मणिक रंगक छन्हि, समुद्र व मेघ सदृश श्यामल छन्हि, ताहि सँ ओ बेर-बेर दिव्योन्माद ग्रसित भ' जाइत छथि।

'कहू हमरा हे प्रभु,
ई की थिक अहाँक रूपक महिमा
जे अछि प्रस्फुटित अहाँक स्वर्ण मुकुट मे ?
अहींक चरणक दीप्ति त' ने पुष्पित भेल अछि
कमल बनि जाहि पर अहाँ छी ठाढ़ ?
अहाँक शरीरक ज्योति जे अछि स्वर्णमय
सैह त' ने भेल अछि अहाँक वस्त्र
आ' चमकैत रत्न जे अहाँ छी धारण कैने ?[६३]

असीम सौन्दर्यक ई दिव्य दर्शन आलवारक जिज्ञासाक प्रत्येक प्रयास के आलोकित करैत अछि। ई हुनक चारू भरक पृथ्वी कें आच्छादित करैत अछि आ' ओ एकर सौन्दर्य सँ प्रत्येक तीर्थ-मन्दिर मे विलमि जाइत छथि जाहि मे हुनका मने ईश्वरक निवास अछि :

'तिरुकुदन्तै[६४] जे पर्याप्त जल सँ युक्त अछि, जत' लाल धानक
प्रशाखा पंखा जकाँ लहराइत अछि आ' गँहीर कुण्ड मे रक्तोत्पल फुलाइत अछि।'[६५]
'तिरुपल्लाभज्झ जत' सुचित्रित मधुक्षिका मधुक गीत भनभनाइत अछि।'[६६]
'तिरुवेंकटम् जत पंकिल गिरि सरोवर मे कमल आगिक रूप मे फुलाइत अछि।'[६७]
'तिरुप्पुलिंगुडी जत छोट-छोट माछ खेत सभ मे कुलबुलाइत अछि आ' कौड़ी सभ
प्रवालक नीचा द' नदी मे पसरि जाइत अछि।'[६८]

केवल देवतीर्थटा नहि अपितु समस्त संसार नाम्मलवारक लेल तीर्थस्थल अछि[६९] आ' नैसर्गिक जगतक सौन्दर्य, असीम सौन्दर्यक अक्षय संकेत। जाहि दिश ओ घुमैत छथि एकरा देखैत छथि। कमल, कुमुदिनी, समुद्र आ' आकाश, पहाड़ एवं वर्षा, संसारक प्रत्येक पदार्थ हुनका भगवानक स्मरण करबैत अछि। ओ पाँचो मूल तत्व–क्षिति, जल, पावक, गगन, समीर– कें ईश्वरक रूप मे देखैत छथि। सत्यक जिज्ञासु नाम्मलवार, अहि प्रतिभास जगत मे शाश्वत सौन्दर्यक दर्शन करैत छथि जे कविताक हेतु होइत अछि। एकटा सन्त वा भविष्यवक्ता हैबाक लेल ई निश्चय असंगत नहि अछि। एकर विपरीत आचार्य हृदयम

६२. द्रष्टव्य–नाम्मलवारक दर्शन शीर्षक अध्याय
६३. तिरुवोइमोज्झी : ३.१.१
६४. कुम्बकोनम – तनजोर जिलाक एकटा नगर
६५. तिरुवोइमोज्झी : ५.८. १, २
६६. उपरिवत् : ५.९.९
६७. उपरिवत् : ६.१०.२
६८. उपरिवत् : ९.२.९, ५
६९. देखू अध्याय 'नाम्मलवारक दर्शन'

मे हएह कहल गेल अछि। एहि मे कहल गेल अछि जे जखन हम आलवार कैँ कवि कहैत छिअेन्ह त' सभटा कहि दैत छिऐन्ह। जे नहि कहैत छिऐन्ह से ई जे ओ ऋषि आ मुनि छथि आ' सिद्धात्मा छथि।

ई नहि जे नाम्मलवार बिना प्रतीकक सोझहि अपनहि नहि बाजि सकैत छथि। तिरुवोइमोज्झीक बहुत रास पद एकरा सिद्ध करैत अछि। ओकर क्षेत्र व्यापक अछि; ईश्वर सँ तर्क-वितर्क, हुनका सँ प्रश्नक अम्बार लगा देब, कुण्ठा, अपना प्रति निराशा, जिज्ञासाक संघर्ष तथा भावोन्मादक अनुभूति।[७०] तिरुवोइमोज्झीक किछ पद मे तथा तिरुवसिरियम मे अंशतः आलवार भगवान एवं संसारक विषय मे गूढ़ सत्य' दक्षता एवं सूक्ष्मताक संग व्यक्त करैत छथि। एहि सभ अंशक कविता अभिव्यक्तिक एकाग्रता तथा गम्भीर व्यवस्था सँ निःसृत अछि। मुदा एतहु, कोनो विचार कैँ विवरण द' उपमाक माध्यमे व्यक्त करबाक प्रति कविक अपना ढंग अछि। उदाहरणार्थ, 'ईश्वर सभठाम छथि' एकटा एहन विचार अछि जकरा आलवार व्यक्त करैत छथि, मुदा से करैत काल, हमरा लोकनि देखब जे कविक दृष्टि एक-एक वस्तु पर जा क' विचार कैँ आकार दैत अछि :

'शीतल विशाल सागरक
एक-एक बुन्द मे
पृथ्वी पर आ' आकाश मे
आन्तरिक्षक प्रत्येक अंश मे
ब्रह्माण्ड आ' तकर बाहर
आ' एहि मँहक प्रत्येक पदार्थ मे
ओ छथि, अदृश्य, अप्रत्यक्ष,
ओ जनिका मे अछि ई सभटा अन्तर्हित।'[७१]
'अन्तरिक्षक स्थायी शून्यता मे
आगि आ' बसात मे
पृथ्वी आ जल मे
आ' असंख्य वस्तु मे
जे पसरैत अछि ओहि सँ,
शरीर मे प्राण सदृश,
ओ छथि सर्वत्र, अदृश्य, अप्रत्यक्ष,
ओ जे छथि वेदक आलोक मे
ओ जनिका सभ वस्तुक होइछ अन्त।'[७२]

बिम्बविधान जकाँ, मनोवेग प्रायः दार्शनिक परिभाषा मे सन्हिया जाइत अछि : आलवार एकर परिष्कार करैत छथि आ' निम्नोद्धृत अंश मे एहि विचार कैँ, जे ईश्वर एकटा रहस्य छथि, काव्यरूप दैत छथि :

---

७०. द्रष्टव्य : 'सत्यान्वेषणक यात्रा' एवं नाम्मलवारक दर्शन' शीर्षक अध्याय
७१. तिरुवोइमोज्झी : १.१.१०
७२. तिरुवोइमोज्झी : १.१.७

'ओ फेकि दैत छथि
अमरहु केर
जनिक विवेक छन्हि निर्मल
आ' जनिक ज्ञान छन्हि असंदिग्ध,
द्विधा मे ।
जाहि द्विधा कैँ ओ क' सकैत छथि सृष्टि
अछि आकाशहु सँ अपार ।'[७३]

एहिठाम विचार कैँ ओहिना उपस्थापित कैल गेल अछि जेना कवि कैँ करक चाही । बाद मे तत्कालहि मनोवेग उठैत अछि :

'ओ छथि मेघवर्णक श्याम,
हम कहियो नहि बिसरब
हुनक पुष्पोपम चरण जे नापलक
तीनहु लोक कैँ,
हम सतत कहब, नहि करब आलाप
अपना हृदय मे संजोगब ओकरा,
पूजब ओकरा ।'[७४]

नाम्मलवारक शैलीक विषय मे हुनका किछु कहब जे मूल कैँ नहि पढ़ि सकैत छथि, व्यर्थ हैत । हम एतबहि कहि संतुष्ट हैब जे तमिल, केन्द्रीय तमिल तथा दक्षिण तमिलनाडुक प्रचलित भाषक प्रभावशली एवं अभिनव सम्मिश्रण थिक आ' निष्कपटता, प्रत्यक्षता तथा भावप्रवण प्रभावक लेल उपयुक्त सिद्ध होइत अछि । ई सर्वत्र एक रूपक नहि अछि (रहबो किऐक करत !) । यद्यपि किछु पर अछि जे कर्णप्रिय अछि तथापि रूक्षता जे अछि से सक्रिय पाथरक वा लहरि सँ टकराइत समुद्रक अछि, जे शक्ति एवं गम्भीरता कैँ प्रतिबिम्बित करैत अछि । एकर अतिरिक्त, नाम्मलवार विभिन्न प्रकारक विरुत्तमक प्रयोग कैलन्ह अछि आ' उत्तम वेनेवा तथा कट्टलाइ कलितुराइ आ' असिरियम केर एकटा सुन्दर उदाहरण देलन्हि अछि : ई सत्य जे एहि मे कोनो सजग कलाकारक सुकुमार सतर्कताक अभाव अछि तथापि ओ सम्मोहक शक्ति अछि जे केवल कविटा नियंत्रित क' सकैत अछि ।

हँ, नाम्मलवार कवि सेहो छलाह, प्रायः उद्देश्य बुझि नहि (जेकि औरो नीक रहितन्हि) अपितु अपन व्यापक रहस्यात्मक अनुभव के शब्द-रूप देबाक लेल । रक्त, हृदय एवं आत्मा जे एहि अनुभव सँ प्रभावित भेल से सूक्ति, प्रतीक, बिम्ब तथा प्रकृति एवं मानव-जीवनक कतेको विवरण द्वारा गतिशील भेल । ई तमिल मे एकटा नव आयाम कैँ उद्घाटित कैलक जाहि मे स्वर्ग एवं पृथ्वी एकाकार भ' गेल अछि आ' मानव जीवन तत्काल जिज्ञासु तथा अनुष्ठित भेल अछि ।

□

---

७३. उपरिवत् : १.३.१०
७४. उपरिवत् : १.३.१०

117140
9·12·04

तमिलनाडुक सन्त कविमे नाम्मलवारक स्थान बड़ पैध छनि । ई सन्त कवि घोषणा करैत छथि : "हे कवि लोकनि ! आउ ! यदि अहाँ जीब' चाहैत छी त' अपन हाथें मेहनति करू आ अपन पसेनाक कमाइ खाउ । धनिक लोकक प्रशस्ति गीत किएक गबैत छी ? आ एहि पृथिवी पर वस्तुत: धनिक अछिए के ? हम त' ककरो नहि देखैत छिऐक । अपन देवताक गुणगान करू ।"

एहि सुलिखित निबन्धमे स्वर्गीय प्राध्यापक ए. श्रीनिवास राघवन अपन पाठककेँ सामान्यत: आलवार सभ सँ एवं विशेष रूपें नाम्मलवार सँ परिचय करबैत छथि : नाम्मलवारक चारू कृतिक सविस्तर वर्णन करैत, नाम्मलवारक 'अन्तरंग जीवन', सत्यान्वेषणक हुनक यात्रा जे हुनक भावोद्‌गारमे व्यक्त भेल अछि, ताहि सभ पर टिप्पणी करैत छथि, सँगहि नाम्मलवारक दर्शन एवं काव्यक संक्षिप्त विवरण दैत छथि ।

एहि कृतिमे लेखक नाम्मलवारक काव्य एवं हुनक व्यक्तित्वक प्रतिएँ अपन जीवनकालक श्रद्धापूर्ण आत्मीयताकेँ उपस्थित कैलन्हि अछि । एहि तथ्य केँ ध्यानमे रखैत जे तमिल रहस्यवादी कविताक, जेना नाम्मलवारक कविताक अनुवाद बड़ दुस्साध्य अछि, बहुत रास उद्धरण जे दृष्टान्तक रूपमे आयल अछि, अंग्रेजीमे पढ़बामे बेश लगैत छैक ।

नाम्मलवारक कृतित्वक मूलस्वरूप जकरा राघवनक लेख एवं अनुवादित अंग्रेजी उद्धरण प्रस्तुत कएने अछि, आशा क
पृष्ठभूमिक कारणें पाठकक लेल मैथिली मे प्र
नव आयाम उपस्थित करत, जाहिमे ज्ञान एवं भ
नहि भेल अछि ।

Library IIAS, Shimla
MT 891.481 015 2 N 152 R
00117140

ISBN 81-7201-861-9

पन्द्रह टाका